

॥ श्री ॥

नव पद उंलीनी विधि.

तेमा

नव पद उंलीनी विधि छपरात नव पद पूजा,
स्नात्रपूजा, शेत्रुजानो रास, स्नान,
चैत्यपदनो, धोयो विगेरेनो मग्रह

छपावी प्रसिद्ध करनार
श्रावक जीमसिद्ध माणिक,
जैन पुस्तकी तथा तीर्थोना नकशा बेचनार
तथा प्रसिद्ध करनार
मारुवी, मुवश्.

भाकृति २ जी

वीर संवत् २०४४ विजय संवत् १९७८ सने १९९८

Printed by Panchandra Yeshu Shedge at the Vijnaya-Sagar
Press, 25 Kolbhat Lane Bombay

Published by Bhaup Maya for Bhimji Maneck
23-231 Mandri Sackgalli Bombay

॥ अथ नव पद उलीनी विधिनी ॥

॥ अनुक्रमणिका ॥

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अथ अरिहृतपदपूजा	१	अथ आचार्यपद स्तवन	२६
अथ सिरूपदपूजा	३	अथ चतुर्थ पद चैत्यप्रदत्त	२७
अथ आचार्यपदपूजा	४	अथ उपाध्यायपद स्तवन	२७
अथ उपाध्यायपदपूजा	६	अथ साधुपद चैत्यप्रदत्त	२७
अथ साधुपदपूजा	७	अथ साधुपद स्तवन	२८
अथ दर्शनपदपूजा	७	अथ दर्शनपद चैत्यप्रदत्त	३०
अथ ज्ञानपदपूजा	१०	अथ दर्शनपद स्तवन	३०
अथ चारित्रपदपूजा	११	अथ ज्ञानपद चैत्यप्रदत्त	३१
अथ तपपदपूजा	१२	अथ ज्ञानपद स्तवन	३२
अथ कलश	१३	अथ चारित्रपद चैत्यप्रदत्त	३३
अथ नव पदनी आरती	१४	अथ चारित्रपद स्तवन	३३
अथ श्राद्धदिनकृत्य, देवप्रदत्त		अथ तपपद चैत्यप्रदत्त	३४
जाप्ययी मंदिर जगती तथा		अथ तपपद स्तवन	३५
पूजा करवानी विधि	१५	चतुर्विंशति जिन चैत्यप्रदत्त	३६
अथ अरिहृतपद चैत्यप्रदत्त	२२	अथ अष्टापदादि नमस्कार	४१
अथ अरिहृतपद स्तवन	२३	नव पद चैत्यप्रदत्त	४३
अथ सिरूपद चैत्यप्रदत्त	२४	पुन नव पद चैत्यप्रदत्त	४४
अथ सिरूपद स्तवन	२४	अथ नव पद वृद्ध स्तवन	४४
अथ तृतीय पद चैत्यप्रदत्त	२५	अथ नव पद स्तवन	४६

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अथ मिळचन स्तान	४७	मिळचन महेप उद्यापन विधि	७४
अथ नव पद शुद्ध	४७	श्री गैरग्रीहीत स्नानपूजा	७५
अथ नवपद उंखी करण विधि	४७	अथ शान्ति जिननी आरती	७६
अरिहतपदेके १७ गुण	४९	अथ आदि जिननी आरती	७६
अथ द्वितीय दिवस विधि	५१	श्रीमत्पुरुषोत्तमजी कृत नव	
मिळपदेके ० गुण	५१	पदपूजा ७७ थी १०७	
अथ तृतीय दिवस विधि	५२	प्रथम अरिहतपदपूजा	७७
आचार्यपदेके ३६ गुण	५२	द्वितीय मिळपदपूजा	७७
अथ चतुर्थ दिवस विधि	५४	तृतीय आचार्यपदपूजा	७७
उपाध्यायपदेके २५ गुण	५४	चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा	७७
अथ पंचम दिवस विधि	५६	पंचम मुनिपदपूजा	७६
माधुपदेके २७ गुण	५६	षष्ठ सम्यक्त्वार्जनपदपूजा	७७
अथ षष्ठ दिवस विधि	५७	सप्तम सम्यग्ज्ञानपदपूजा	१००
अथ सप्तम दिवस विधि	५७	अष्टम चारित्र्यपदपूजा	१०२
अथ अष्टम दिवस विधि	६२	नवम तप पदपूजा	१०४
अथ नवम दिवस विधि	६२	अथ सिद्धचक्रनीज राखन	१०९
अथ अष्टम दिवस विधि	६५	अथ द्वितीय स्नानम्	११०
अथ चारित्र्यपदेके ७० जे	६५	अथ तृतीय स्नानम्	१११
अथ नवम दिवस विधि	६९	अथ चतुर्थ स्नानम्	११३
अथ तपपदेके ५० जे	६९	अथ पंचम स्नानम्	११४
अथ तपस्सा ग्रहण करणेको		अथ षष्ठ स्नानम्	११५
गुरुके पास जानेकी विधि	७२	अथ सप्तम स्नानम्	११५
अथ सहेप उन्मणा विधि	७३	अथ अष्टम स्नानम्	११६

(४)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अथ नमः स्तवनम्	११७	अथ चैत्यगन्तम्	१२६
श्री सिद्धचरणीनु स्तवन	११७	नमः पद चैत्यगन्तम्	१३७
अथ सिद्धचरः स्तवन	११९	नमः पदजीनी स्तुति	१३०
अथ आनिष्ठ तप आश्रयी श्री		सिद्धचरणीनु चैत्यगन्त	१३९
सिद्धचरणीनु स्तवन	१२०	सिद्धचरणीनु स्तवः	१४१
नमः पदजीनु स्तवन	१२४	अथ आनिष्ठ तपनी मन्त्राय	१४२
श्री नमः पदजीनु स्तवन	१२४	जिन पूज्यानु चैत्यगन्त	१४३
आचिदीनी उन्नीना स्तवनो		अथ सूतः विचार	१४४
प्रथम स्तवनम्	१२५	मृत्यु सवधी	१४५
नमः पद स्तवन	१२६	स्तुति स्त्री विषे	१४६
नमः पद स्तवन	१२७	पञ्चरक्षाणः कर्माथी नरकायुः शुद्धे	१४६
नमः पद स्तवन	१२९	वीशः म्यानः तपनी विधि	१४७
सिद्धचरणी स्तुति	१२९	श्री मौनः एकादशीना दोढमो	
सिद्धचरणी स्तुति	१३०	कल्याणरुनु गणः	१४९
सिद्धचरणी स्तुति	१३२	अथ कल्याणरुनी ममज	१५०
सिद्धचरणी स्तुति	१३२	अथ श्रीशत्रुजय वृद्धः राम	१५९
नमः पद उन्नीनी विधि	१३३	श्री सिद्धगिरिनु स्तवन	१७२
अथ चैत्यगन्तम्	१३५		

॥ अथ श्री ॥

॥ नव पद ओलीनी विधि ॥

॥ प्रथम अरिहंतपदपूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम मंत्र ग्रणमी करी, तास धरी उर ध्यान ॥
अरिहंतपदपूजा करो, निज निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥

॥ उद ॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाण, सप्पान्हिहे-
रासणसवियाण ॥ सदेसणाणंदियसङ्काणाण, णमो
णमो होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ नमोऽनतसतप्रमोद-
प्रदान, -प्रधानाय जव्यात्मने जास्वताय ॥ यया जेहना
ध्यानथी सौर्यजाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल
राजा ॥ १ ॥ कल्यां कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे, जला जव्य
नव पद ध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना जव्य जावे
त्रिकाले, सदा गसीयो आत्मा तेणे काखे ॥ ३ ॥
जिंके तीर्थकर कर्म उदये करीने, दीपदेशना जव्यने
हित धरीने ॥ सदा आठ महापान्हिहारे समेता, मुग्गेशे
नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कल्या घातिया कर्म

चारे अलगां, जवोपग्रही चार जे ठे विलगां ॥
जगत् पच कल्याणके सौर्य पामे, नमो तेह तीर्थ-
करा मोक्षकामे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ग्रीजे जव विविसे करी, वीश स्थानक तप करीने
रे ॥ गोत्र तीर्थकर वांधीयु, समकित शुद्ध मन धरीने
रे ॥ १ ॥ अरिहतपद नित बंदीए, करम कठिन जिम
ठमीए रे ॥ ए आकणी ॥ जनम कल्याणकने दिने,
नारकी सुखीया थावे रे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता,
जसु उंमम कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ १ दीक्षा लीधी
शुज मने, मन पर्यव आदरीयु रे ॥ तप करी कर्म
खपाडने, ततखिण केवल वरीयु रे ॥ अ० ॥ ३ ॥
चउतीश अतिशय शोचता, वाणी गुण पेंतीशो रे ॥
अठदश दोश रहित थइ, पूरे सघ जगीशो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥
तन मन वयण लगाडने, अरिहतपद आराधे रे ॥
ते नर निश्चयथी सही, अरिहतपदवी साधे रे ॥
अरिहतपद नित बंदीए ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज-कर्णिकाया जिने-
श्वरान् ॥ आविर्भूतलसद्बोधा-नावृत स्थापयाम्य-
हम् ॥ १ ॥ नि शेषदोषेधनधूमकेतू-नपारसं सारसमु-

असेतून् ॥ यजे समस्तातिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनान-
बुजकर्णिकायाम् ॥१॥ ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धपदपूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुशियाल ॥
अशुचि कर्म हूरे टले, फले मनोरथमाल ॥ १ ॥

॥ वद ॥ सिद्धाणमाणसुरमालयाण, णमो णमोऽणत-
चउक्कयाण ॥ सम्मग्गकम्मरक्कयकारयाण, जम्मजरा-
दुखकनिवारयाण ॥ १ ॥ करी आठ कर्म द्याये पार
पाम्या, जरा जन्म मरणादि जय जेणे वाम्या ॥ निरा-
वरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा
सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिजागोनदेहावगाहात्मदेशा, रद्धा
ज्ञानमय जातवर्णादि लेशा ॥ सदान्त सौरयाश्रिता
ज्योतिरूपा, अनावाध अपुनर्जवादि स्वरूपा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सकल करमनो क्षय करी, सिद्ध
अवस्था पाइ रे ॥ गुण श्रुतीस विराजता, उपम जस
नहीं काइ रे ॥ मन शुद्ध सिद्धपद वंदी ॥ ६ ॥ ॥
आकर्णी ॥ जनम मरण दुख
चिद्रूपी रे ।

अरूपी रे ॥ मन० ॥ ७ ॥ जास ध्यान जोगीसरु,
करे अजपा जापे रे ॥ जव जव सव्यां जीवडे,
कठिण करम ते कापे रे ॥ मन० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंतां
सिद्धनु, पूजतां मनरागे रे ॥ अविचल पदवी पाइए,
कहुं जिनवर वरु जागे रे ॥ मन० ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान्, सम्यक्त्वादि-
गुणात्मकान् ॥ नि श्रेयसपदं प्राप्तान्, निदधे जक्ति-
निर्जर ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परित प्रणष्ट-डुष्टाष्टकर्मा-
नधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनतबोधान्,
सिद्धान्यजे शांतिकरान्नराणाम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध्यो
नम ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ आचार्यपदपूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव आचारज पद तणी, पूजा करो विशेष ॥
मोह तिमिर हरे हरे, सुफे जाव अशेष ॥ १ ॥

॥ वट ॥ सूरिणहूरीकयकुग्गहाण, एमो एमो
सूरसमप्पहाण ॥ सवेसणादाणसमायराण, अखरु
वत्तीस गुणायराण ॥ १ ॥ नमु सूरिराजा सदा तत्त्व-
ताजा, जिनेझागमे प्रोढ साम्राज्यजाजा ॥ पद्वर्ग-

वर्गित गुणे शोजमाना, पचाचारने पालवे सावधाना ॥
 नविप्राणीने देशना देश काले, सदा अग्रमत्ता यथा
 सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंति कल्पा,
 जग ते जिर जीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ गुण उत्तीशे दीपता, पाले पत्र आचारो
 रे ॥ जिनमारग साचो कहे, युगप्रधान जयकारो रे ॥
 आचारिजपद वढीए ॥ १० ॥ ए आकणी ॥ सारण
 वारण चोयणा, पक्किचोयण चो शिक्षा रे ॥ नव्य-
 जीव समजायवा, देवाने ते दक्षा रे ॥ आ०
 ॥ ११ ॥ जिनवर सूरज आथम्या, परतिख दीपक
 जेहा रे ॥ सकल जात्र परगट करे, ज्ञानमयी जसु
 देहा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ विधिशु पूजा साचवे, ध्यावे
 निज हित जाणी रे ॥ पावे लघुतर कालमा, आचारज-
 पद प्राणी रे ॥ १३ ॥

॥ श्लोक ॥ स्थापयामि तत सूरीन्, दक्षिणे-
 ऽस्मिन् दलेऽमले ॥ चरत पचधाचार, पट्त्रिंशत्सद्-
 गुणैर्युतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचारारताश्च, साराना-
 चारयत स्वपरान्ययेष्टम् ॥ उग्रोपसर्गेकनियारणार्थ-
 मन्यर्चयाम्यक्षतगधधूपै ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः
 ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ उपाध्यायपदपूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुण अनेक जग जेहना, सुदर शोजित गात्र ॥

उवजायापद अरचीण, अनुन्नवरसनु पात्र ॥ १ ॥

॥ ठढ ॥ सुतछविठारणतप्पराण, णमो णमो
वायगकुजराण ॥ गणस्स संधारण सायराण, सबप्प-
णावज्झियमठराण ॥ १ ॥ नहीं सूरि पण सूरिगणने
सहाया, नमु वाचका त्यक्तमदमोहमाया ॥ बली
छादशागादि सूत्रार्थदाने, जिके सावधाना निरुद्धा-
जिमाने ॥ धरे पचने वर्ग वर्गित गुणोघा, प्रनादि
छिपोछेदने तुल्य सिधा ॥ गुणी गद्यमधारणे स्थज-
भूता, उपाध्याय ते वदीए चित्प्रजुता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ छादशागी वाणी वदे, सूत्र अरथ
विस्तारे रे ॥ पच वरग गुण जेहना, सुमति गुपति नित
धारे रे ॥ १४ ॥ श्री उवजाया वदीए ॥ य आकणी ॥
दायक आगम वाचना, जेढ जात्र युत सारी रे ॥
मूरखकु पणित करे, जगतजंतु हितकारी रे ॥ १५ ॥
श्री० ॥ शीतल चढ किरण समी, वाणी जेहनी
कहीए रे ॥ ते उवजाया पूजता, अविचल सुखना
खहीए रे ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥ द्वादशांगश्रुताधारान्, शास्त्राध्ययन-
तत्परान् ॥ निवेगयाम्युपाध्यायान्, पत्रिन्ने पश्चिमे
दक्षे ॥ १ ॥ श्रीवर्मशास्त्राण्यनिगप्रशस्त्यै, पठति येऽन्या-
नपि पाठयति ॥ अध्यापकास्तानपराब्जपत्रे, स्थिता-
न्यवित्रान्परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं उपाध्यायेभ्यो नम
॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ साधुपदपूजा ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोक्षमार्ग साधन जणी, साधन थया जेह ॥
ते मुनिपरपद बदता, निर्मल थाये देह ॥ १ ॥

॥ ठद ॥ साहूण ससाहिय सजमाण, एमो एमो
सुद्धदयादमाण ॥ तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाण,
मुणीण भाणट पयछियाण ॥ १ ॥ करे सेवना सूरि
वायग गणिनी, करु वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥
समेता सदा पच समिति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्ते नही काम-
जोगेपु द्विप्ता ॥ बली बाह्य अन्यतर ग्रथि टाळी, होये
मुक्तिने योग्य चारित्र पाळी ॥ शुजाष्टाग योगे रमे
चित्त बाळी, नमु साधुने तेह निज पाप टाळी ॥ १ ॥

॥ टाल ॥ सकल त्रिपय त्रिप वारीने, आत्म-

ध्याने राता रे ॥ उपशम रसमां जीलता, निज गुण
 ज्ञाने माता रे ॥ १७ ॥ हित धरी मुनिपद वंदीए
 ॥ ए आंकणी ॥ रतनत्रयी आराधता, पट्काया प्रति-
 पाळे रे ॥ पचिड्री जीपे सदा, जिनमारग अजुपाळे
 रे ॥ हित० ॥ १८ ॥ गुण सत्तावीश अलकस्या, पंच
 महाव्रत धारी रे ॥ द्वादशविध तप आदरे, चिदा-
 नंद सुखकारी रे ॥ हित० ॥ १९ ॥ नवविध ब्रह्म-
 चरिज धरे, करम महा जट जीत्या रे ॥ एहवा मुनि
 ध्यावे सदा, ते नर जगत विदिता रे ॥ हित० ॥ २० ॥

॥ श्लोक ॥ व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान्, शुभध्या-
 नैकमानसान् ॥ उदम्पत्रगतास्त्रित्य, साधून्वदामि
 सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमतर्वचसि प्रसिद्ध, सत्य तपो
 द्वादशधा शरीरे ॥ येपामुदम्पत्रगतान् पवित्रान्,
 साधून् सदा तान् परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं सर्वसाधु-
 न्यो नमः ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शनपदपूजा ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर जापित शुद्ध नय, तत्प तणी परतीत ॥
 ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरीए शुभ रीत ॥ १ ॥

(९)

॥ ठट ॥ जिणुत्तते कडलखणस्स, एमो एमो
निम्मलदंसणस्स ॥ मिठत्तनासाड समुग्गमस्स,
मुलस्स सद्धम्म महाडुमस्स ॥ १ ॥ विपर्यास हव-
वासनारूप मिथ्या, टले जे अनादि अठे जेम पथ्या ॥
जिनोक्ते हुवे सहजयी श्रद्धधान, कहीए दर्शन तेह
परमं निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञान अज्ञानरूप,
चरित्र विचित्र जगारणकूप ॥ प्रकृति सातने उपशमे
क्षय तेह होवे, तिहा आपरूपे सटा आप जोवे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी, सदहणा चित्त
धरीए रे ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी, क्षायिक सम-
कित वरीए रे ॥ ११ ॥ दरशणपद नित वढीए ॥
ए आकणी ॥ छण विण ज्ञान नि फल कबुं, चारित्र
नि फल जाये रे ॥ शिवसुख ए विण नामीसे, वहु
ससारी थाये रे ॥ २० ॥ १२ ॥ समसती जंदे शोजतु,
अजरामर फल दाता रे ॥ जे नर पूजे चावश. ते
पामे सुख शाता रे ॥ दरशणपद ॥ १३ ॥

॥ श्लोक ॥ जिनेप्रोक्तमतं श्रद्धा-संकाणं
यजे ॥ मिथ्यात्वमथनं शुद्धं, न्यूनमीजानसं
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति ॥ ६

॥ अथ ज्ञानपदपूजा ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननु, सिद्धचक्र तप मांहि ॥

आराधीजे शुभ मने, दिन दिन अधिक उठांहि ॥ १ ॥

॥ ठंड ॥ अज्ञाणसमोहतमोहरस्त, एमो एमो
नाणदिवायरस्त ॥ पचप्पयारस्सुवगारगस्त, सत्ताण
सवठपयासगस्त ॥ १ ॥ होये जेहथी ज्ञान शुद्ध
प्रबोधे, यथावरण नासे विचित्रावबोधे ॥ तेणे
जाणीएवस्तु पडू ड्रव्य ज्ञावा, न हुये वितथ्या(वाढ)
निजेढा खजावा ॥ होय पच मत्यादि सुज्ञान जेदे,
गुरूपासस्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वदी झेय हेय
उपादेयरूपे, लहे चित्तमा जेम ध्वात प्रदीपे ॥ १ ॥

॥ टाल ॥ जह्म अजह्म विचारणा, पेय अपेय
निर्धारो रे ॥ कृत्य अकृत्यने जाणीए, ज्ञान महा
जयकारो रे ॥ १४ ॥ ज्ञान निरंतर वदीए ॥ ए आंकणी ॥
ज्ञान प्रिना जयणा नहीं, जयणा विण नहीं धर्मो
रे ॥ धर्म विना शिवसुख नहीं, ते विण न मिटे
जर्मो रे ॥ ज्ञान ० ॥ १५ ॥ पाच प्रकार ठे जेहना,
जेढ उकावन तासो रे ॥ जाणीने पूजे सदा, ते
लहे केवल खासो रे ॥ ज्ञान ० ॥ १६ ॥

॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय,—रूपमेवावज्ञास-
कम् ॥ ज्ञानमाश्रेयपत्रस्थ, पूजयामि हि तावहम् ॥ ७ ॥

॥ अथ चारित्रपदपूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टम पद चारित्रनु, पूजो धरी उमेद ॥
पूजत अनुजवरस मिले, पातक होय उठेद ॥ १ ॥

॥ ठठ ॥ आराहिअरामीअ सक्किअस्स, एमो
एमो सयम वीरिअस्स ॥ सजावणा सगविबद्धियस्स,
निदाणदाणाइ समुज्जायस्स ॥ १ ॥ बली ज्ञानफल चरण
धरीए सुरगे, निरागसता छारोधप्रसगे ॥ नवाजो-
धिसतारणे यान तुल्य, धरु तेह चारित्र अग्रात-
मूल्य ॥ १ ॥ होये जास महिमा थकी रक राजा,
बली छादगागी जणी होय ताजा ॥ बली पापरूपोपि
नि पाप थाय, थड सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सर्व विरति देशविरतिथी, अणगार
सागारी रे ॥ जयवतो थावो सदा, ते चारित्र गुणधारी
रे ॥ २७ ॥ चारित्रपद नित बढीए ॥ ए आकणी ॥
पद सख सुख तजी आदरे, सयम शिवसुखदायी
रे ॥ सत्तर जेदे जिन कह्यो, ते आदरीए जाड रे

॥ चा० ॥ २७ ॥ तत्त्वरमण तसु मूल ठे, सकल
आश्रवनो त्यागी रे ॥ विधि सेती पूजन करे, जाव
धरी वरु जागी रे ॥ चा० ॥ २८ ॥

॥ श्लोक ॥ सामायिकादिनिर्जदे, - श्वारित्र चारु
पचधा ॥ सस्थापयामि पूजार्थं, पत्रे हि नैर्ऋते क्रमात्
॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सत्यम्चारित्राय नम ॥ ७ ॥

॥ अथ तपपदपूजा ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्मकाष्ठ प्रतिजालवा, परतिख अगनि समान ॥
ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरीण ध्यान ॥ १ ॥

॥ ठद ॥ कम्महुमोम्मूलणकुजरस्स, णमो णमो
तिव्वतवोजरस्स ॥ अण्णेल्लङ्गीणनिवधणस्स, दुस्सज्ज
अट्ठाण थ साहणस्स ॥ १ ॥ त्रिकालिकपणे कर्म
कपाय टाले, निकाचितपणे बांधीया तेह धाले ॥ कळुं
तेह तप धाव्य अतर दु जेदे, दमा युक्त निहेतु
दुध्यान ठेदे ॥ होये जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि,
अवाठकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे
महानद हेते, होय सिद्धि सीमतिनी निज सकेते ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ निज इष्टा अवरोधीए, तेहीज तप

(१३)

जिन जारयुं रे ॥ बाह्य अन्यतर जेदयी, छादश जेदे
 दारयुं रे ॥ ३० ॥ अनुपम तपपद वंदीए ॥ ए आंकणी ॥
 तज्जय मोक्षगामीपणुं, जाणे पण जिनराया रे ॥ तप
 कीधा अति आकरां, कुत्तित करम रूपायां रे ॥
 अ० ॥ ३१ ॥ करम निकाचित दय हुवे, ते तपने
 परजावे रे ॥ लब्धि अठ्यावीश उपजे, अष्ट महा-
 सिद्धि पावे रे ॥ अ० ॥ ३२ ॥ एहवु तपपद ध्यावता,
 पूजता चित्त चाहे रे ॥ अक्षय गति निर्मल लहे,
 सहु योगींद सराहे रे ॥ अ० ॥ ३३ ॥

॥ श्लोक ॥ छिधा छादशधा चिन्न, पूते पत्रे तप-
 श्रयं ॥ सस्यापयामि जत्तयात्र, वायव्या दिशि शर्म-
 दम् ॥ ॐ ह्रीं सम्यक्तपसे नम ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ इम नव पद ध्यावे, पर्मे आनद पावे ॥ नवमे
 जव शिव जावे, देव नर जय पावे ॥ ज्ञानप्रिमल
 गुण गावे, सिद्धचक्रप्रजावे ॥ सहु दुरित शमावे,
 विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥

॥ अरिहत सिद्ध आचार्य उवजाय, साधु दसण
 नाण ए ॥ च । नव पद यकी, इहा सिद्ध

प्रमाण ए ॥ १ ॥ श्रीपाल राजा सुख ताजा, लह्या
 सिद्धचक्र ध्यानसो ॥ नमिजन नजो जिन लाज जाणी,
 हिये आणी नाव सो ॥ ३ ॥ इयनउपयसिद्ध, लङ्घि-
 विज्ञासमिद्ध ॥ पयस्विसुरवग्ग, छीतिरेहासमग्ग ॥
 दिसवइसुरसार, खोणिपीढावथारं ॥ तिजयनिजय-
 चक्र सिद्धचक्र नमामि ॥ ३ ॥ नि स्वदेत्वादिदिव्या-
 तिशयमयतनून् श्रीजिनेद्रान्सुसिद्धान् । सम्यग्त्वा-
 दिप्रकृष्टाष्टगुणगणनदाचारसारांश्च सूरीन् ॥
 शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचनरचना सुदराण्यादिशत-
 स्तत्सिद्ध्यै पाठकाना यतिपतिसहितानर्घयान्यर्घ्य-
 दानै ॥ १ ॥ इष्टमष्टदल पद्म, धूरयेदर्हदादिजि ॥
 स्वाहाते प्रणवाथैश्च, पदैर्भिन्ननिवृत्तये ॥ २ ॥ ॐ छी
 पंचपरमेष्ठिने सम्यग्ज्ञानादिचतुरन्वितेभ्यो नमः ॥
 इति श्री नव पद पूजा ॥

॥ अथ नव पद आरती ॥

॥ ए नव पद प्राणी नित ध्यावो, पचम गत
 सासय सुख पावो ॥ ए आंकणी ॥ धुरथी अरिहंतपद
 ध्याऊजे, थिरताए श्री सिद्ध शुणीजे ॥ ए० ॥ १ ॥
 आचारज तीजे आराधो, शुद्ध मन निज कारिज
 साधो ॥ ए० ॥ २ ॥ उग्रजाया पचम अणगारा, प्रण-

मंता पामे जवपाग ॥ ए० ॥ ३ ॥ दसण नाण चरण
जला दीपे, तप तपता कर्म अरिने जीपे ॥ ए० ॥ ४ ॥
ए नय पद प्राणी नित शुणतां, गिरुया नरजय सफल
गिणता ॥ ए० ॥ ५ ॥ सिळुचकनी कीजे सेया, मन-
घंवित लहीए नित मेया ॥ ए० ॥ ६ ॥ अजर अमर
सुगदायक साचो, रुढे मनसे नित प्रनि राचो
॥ ए० ॥ ७ ॥ इति नय पद थारती ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य ॥

॥ देववंदनज्ञाप्यथी मंदिर जवानी तथा
पूजन करवानी विधि ॥

॥ प्रथम श्रानक दो चार घन्टी रात्र रहते उठके
(प्रथम) दिखसे नवकार भद्रका स्मरण करे म कोण
हूं, क्या जेरी जानि हे, क्या मेरा कृत्य हे, स्या मेरा
धर्म हे, इत्यादि धर्मजागरणासे दिखको साजचेत
करे पीठे मल मूत्रकी बाधा दूर करके थग शुचिभूत
करे सामायिक, प्रतिक्रमणादि करके, विधि सयुक्त
घरदेरासरकी पूजा करे पीठे यथाशक्ति थथा वर

आचूषण पहरके, घोमा, हाथी, रथ, पालखी, सिपा-
नोकर, जाइ, बधु इत्यादि परिवार सहित पूजा
लायक फल, फूल प्रमुख उत्तम द्रव्य हाथमें ले-
जव्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता हुआ, जिन-
शासनकी प्रभावना करता हुआ, जिनमंदिर जावे ।
जिनमंदिरमें प्रवेश करके १० त्रिकविधि साचवन करे ।
सो १० त्रिक लिखते हैं ॥ पहिला त्रिक तीन निस्सिही
कहणैका, जिसमें १ निस्सिही जिनमंदिरमें पैठतेही
कहे पीठे ससार घर सबधी कुठ जी कार्यविचा-
रणा न करे ॥ १ ॥ दूसरी निस्सिही प्रदक्षिणा तीन
दीए पीठे कहे । जिनमंदिरमें फूटा टूटा ठीक करा-
नेकी सारसजाल रखी थी सो जी ठोडे । इहां द्रव्य-
पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सिही
कहे पीठे नि केवल जावपूजा करे, पण द्रव्यपूजा
न करे । यह प्रथम निस्सिही त्रिक कहा ॥

दूसरा त्रिक ज्ञानत्रिककी आराधना करनेको-
प्रभुके दक्षिणावर्त्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे । तीसरा
त्रिक मूलनायकजीके बिंबको पचाग मिलाके तीन
वेर नमस्कार करे ॥ ३ ॥ चौथा त्रिक । प्रभुकी अंग १
अंग २ जाव ३ त्रिविध प्रकार पूजा करे । अंग

निस्सिद्दी किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि
 संक्षिप्त लिखते है । निस्सिद्दी किये पीठे मनोगुप्ति,
 वचनगुप्ति, कायगुप्ति करके युक्त रहे । पांचो इन्द्रि-
 यांको वशमें रखे । गमनागमनमें उपयोगी रहे ।
 गीतादिक अन्यका सुनके चित्तमें व्याकुलता न रखे ।
 कुठ जी देवकार्यको ठोरके लर कार्यकी विचारणा न
 करे । राजकथादि सपूर्ण विकथा ठोडे । जन्म और
 कर्मके अनुगत वचन न बोले, अर्थात् कोइके माता
 पितादिकका किया थका खोटा कार्यको प्रगट न करे ।
 तथा कर्मानुगत वचन आयेको आंधा, गोलेको
 गोला इत्यादि वचन न बोले । निस्सिद्दी किये
 पीठे जिनमदिरमें धर्म सयुक्त, आत्महितकारी, प्रमा-
 णोपेत वचन बोलना चाहीए । जिसने मन, वचन,
 कायाके स्रोटे व्यापारोका निषेध अपनी आत्मासे
 किया हे उसके जावसे निस्सिद्दी होय । और जिसने
 छपणका त्याग न किया हे उसके केवल शब्द
 उच्चारण मात्र ड्रव्य निस्सिद्दी होय । इस वास्ते पूजा
 योग्य उत्तम वस्त्र पहरेके, आठ तहके उज्ज्वल बस्त्रसे
 मुखकोश वारें । धूपादिकसे अग अपना शुरु करे ।
 जागसे घूमरी निस्सिद्दी कहते मूल गन्धर्व प्रमश

करे । जयणा संयुक्त पूजा करे । पूजा करते हुए शरीरमे खाज न खुणे, खेल खंखार न करे । निःकेवल जगवानकी स्तवनामे चित्त रखे । प्रथम सुगंध युक्त जल पंचामृतसे स्नान करे । सुकुमाल अष्टा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसे जगवानका श्रंग लूहे । कपूर, कस्तूरी मिश्रित शुद्ध केशर चदनका विलेपन करे । शुद्ध वर्ण, शुद्ध गंध युक्त, जीवादि रहित निर्दोष गुलाब, ज्ञपा, चपेली, केवला, जाइ, जुइ, मोगरादिक पुष्पसे पूजा करे । अष्टांग धूप अगरवत्ती खेवे । मंगलदीप करे । अखर उज्ज्वल अक्षतसे प्रभुके सन्मुख अष्ट मंगलिक लिखे । दर्पण १ जडासन २ वर्धमान शरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मत्स्ययुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नदावर्त्त ८ एसा अष्ट मंगलकी रचना करे । पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलिक पूजे । सुंदर कुकुम मिश्रित चदनसे हठा देवे । उत्तम नैवेद्य चढावे । अष्टा साध्य फल चढावे । इत्यादि पूजाकी विधि आरती पर्यंत रायपसेणी, ज्ञाताधर्मकथा, जीवाजि-गमादि सिंघातोमें खिरये मुजब करे । पीठे अतरंग चक्तिसे प्रभुके सन्मुख नाटक करे । जैसे देवेंद्र, दान-वेन्द्र, नारद ज्ञानोंने तथा उदायी राजाकी राणी प्रजाव-

तीने, झोपदीने नाटक किया । और रावण प्रमुख कइ जीवोने अष्टापदादि उपर नाटक करके तीर्थकर-गोत्र उपार्जन किया तैसे प्रभुके सन्मुख शका रहित होके उत्तम पुरुष नाटक करे॥

॥ अब जल चदन पुष्पादिकसे पूजा करे सो अग-पूजा (१) । प्रभुके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावे सो अग्रपूजा (२) । प्रभुके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो जावपूजा (३) । यह अव्य-पूजाका विचार गर्जित चोथा त्रिक कहा । अब पाचमा त्रिक । तीन अवस्था विचारणी । पिंसुस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३ । इसमें पिंसुस्थ अवस्थाके तीन जेद । जन्मावस्था (१) राज्यावस्था (२) श्रमणावस्था (३) । और केवल अवस्थाको विचार करणा सो पदस्थ अवस्था । निरजनाकार सो सिद्धावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहते है । अब ठछा त्रिक । तीन दिशा ठोके प्रभुके सामने नजर रखे । उर्ध्व १ अधो २, तिरठी ३, दहणी बांझ पिठामी नजर नहीं करे । अब सातमा त्रिक । तीन बेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवदन करे । अब आठमा त्रिक । वर्णादिक तीन सप्तम्यहरफ शुद्ध उच्चारण करे सो

वर्णशुद्धि (१) । हरफोके अर्थ पर आलंवन रखे सो अर्थशुद्धि (२) । आलंवन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मनशुद्धि (३) । अब नवमा त्रिक । तीन मुद्रा करनी । जोगमुद्रा (१) जिनमुद्रा (२) मुक्ताशुक्तिमुद्रा (३) । इसमें जोगमुद्रा किसकु कहते हैं । पद्म-कोशाकारे दोनु हाथ परस्पर अगुली मिलानी ए जोगमुद्राए शक्रस्तव कहीए (१) । काठस्सगमुद्रा सो जिनमुद्रा (२) । और दो सीपका जोना तिस आकार हाथ रखना सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा (३) इस मुद्रासे प्रणिधान, जय वीयराय इत्यादि करे । अब दशमा त्रिक । प्रणिधान तीन । जिनवदन प्रणिधान (१) मुनिवदन प्रणिधान (२) प्रार्थना प्रणिधान (३) । इसमें जो जावंति चेष्ट्याइ इत्यादि इह सतो तठ सताइ तक जिनवदन प्रणिधान (१) जावंत केवि साहू इत्यादि तिविहेण तिदमविरयाण इहा तक मुनिवदन प्रणिधान (२) जय वीयरायसे लेके आज्ञवमरखना तक प्रार्थनारूप प्रणिधान (३) । एसे दश त्रिकका पहेला द्वार कहा । अब पाच अजिगम साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं ॥ सचित्त द्रव्य कुसुमादिक अपने पास होय उसकु अलग रख देना (१) और

राजचिह्न मुगट, ठत्र, खड्ग, चामर, पाडुका, अचित्त वस्तु ठोकना । आभूषण प्रमुख पहस्या रखना (७) मन एकाग्र करना (३) एक पद उत्तरासंग करना (४) जिनविषय देखतेही ' नमो जुवणवधुणो ' ऐसे नमस्कार करना (५) । ए दूसरा द्वार कहा ॥ अथ तीसरा द्वार दो दिशि का । पुरुष दहणी दिशा बैठा जगवतको वादे । स्त्री बाड दिशा बैठके जगवतकु वादे । अथ चौथा द्वार तीन अग्निग्रह । अग्निग्रह देव वादणामे कहा है । जघन्य नव हाथ दूर बैठके देव वादे (१) । मध्यम नव हाथसे उपरात बैठके देव वादे (२) । उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बैठके देव वादे (३) । अथ पाचमा द्वार चैत्यवदनका । सो जघन्य १ मध्यम २ उत्कृष्ट ३ तीन जेठ है । तिहाणमो अरिहताण इत्यादिक कहके वा एक दोय गाथाका नमस्कार कहके शक्रस्तव कहना ए जघन्य चैत्यवदन (१) । जिस देववदनमे स्थापनार्हस्तव-दंभक नमुथ्युणसे लेके अरिहतचेष्टयाण इत्यादिक सपूर्ण कही एक स्तुति कहे सो मध्यम चैत्यवदन । तथा फो ॥ कहे । पाच १५५

गाथा ४ कहे 'सो मध्यम चैत्यवंदन कहीए । तथा विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंरु, जय वीघराय पर्यंत आठे शुद्ध देव वादे सो उत्कृष्ट चैत्यवदन कहीए॥अब ठछा छार पचाग प्रणिपात करे। दो जानु, दो हाथ और मस्तक ए पाच अंग मिलायके जमीनमें लगावे ॥ अब सातमा छार ॥ जघन्य एक गाथासे लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसे प्रभुकी स्तवना करे ॥

॥ अब स्तवना करनेके प्रसंगसे प्रथम नव पदके ए चैत्यवंदन ए स्तवन ए शुद्ध लिखते हैं ॥

॥ अथ अरिहतपद चैत्यवदन ॥

॥ श्रीष्टदेवाय नम ॥ जय जय श्री अरिहत जानु, जवि कमल बिकाशी ॥ लोकालोक अरूपी रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥ १ ॥ समुद्धात शुन केवले, क्षय कृत मल राजि ॥ शुक्ल चमर शुचि पादसे, जयो वर अविनाशी ॥ २ ॥ अतरंग रिपुगण हणीए, हुय अप्पा अरिहत ॥ तसु पदपकजमें रही, हीर धरम नित सत ॥ ३ ॥ इति अरिहतपद-चैत्यवंदन ॥ ज किचि० ॥ नमोऽर्हत् ॥

॥ अथ प्रथम पद स्तवन ॥

॥ पूजो मनरली, हा हो दादा कुशल सूरिंद ॥
 ॥ पू० ॥ ए देशी ॥ श्री तेरम गुण बसिके कत, कर्मकु
 जजे श्री अरिहंत ॥ मन मान ले ॥ अष्ट समयमे
 समय तीन, सूर्य आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥ वादर
 काये मन बच जोग, तनु तनुसे फुन दढ तनु योग ॥
 मन० ॥ सुखम कायते मन बच रोक, निज वीर्ये
 ताकु कर फोक ॥ मन० ॥ २ ॥ सङ्गी मात्रके मन
 व्यापार, बेडझिने वास्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय
 रह्यो पणक सुजीव, सुखम लह्यो तिण जोग अतीव ॥
 मन० ॥ ३ ॥ एपा योगथी समये एक, हीना सख-
 गुणो कर ठेक ॥ म० ॥ समया सखे जोग निरोध,
 कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ मन० ॥ ४ ॥ वेद समे
 ना हारता पाय, कुशल कहे ते श्री जिनराय ॥ म० ॥
 तेरमे गुणमें गुण समे देव, आपो सा जगकु नितमेव ॥
 मन० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपदस्तवनम् ॥ १ ॥

॥ अथ थुड ॥ सकल अव्यपर्याय प्ररूपक, लोका-
 लोक सरूपोजी ॥ केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक,
 अनंत गुणे करी प्ररोजी ॥ तीजे जव थानक आराधी.

गोत्र तीर्थंकर नूरोजी ॥ वार गुणाकर एहवा अरिहत,
आराधो गुण चूरोजी ॥ इति अरिहंतपदस्तुति. ॥ १ ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवदन ॥ २ ॥

॥ श्री शैलेशी पूर्वप्रात, तनु हीन त्रिजागी ॥
पुवपलंगपसगसे, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमे
लोकप्रात, गये निगण निरागी ॥ चेतन भूपे आत्म
रूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाणथी
ए, रुपातीत स्वजाव ॥ सिद्ध जये तसु हीर धर्म,
वंदे धरी शुज जाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपदचैत्यवदनम् ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवन ॥ २ ॥

॥ था रे हिलां उपर मेह करोखे वीजली ॥ ए
चाल ॥ अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें
म्हारा लाल ही ॥ उत्कृष्ट करे वास सयोगी धाममे
म्हा ० स ० ॥ अजोगीके अत तजे जव जव्यता म्हा ०
त ० ॥ शैलेशी लहे कर्म दले गुणश्रेणिता म्हा ० द ० ॥ १ ॥
छत्वाक्षर पच काल रहे ते योगमे म्हा ० र ० ॥
तेरस प्रकृतिनो अन्त करीने अन्तमे म्हा ० क ० ॥
गमन करे नगरझासे अक्रिय होयने म्हा ० अ ० ॥ पुव-
पयोग असग स्वजाव अवंधने म्हा ० ख ० ॥ १ ॥ शु गुण

नत्र परमाण जोजन लक्षे कही म्हा० जो० ॥ वर्तुल
 विसदा जाश निरालंबन सही म्हा० नि० ॥ मध्ये
 जोजन अष्ट घनाकृति अन्तमें म्हा० घ० ॥ मदी
 पक्ष्यहीन जणी सिद्धातमें म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनु-
 पट्टारानाम शिलासे जोजने म्हा० गि० ॥ लघु अगुल
 वत्तीस प्रमाण अगगाहना म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनु शत
 पच गुणासे हीनता म्हा० गु० ॥ मिश्रिया एकमें नत
 अवाधा ना लही म्हा० अ० ॥ ४ ॥ अष्ट प्राण धरी रम्य
 सिरीही जो सही म्हा० सि० ॥ वीजो पद श्रीसिद्ध
 धरो मन गेहमें म्हा० धरो० ॥ कुशल जये जगजीव
 मिलोगा तेहमें म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपदस्तयनम् ॥

॥ अथ धुड ॥ अष्ट करमकुं धमन करीने, गमन
 क्रियो शिववामीजी । अव्यावाध सादि अनादि, चिदा-
 नंद चिद्राशिजी । परमात्म पद पूरण मिलासी, अघ
 घन दाघ त्रिनाशीजी ॥ अनत चतुष्टय शिवपद ध्याओ,
 केवलज्ञानी चापीजी ॥ इति सिद्धपदस्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ तृतीय पद चैत्यवदन ॥

॥ जिनपदकुल मुखरस अनिल, मितरस गुण
 धारी ॥ प्रबल सुख घन मोहकी, जिणते चम

हारी ॥ १ ॥ कृज्वादिक जिनराज गीत, नयतन
विस्तारी ॥ ज्ञान कूपे पापे पमृत, जगजन निस्तारी ॥ २ ॥
पचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकु वदे
हीर धर्म, अष्टोत्तरसो वार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद-
चैत्यवन्दनम् ॥ ३ ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तवन ॥

॥ नणदल वटिली ले ए चाल ॥ सती खरुगथी
जेणे, हण्यो क्रोध सुजट सम देणे हो ॥ गणपति गुण
पेखी ॥ मान महा गिरि वयर, अति सोजन मद्रव
वयर हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दजरूप विपवेळी, वर अज्ञान
कीले ठेळी हो ॥ ग० ॥ मूर्धा वेळथी जरीयो, लोह-
सागर मुत्ते तरीयो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन नाग मढ
हीनो, जिण दम शम जत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह
महामल्ल ताट्यो, पुण वैराग मुगेर पाट्यो हो ॥
ग० ॥ ३ ॥ दोष गयद बस कीनो, धरी उपशम अकुश
लीनो हो ॥ ग० ॥ अतरग रिपु जेया, सुर वर पिण
जिण निपेध्या हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कृति गुणथी
लीनो, सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥
आचारिजपद पहवो, धरी जीव कुशलता सेनो

(१७)

हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपदस्तवनम् ॥ ३ ॥

॥ अथ थु० ॥ पचाचार पाले उजवाले, दोष रहित गुणधारीजी । गुण ठत्तीसे आगमधारी, द्वादश अग विचारीजी । प्रबल सबल धनमोह हरणकु, अनिल समो गुण वाणीजी । कमा सहित जे समय पाले, आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्यपदस्तुति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवकाय राय, शठता धन नजन ॥ जिनवर दिसत डुवालसग, कर कृत जन-रंजन ॥ १ ॥ गुणवण नजन मण गयद, सुय शणि किय गजण ॥ कुणालध लोय लोयणे, जठ थ सुय मजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लहोए, आगमसे पद तुर्य ॥ तिनपे अहनिश हीर धर्म, बदे पाठक-वर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्यायपदचैत्यवंदनम् ॥ ४ ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

॥ सायलिया अलगा रहोने ॥ ए चाल ॥ हुयने ३ दूरी हुयने, चेतन जापे शठने दूरी होयने । तु मुज पास नहु अ ॥ तुजने कुण बतलावे दू० ॥

तो संगे निज पचेंद्रिनो, रचना चरम झूलाणो ॥ नाणा-
 वरणी खय उपशमसे, जावेद्रि मंमाणो ॥ इ० ॥ १ ॥
 ड्रव्ये ते परजासे कीना, जाति नाम व्यपदेश ॥
 एव तो गो तुरग गजादिक, किणा कमें उपदेश ॥
 इ० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुजकुशका, तेरे सगे लागी ॥
 नील वर्णकी शमता सेती, मे जयो तोशु रागी ॥
 इ० ॥ ३ ॥ उप कहीए हणीयो जवियानो, अत्रियां
 लाजत आय ॥ अधीनां मन पीमा नामे, मायो येन
 विलाय ॥ इ० ॥ ४ ॥ आविश्ये स्मरीए वर आगम,
 सूत्रसे ते उवजाय ॥ तत्सेवाते हणी शठताकु, चेतन
 कुशलता पाय ॥ इ० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थपदस्तवनम् ॥

॥ अथ शुद्ध ॥ अग द्यारे चउदे पूरव, गुण पच-
 वीसना धारीजी । सूत्र अरथधर पाठक कहीए, जोग
 समावि विचारीजी ॥ तप गुण गूरा आगम पूरा, नय
 निदेये तारीजी । मुनि गुणधारी बुध विस्तारी, पाठक
 पूजो अत्रिकारीजी ॥ इति उपाध्यायपदस्तुति ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम पद चैत्यवदन ॥

॥ दसण नाण चरित्त करी, वर शिष्यपद गामी ॥
 धर्म शुक्ल शुचि चक्रसे, आदिम सय कामी ॥ १ ॥

(१९)

गुण पमत्त अपमत्तते, नये अंतरजामी ॥ मानव
इदिय दसनचूत, जम दम अजिरामी ॥ १ ॥ वारु नि
घन गुण गण जस्यो ए, पचम पट मुनिगद ॥
तत्पदपकज नमत हे, हीर धर्मके राह ॥ २ ॥ इति
साधुपदचैत्यरंदनम् ॥ ५ ॥

॥ अथ शुद्ध ॥ सुमति गुपति कर संजम पाले,
 दोष वयालीश टाखेजी ॥ पट्टकाया गोकुल रखपाले,
 नवविध ब्रह्मवत पालेजी ॥ पच महाव्रत सूधा पाले,
 धर्म शुक्ल उजवालेजी ॥ द्वापकश्रेणि करी कर्म रखावे,
 दमपद गुण उपजावेजी ॥ इति साधुपदस्तुति ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवदन ॥

॥ हुय पुगल परियट्ट, अट्ट परमित ससार ॥
 गठिजेद तब करी लहे, सब गुणनो आधार ॥ १ ॥
 द्वायक वेदक शशी असख, उपशम पण वार ॥
 विना जेण चारित्र नाण, नहीं हुवे शिव दातार ॥ २ ॥
 श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लछन अजिराम ॥ दर-
 शनकु गणि हीर धर्म, अहनिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥
 ॥ इति दर्शनपदचैत्यवदनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवन ॥

॥ रामचड्के वाग आंवो मोह रह्यो री ॥ ए
 चाल ॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साधु जण्यो री ॥ धर्म
 जिनेश्वर प्रोक्त, लछण बोधि तणो री ॥ १ ॥ बोधि-
 लाजके काज, सप्तम नरक जलो री ॥ तेण विना
 सुरलोक, ताते अधिक बुरो री ॥ २ ॥ मिथ्या तापे

तत, बोधही ठांह लहे री ॥ उपशम द्वायक वेद,
 ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसागर हे अपार, फुण
 अस्ताथ कखो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद
 मात्र खरो री ॥ ४ ॥ यदजावे अप्रमाण, नाण
 चारित्त जला री ॥ बोध धर्ममें जीव, लाजे कुशल
 कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शनपदस्तवनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रुश् ॥ जिनपन्नत्त तत्त सुधा सरधे, सम-
 कित्त गुण उजवालेजी ॥ जेद ठेद करी आतम निरखी,
 पशु टाली सुर पावेजी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य
 जारयो, गणधर अरिहंत शूराजी ॥ ए दर्शनपद
 नित नित वदो, जवसागरको तीराजी ॥ इति दर्शन-
 पदस्तुति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वहि, मित आदिम
 नाण ॥ जाव मिखापसे जिन जनित, सुय वीश
 प्रमाण ॥ १ ॥ जवगुण पळाव उहि दोय, मण
 लोचन नाण ॥ लोकालोक सरूप जाण, इक केवल
 जाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नाशथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥
 सप्तम पदमे हीर धर्म, नित चाहत अवकाश ॥ ५ ॥
 इति ज्ञानपदचैत्यवदनम् ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

॥ म्हारे अति उठरगे ॥ ए चाल ॥ जिनवर
 जापित आगम जणीया, तत्त्व यथास्थिति गमीयाजी ॥
 म्हारे जगजनतारु, ते उत्तम वर नाण कहाये ।
 जविजन अहनिशि चाहेजी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जदया-
 जदय कुपथा सुपथा, पेयापेय अग्रथाजी ॥ म्हा० ॥
 देव कुदेव अहित हित धारी, जाणे जेण विचारीजी ॥
 म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय ठे डडि सारु, तेण
 परोक्ष विचारुजी ॥ म्हा० ॥ उंदि मण केवल है वारु,
 जीव प्रतक्ष सुवारुजी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयवि जस्त
 वले जग जाणे, लोकाटिक अनुमानेजी ॥ म्हा० ॥
 त्रिजुवन पूजे जासु पसाये, धारी शुज अध्यवसा-
 येजी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपराम क्षयथी, चेतन
 नाणकु विलासेजी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमे जविजन
 हरपे, निशदिन कुशलता निरखेजी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति
 नाणपदस्तवनम् ॥ ॥ ॥

॥ अथ शुद्ध ॥ मति शुद्ध
 लहीए गुण गतीरोजी ॥ अ
 छादण अग वस्तारोज

वक्षी, प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी ॥ ए पच ज्ञानकु वदो
पूजो, जविजनने सुखकारोजी ॥ इति ज्ञानपद-
स्तुति ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम पद चैत्यवंदन ॥

॥ जस्त पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेद ॥
नमन करे शुज जाव लाय, फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥
जपे धरी अरिहत्तराय, करी कर्म निकद ॥ सुमति पच
तीन गुप्ति युत, दे सुख अमद ॥ २ ॥ इपु कृति मान
कपायथी ए, रहित लेश शुचिवत ॥ जीव चरित्तकु
हीर धर्म, नमन करत नित सत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद-
चैत्यवदनम् ॥ ७ ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

॥ निर्निकल्प अज निर्गुणी, चिदाज्ञास निस्सग ॥
सुग्यानी साजलो ॥ मूर्तिहीन चेतन करे, रूपी
पुजल रग ॥ सु० ॥ १ ॥ स्पर्शक कारण वर्गणा, कार्ये
कारण नात्र ॥ सु० ॥ कृत्वा जोग सुधामता, लब्धा
सख स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमे, वृद्धि
लहे जुगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समये लहे, अते
छो ते जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानस मुरा,

(३४)

कारण रम्य वलेण सु० ॥ प्राप्तावस्त्र प्रकारता, सप्त
प्राज्ञतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तद्गोधन रूपी जलो,
चेतन सयमधाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद धर्ममे,
कुशला जवतु अजिराम ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति चारित्र-
पदस्तवनम् ॥

॥ अथ शुद्ध ॥ कर्म अपचय दूर सपावे, आत्म-
ध्यान लगावेजी ॥ वारे जावना सूधी जावे, सागर-
पार उतारेजी ॥ पद सक्त राजकु दूर तजीने, चक्री
सजम धारेजी ॥ एहवो चारित्रपद नित वढो, आत्म-
गुण हितकारेजी ॥ इति चारित्रपदस्तुति ॥ ७ ॥
॥ अथ तपपद चैत्यवदन ॥

॥ श्री रूपजादिक ता.
विहि अतैरपि वाह्य मध्या,
वसु कर मित अ.
जेठे समता युत
नमो श्री तपपद ज
नसे नित हीर धर्म
तपपद चैत्यवद

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ वारस जेद चण्या जिनराजे, बाह्य मध्य तरा
जगकाजे रे ॥ शिवपद श्रेणि ॥ तिण जव लिङ्गिनरा
घर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्ना रे ॥ गि० ॥ १ ॥
समता सहिते जिनते ज्ञारी, जली कर्नरेनु विर
हारी रे ॥ गि० ॥ जीव कनकने कर्नरेनु विर
तप पावनका जोरा रे ॥ गि० ॥ २ ॥ नर नन्दन
कुसुम है शक्ति, देव नरनी छत्र तेलिखेरे ॥ गि० ॥
पाप सकल है तमनी राजि नर नन्दन जाते नानी
रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ जस्स पमाजि सर्वाण वान् लब्धि
सधली जगहितकारु रे ॥ गि० ॥ अति दुर्गर पुण्य
साध्यता हीना, काम नात्रे वनकीनारे ॥ गि० ॥ ४ ॥
ध्यारोधनरूपी कहीण नन्दन वहीण रे
॥ गि० ॥ ५ ॥ इति श्री... स्तवनम् ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन चैत्यवन्दन ॥

॥ श्रीमद्वृषजसर्वज्ञ, वृषजाक सुवर्णरुक् ॥ जय
देवाधिदेवार्ह, — न्नाजिराजेन्द्रनन्दन ॥ १ ॥ युगस्यादौ
त्वया येन, ज्ञानत्रययुतेन यत् ॥ जनन्या मरुदेवाया,
पावन जठरं कृतम् ॥ २ ॥ इति रूपजस्तुति ॥ १ ॥

॥ अर्हताजितनाथेन, गजलाठनशालिना ॥ जित-
शत्रुमहीपाल, — पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि-
रत्नेन, जगवंस्त्वयका जिन ॥ जिता रागादयो येन,
वदे त्वा सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्यजितस्तुति ॥ २ ॥

॥ जितारिन्पतेर्वय्यात्, सज्जन सज्जनाजिध ॥
सेनाया नन्दनो हेम, — वणो गधर्वलाठन ॥ ५ ॥ सर्व-
सौख्यप्रदो मुग्ध, — ज्ञानदर्शनसयुत ॥ मुनीनां पुङ्गवो
देवो, नित्य दिशतु मा जिन ॥ ६ ॥ इति सज्ज-
नस्तुति ॥ ३ ॥

॥ सिद्धार्थनन्दन सार्व, वीतराग जगत्पतिम् ॥
श्रीसवरसमुत्पन्न, प्लवगांक हिरण्यज ॥ ७ ॥ अजिन-
न्दननामान, विशुद्धहृदय सदा ॥ य स्तौति परया
जत्तया, स ना लोकेऽजिनयते ॥ ८ ॥ इत्यजिनन्दन-
स्तुति ॥ ४ ॥

॥ मेघानिधधरित्रीश,—तनयो मङ्गलप्रद ॥ क्रौंच-
लक्षणचूडम,—मरीचिर्मङ्गलागज ॥ ए ॥ सत्यसुमति-
नाथेश, सुमतिं तनुतात्तमा ॥ जग्निना पुण्यकर्तृणा,
स्वर्गसौग्याप्रविप्रदाम् ॥ १० ॥ इति सुमतिस्तुति ॥ ५ ॥

॥ सुसीमापुत्र सत्कोक,—नदद्युतिधराधर ॥ धरा-
निधनृपोद्भूत, पद्मलक्षणधारक ॥ ११ ॥ जगद्ध्यो जग
सकीर्ण, दुस्तरे पतता नृणा ॥ त्राणाय सतत देव,
पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रजस्तुति ॥ ६ ॥

॥ श्रीसुपार्श्वानिधो देव, पृथ्वीज स्वस्तिकाक-
भृत् ॥ प्रणिष्ठनृपसजात,—श्रामीकरकरो जिन ॥ १३ ॥
समुद्र इव गङ्गीर, कर्मणा वेदने पर ॥ य सार्ध
परमब्रह्मा, रत नोमि सदा त्रिजुम् ॥ १४ ॥ इति
सुपार्श्वस्तुति ॥ ७ ॥

॥ चन्द्रप्रज प्रनो कात, चन्द्रलक्षणसयुत ॥ तमा-
पति छत्रिज्ञान, तमोव्यूहविनाशन ॥ १५ ॥ ससार-
जलधेर्नाथ, महसेननृपोद्भव ॥ लक्षणापुत्र मा
स्वामि—न्नयकेवलबोधभृत् ॥ १६ ॥ इति चन्द्रप्रज-
स्तुति ॥ ८ ॥

॥ अत्रायद्यत्रप्रवध श्लोक ॥ सस्तुतो गो ददा-
त्वायु, सुरासुरनरेश्वर ॥ मुनिगिरां वित शर्म,

सुग्रीवनृपनन्दन ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननी रामा,
माननीया दिवोकसाम् ॥ मानमुक्तोऽवदातो यो, मायौ
मकरलावित ॥ १८ ॥ इति सुविधिनाथस्तुति ॥ ए ॥

॥ चामरवधाविमौ ॥ श्रीमद्यीतलनाथेन, नदा-
दृटरथात्मज ॥ जाखत्सुवर्णवदेह, श्रीवत्साह्वाक-
धारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणोज्ज्वल, सेवकानां वपु-
र्जता ॥ प्राकृत नृजिनव्यूह, दुष्ट सजेय हे विजो
॥ २० ॥ इति शीतलनाथस्तुति ॥ २० ॥

॥ विष्णुर्नगार्कवदेवो, विष्णुपुत्रो हिरण्यज ॥
श्रेयोवृद्धिकरोऽजस्र, सद्गुणलाठनञ्जलि ॥ २१ ॥
हित्वा कर्मरिपून् सार्व, श्रेयास श्रेयसै सह ॥ पर-
ज्ञानमयेन त्वं, महानन्दपदं परम् ॥ २२ ॥ इति
श्रेयासस्तुति ॥ २२ ॥

॥ वरीवर्तितरामीहा, जवतां जवतां यदि ॥
जटिति वेदितु चित्ते, नो जव्या प्राप्तमक्षरम् ॥ २३ ॥
तदा नजध्वमेन हि, वासुपूज्य जयामुतं ॥ वसुपूज्य-
कुलोत्तमं, महिषाक च रक्तज ॥ २४ ॥ इति वासुपूज्य-
स्तुति ॥ २४ ॥

वद्धिमलज्ञान, त्वदीयस्मरण विना ॥ कुर्वन्नप्येति नो
ब्रह्म, प्रक्रिया नातिविस्तरा ॥ २६ ॥ इति विमल-
स्तुति ॥ १३ ॥

॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य, सुयशसिहृसेनयो ॥ दे-
वस्य श्येनचिह्नस्य, वय्यनिन्तगुणोदधे ॥ २७ ॥
छादयोऽपि यस्यात्, गुणानां लेजिरे न हि ॥ अन-
न्तस्य गुणास्तस्य, क्षमो वस्तु नर कथम् ॥ २८ ॥
इत्यनन्तस्तुति ॥ १४ ॥

॥ सुव्रतापुत्र वज्राक, जानुवंगार्हसन्निज ॥ कनक-
प्रज सर्वज्ञ, धर्मनाथाजिधेश्वर ॥ २९ ॥ तवा गोपि
पुरश्चारी, भूतले यात्यशोकता ॥ अनुत्तरफला सति,
सतां सगतयोऽपि हि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ-
स्तुति ॥ १५ ॥

॥ विश्वसेनधराधीश, नन्दन मृगलक्षण ॥ आ-
चिरेय सुवर्णांग, कलयामि जिनेश्वर ॥ ३१ ॥ तं
श्रीमच्छातिनामान, यस्याग्रे कुर्वते मुदा ॥ प्राज्या सुम-
नसां वृष्टिं, विबुधा विबुधप्रियाम् ॥ ३२ ॥ इति शाति-
नाथस्तुति ॥ १६ ॥

॥ श्रीयुताया श्रिय पुत्र, श्रेयस्कर हिरण्यज ॥
सूरिभूपतिसंजात, ठागलक्षणधारक ॥ ३३ ॥ कुथुनाथ-

सुग्रीववृषपनन्दन ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननी रामा,
माननीया दिवौरुसाम् ॥ मानमुक्तोज्ज्वलातो यो, मायौ
मेकरलात्रित ॥ १८ ॥ इति सुविधिनाथस्तुति ॥ ९ ॥

॥ चामरवधाविमौ ॥ श्रीमच्छीतलनाथेन, नदा-
दृटरथात्मज ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णवदेह, श्रीवत्साह्वाफ-
वारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांजोज,—सेवकाना वपु-
र्जता ॥ प्राकृत्त वृजिनव्यूहं, दुष्ट सजेथ हे विजो
॥ २० ॥ इति शीतलनाथस्तुति ॥ १० ॥

॥ विष्णुवृंशार्कवदेवो, विष्णुपुत्रो हिरण्यज ॥
श्रेयोवृद्धिकरोऽजस्र, सङ्गलाठनचृज्जिन ॥ २१ ॥
हित्वा कर्मरिपून् सार्व, श्रेयास श्रेयसै सह ॥ पर-
ज्ञानमयेन त्वं, महानन्दपद परम् ॥ २२ ॥ इति
श्रेयासस्तुति ॥ ११ ॥

॥ वरीवर्तितरामीहा, जवता जवता यद्वि ॥
ऊटिति वेदितु चित्ते, जो जव्या प्राप्तमक्षरम् ॥ २३ ॥
तदा जजध्वमेन हि, वासुपूज्य जयासुत ॥ वसुपूज्य-
कुलोत्तस, महिषाक च रक्तज ॥ २४ ॥ इति वासुपूज्य-
स्तुति ॥ १२ ॥

॥ श्रीमद्भिमलनाथेन, कृतवर्मसमुद्भव ॥ शूक-
कल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चन्द्र-

वह्निमलज्ञान, त्वदीयस्मरण विना ॥ इति स्तुति ॥
ब्रह्म, प्रक्रिया नातिविस्तरा ॥ १६ ॥ इति स्तुति
स्तुति ॥ १३ ॥

॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य, सुयज्ञसिद्धये ॥
वस्य श्येनचिह्नस्य, वर्यान्तगुणोद्दे ॥
छादयोऽपि यस्यात्, गुणानां लेजिरे न ॥
न्तस्य गुणास्तस्य, दमो वस्तु नरः ॥
इत्यनन्तस्तुति ॥ १४ ॥

॥ सुव्रतापुत्र वज्राक, जानुयन्त्र ॥
प्रज्ञ सर्वज्ञ, धर्मनाथाजिपेश्वर ॥
पुरश्चारी, जूतले यात्यशोकता ॥
सता सगतयोऽपि हि ॥
स्तुति ॥ १५ ॥

॥ विश्वसेनधराधीश, ॥
चिरेय सुवर्णांग, कलयान्ति ॥
श्रीमद्यातिनामान, यम्या ॥
नसा वृष्टि, विबुधा विबुध ॥
नाथस्तुति ॥ १६ ॥

जिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं पापसंदोह,
जवातरकृत घन ॥ ३४ ॥ इति कुशुनाथस्तुतिः ॥ १९ ॥

॥ सुदर्शननृपोद्भूतं, नन्द्यावर्त्तांकसयुत ॥ अजोज-
वन्निरालेप, देवीपुत्र सुवर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुरया
गुणा संवे, धुर्य्यं प्रभुतया जिन ॥ चरीकर्मि नमस्तस्मा,
अराय परमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुतिः ॥ १७ ॥

॥ कुंजप्रजावतीपुत्रो, नीलगणों घटाकृत ॥
जगन्मित्र इव ध्वान्त,—नाशनाद्धिदित सदा ॥ ३७ ॥
तत्रत्रययुतो जाति, देवो यो विष्टपत्रये ॥ तस्य
श्रीमद्विनाथस्य, स्मरणेन मुदा सरे ॥ ३८ ॥ इति
मद्विनाथस्तुतिः ॥ १९ ॥

॥ सुमित्रनृपते सूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत ॥
कूर्म्मलक्षणकृद्गूर्म्म,—दायक श्यामलह्वये ॥ ३९ ॥ मुनि-
सुव्रत देवेन, क्षीणकर्म्मरिमरुल ॥ देहि त्व मेऽव्य-
यीजाथ, पद तत्पुरुषोत्तम ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत-
स्तुतिः ॥ २० ॥

॥ श्रीमद्विजयनूपाल,—कुलोत्तस हिरण्यरुक् ॥
वप्रासुत नमिनाथ, नीलोत्पलसदकृत ॥ ४१ ॥ यस्ते-
पचजनो देव, निन्दा च कुरुते स्वय ॥ स एति

परमज्ञान, कोऽपि न ह्यत्र सशय ॥ ४२ ॥ इति नमि-
नाथस्तुतिः ॥ २१ ॥

॥ शिवायास्तनये वय्ये, समुद्रप्रिजयोद्भवे ॥ हरि-
वशहरो शनौ शरणाके कमलप्रजे ॥ ४३ ॥ त्यक्त-
राजीमतीक्ष्णे, नेमिनाथे जितम्भरे ॥ निह्निप्रमदया
मात्रा, प्रत्यक्षेपि जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमिनाथ-
स्तुतिः ॥ २२ ॥

॥ अश्वसेनाग्र्यभूपाल, सुतेन परमेष्ठिना ॥ वामे-
येन दिता येन, कमलन्याजिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मै
श्रीपार्श्वनाथाय, नमोऽस्तु मामक सदा ॥ दबनाशन-
चिह्नाय, नीलवर्णाय शजवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्व-
नाथस्तुतिः ॥ २३ ॥

॥ श्रीमत्सिद्धार्थवशार्क, त्रैशलेय जगन्मणे ॥ महा-
नादध्वजार्हत, कल्याणकर सर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थ-
कृद्भीर, मोहेजहनने मृगात् ॥ त्वद्भक्तिदत्तचित्ताय,
कमला देहि मे जिन ॥ ४८ ॥ इति महाश्रीरस्तुतिः ॥ २४ ॥

॥ इति श्रीकृमाकल्याणजीकृत चतुर्विंशति
जिनेश्वरस्तन सपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टापदादि नमस्कार ॥

॥ यत्र श्रीजरतेश्वर शुचिमना, पूर्वादिदिक्षु-

क्रमात् । तीर्थेगान् किल युग्मवर्णवसुदिक् संरयान-
सरयश्रिय ॥ साधु स्थापयति म् विस्मितहृदा दृश्य
नगाधीश्वर । त चाष्टापदतीर्थराजमनिश द्रष्टु समीहे
स्वयम् ॥ १ ॥ इत्यष्टापदस्तुति ॥

॥ लसद्द्विपचागदधीश्वरालये,—र्विराजिते श्रीमति
शाश्वताश्रये ॥ नन्दीश्वरे द्योपवरे जिनेश्वरान्, वदे
प्रमोदाद्भवतीतिशातये ॥ १ ॥ इति नदीश्वरस्तुति ॥

॥ सकलकुशलवह्नीपुष्करावर्तमेघो, दुरित-
तिमिरजानु कद्वपट्टक्षोपमान ॥ जवजलनिधिपोत-
सर्वसपत्तिहेतु । स नवतु सततं व श्रेयसे पार्श्व-
नाथ ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुति ॥

॥ दर्शनादुरितध्वसी, वदनाद्भावितप्रद ॥ पूज-
नात्पूरक श्रीणा, जिन साक्षात्सुरङ्गुम ॥ १ ॥ इति
जिनस्तुति ॥

॥ सुवर्णवर्ण गजराजगामिन, प्रलववाहुं सुविशाल-
लोचन ॥ नरामरेडै स्तुतपादपकज, नमामि
जत्तया रूपज जिनोत्तम ॥ १ ॥ इति आदिजिनस्तुति ॥

॥ नमस्कारसमो मत्र, शत्रुजयसमो गिरि ॥
वीतरागसमो देवो, न जूतो न नविप्यति ॥ १ ॥
दिष्टे तुह मुहकमले, तिननि ण ठाड निरवसेसाड ॥

दारिद्र्य दोहृग्ग, जम्मतरसच्चिय पाव ॥ १ ॥ पाताले
 यानि विवानि, यानि विवानि भूतले ॥ स्वर्गेऽपि
 यानि विवानि, तानि वदे निरन्तरम् ॥ १ ॥ प्रशम-
 रसनिमग्न दृष्टियुग्म प्रसन्न, वदनकमलमंक कामिनी-
 सगगून्य ॥ करयुगमपि यत्ते शस्त्रसवप्रवध्य,
 तदसि जगति देवो वीतरागस्त्वमेव ॥ १ ॥ इति सर्व-
 जिनस्तुति ॥

॥ इथा जेह सुखखणा, जे जिनवर पूजन्त ॥
 एकण धम्मे वाहिरा, परघर कम्म करत ॥ १ ॥ नव-
 वीजाकुरजनना, रागाद्या क्षयमुपागता यस्य ॥ ब्रह्मा
 वा विष्णुर्मा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सदाके देववदनमें तथा दशमे दिन उंली
 पारणकी विधिमें कहणेका (चै०) (स्त०) थुड ॥

॥ नव पद चैत्यवदन ॥

॥ जो धुरि सिरि अरिहत मूलदढ पीढिपइविठ,
 सिद्धि सूरि उगकाय साहु चिहु साहगरिविठ ॥ दसण
 नाण चरित्त इवहि पम्साहे सुन्दरु, तत्तत्कर सर-
 वग्ग लद्धि गुरुपय दल भवरु ॥ दिगिवाल जस्क

जस्कणी पमुह सुर कुसुमेहि अलकियउं, सो सिद्धचक्र
गुरुकृपतरु अम्ह मनवठिय दियउं ॥ १ ॥

॥ पुनः नव पद चेत्यवदन ॥

॥ श्री अरिहत उदार काति, अति सुन्दर रूप ॥
सेवो सिद्ध अनन्त गात, आतम गुण जूप ॥ १ ॥
आचारज उवजाय साधु, शमता रस धाम ॥ जिन-
नापित सिद्धात शुरू, अनुजव अजिराम ॥ २ ॥
घोषिवीज गुण सपदाए नाण चरण तव शुरू ॥ ध्यावो
परमानन्दपद, ए नव पद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परजव
आनन्दकद, जग माहि प्रसिद्धो ॥ चित्तामणि सम
जास जोग, बहु पुण्ये लख्यो ॥ ४ ॥ तिहुअण सार
अपार एह, महिमा मन धारो ॥ परिहर परजजाल
जाल, नित एह सजारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्रपद सेवता,
सहजानन्द स्वरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे
चेतन जूप ॥ ६ ॥ इति श्रीसिद्धचक्रचेत्यवदन सपूर्णम् ॥

॥ अथ नव पद वृद्धस्तवन ॥

॥ सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नव पद अजिरामी
रे लोय ॥ अहो नव ॥ करुणासागर गुणनिधि, जग
अतरजामी रे लोय ॥ अहो जग ॥ १ ॥ त्रिजुवन

जन पूजित सदा, लोकालोक प्रकाशी रे लोय ॥ अहो
 लोका० ॥ एहवा श्री अरिहतजी, नमु चित्त उझानी
 रे लोय ॥ अहो न० ॥ १ ॥ अष्ट करमदल करी
 यया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ निहन्ने
 जवि जावथी, जे अगम अरूपी रे लोय ॥ अहो
 जे० ॥ ३ ॥ गुण ठत्तीसे शोजता, सुंदर सुम्वकारी रे
 लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजे पदे, बहु छट्टि
 कारी रे लोय ॥ अहो व० ॥ ४ ॥ आगमथानी ट-
 शमी, तप दुग्धि आराधी रे लोय ॥ अहो न० ॥
 चोथे पद पाठक नमो, सवेग समाधि रे लोय ॥
 अहो स० ॥ ५ ॥ पचाचार पाखणपरा, पचाअर नमो
 रे लोय ॥ अहो प० ॥ गुणगगी मुनि पंचे नमो
 वरजागी रे लोय ॥ अहो प्र० ॥ ६ ॥ निहन्ने
 उंझरे, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय ॥ अहो
 ठे गुण दरगण नमो, आतम शुद्ध नमो
 अहो आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो नमो नमो
 प्रकारे रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ८ ॥ नमो
 नमो, परजाव निगारी रे लोय ॥ अहो नमो

जेदे रे लोय ॥ अहो वा० ॥ वांध्या काल अनतना,
 जे कर्म उठेदे रे लोय ॥ अहो जे० ॥ १० ॥ ए नव पद
 तहु मानथी, व्यावे शुन जावे रे लोय ॥ अहो ध्या० ॥
 नृप श्रीपाल तणी परे, मनवठित पावे रे लोय ॥ अहो
 म० ॥ ११ ॥ आसु चैत्रक मासमा, नव आविल
 करीए रे लोय ॥ अहो न० ॥ नव जंली विवि युत करी,
 शिपकमला घरीए रे लोय ॥ अहो शि० ॥ १२ ॥
 सिद्धचक्रनी बहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अहो
 व० ॥ श्री जिनलाल कहें सदा, अनुपम जश लीजे
 रे लोय ॥ अहो अ० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पद स्तवन ॥

॥ राग मारु ॥ तीरथनायक जिनवरुजी, अति-
 शय जास अनुप ॥ सिद्ध अनन्त महागुणीजी, पर-
 मानद सरूप ॥ जविक मनधारजो रे ॥ १ ॥ धारजो
 नव पदध्यान ॥ ज० ॥ श्री आचारज गणधर रे, गुण
 उत्तीश निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरुजी, श्रुत-
 दायक सुविलास ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति गुपतिधर शौज-
 ताजी, साधु समतावत ॥ सम्यग्दर्शन सुदरुजी,
 ज्ञानप्रकाश अनन्त ॥ ज० ॥ ३ ॥ मवर साधना

चरण ठे रे, नप उत्तम विवि होय ॥ ए नव पदेना
 ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुर होय ॥ ज० ॥ ४ ॥ अमृत
 सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नव पद जाण ॥ अविचल
 अनुज्ञय कारणेजी, नित प्रति नमत कल्याण ॥
 ज० ॥ ५ ॥ इति नवपदस्तवनम् ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

॥ राग प्रजाती ॥ नव पद ध्यान धरो रे ॥ जविका
 न० ॥ मन बब काया कर एकते, विकथा दूर
 हरो रे ॥ ज० न० ॥ १ ॥ मत्र जमी अरु तत्र घणेरा,
 इन सबकु विसरो रे ॥ अरिहतादिक नव पद जपने,
 पुण्यजनार जरो रे ॥ ज० न० ॥ २ ॥ अरु सिद्ध नव
 निध मंगलमाला, सपत्ति सहज बरो रे ॥ लालचद
 याकी बलिहारी, शिवतरु बीज खरो रे ॥ ज०
 न० ॥ ३ ॥ इति श्रीसिद्धचक्रस्तवनम् ॥

॥ अथ नव पद थुइ ॥

॥ नित प्रति हु प्रणमु, सिद्धचक्र शुभ जाव ॥ हिव
 कारज सिद्धिनो, लाभो एह उपाय ॥ तुज नाम पसाये,
 आरति व्याधि पुलाय ॥ इग तुज अनुग्रहथी, सुर
 सपत्ति मुज थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहत्त नमीए, सिद्ध

सूरि उवजाय ॥ मुनिवर त्रिक करणे, दसण नाण
 सुहाय ॥ दुगविवि चारित्ते, बुध विध तप मन जाय ॥
 ए नव पद ध्यावतां, निरुपम शिवसुख थाय ॥ २ ॥
 विद्यापरवादे, जाणो ए अविकार ॥ श्रीगुरु उपदेशे,
 सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे, जारयो एह
 विचार ॥ जविजन नित ध्यावो, सुरतरु गुणजमार ॥ ३ ॥
 जिनधरम अनुरागी, चक्रेसरी सुखकार ॥ सेवकने
 आपे, मुख सपत्ति परिवार ॥ हिव निधि उदयकरी,
 चारित्र नदी मन जाय ॥ जिनचंद सूरिसर, खरतर-
 पति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति नवपदस्तुति ॥

॥ अथ नव पद ओली करण विधि ॥

॥ प्रथम आसो सुदि ९ अथवा चैत्र सुदि ९ से
 उली शरु करे । कदाच तिथि घटी हुवे तो ६ से, वधी
 हुवे तो आठमसे शरु करे । पिण आबिल ए
 पूनिम ताड करे । तिहां प्रथम जूमि शुद्ध करके मारु-
 लादिकसे चित्रित करे, पीठे वाजोठ उपरी सिद्धचक्र
 थापे । त्रिकाल पूजा करे सो लिखते है ॥ प्रजात
 समय राइ पम्हिलमण करके पीठे वल्ल पम्हिलेहे ।
 जहा सिद्धचक्र स्थापना है तहा आयके पांच शरुस्तवे

देव वादे । पीठे नव चैत्ये अथवा नव प्रतिमा आगे
 नव चैत्यवदन करे । वासक्षेपमे पूजा करे । पीठे केसर
 चदनमे पूजा करे । पीठे मध्याह्न समय पाच शक्र-
 स्तवे देव वादे । पीठे गुरु पासे आयके राड आखोवे ।
 अप्पुछिउमि लमायके आगिलनु पञ्चस्काण करे ।
 प्रथम अरिहतपदका वर्ण सफेद है, इसीसे आगि-
 लमें चावल अने गरम पाणी यह दोड द्रव्य लेशु
 ऐसो आगिल पञ्चस्के । पीठे अरिहतपदके धारे गुण है
 सो चिंतवके धारे नमस्कार करे सो खिगते है ॥
 प्रथम सर्व ठेकाणे इमामि लमासमणो व० इत्यादि
 कहके नमस्कार करे ॥

॥ अरिहतपदके १७ गुण ॥

- १ अगोक्कृष्टप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम
- २ पुण्ड्रिप्रातिहार्यमयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ३ दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय० ॥
- ४ चामरयुगप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय० ॥
- ५ स्वर्णसिंहासनप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय०॥
- ६ जामरुलप्रातिहार्यमयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ७ डुडुनिप्रातिहार्यमयुताय श्रीअरिहताय नम ॥

८ ठत्रत्रयप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥

९ ज्ञानातिशयसयुताय श्रीअरिहताय नम. ॥

१० पूजातिशयसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥

११ वचनातिशयसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥

१२ अपायापगमातिशयसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करके 'अनञ्ज जतसिएण' कहके बार लोगस्सका काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स प्रगट कहे । पीठे स्वस्थानक जाके चैत्यवंदन करे। पच्चस्काण पारके आविल करे। पहले जल पीवे जब चैत्यवंदन करके पीवे। पीठे फेर चैत्यवंदन करके तिविहार पच्चस्काण करे। 'उँ ह्रीं एमो अरिहताण' इस पदको १००० गुणणो करे। श्रीपालजीको चरित्र, नव पद महिमा सुणे। पुण पहर दिन रह-णेसे तीसरी बेर पाच शक्रस्तवे देव वादे। सामायिक लेके दिन ठते पक्खिमण करे। आरतीके समय दीप, धूप, कुसुमपूजा करे। अथवा पहिले आरती प्रमुख करके पीठे पक्खिमण करे। (सोनेके समय) इरियावही पक्खिमके चैत्यवंदन करके राइ सथारा गाथा गुणके सोवे। निजा न आवे जहा तक नव पदका गुण स्मरण करे ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधि ॥

॥ अब इसी तरेह दूसरे दिन प्रजातकी करणी सब करके सिद्धपदका लाल वर्ण है, इसीसे गहुके रोटीको आविल करे। 'ॐ ह्रीं एमो सिद्धाय' इस पदको गुणणो दो हजार करे। सिद्धपदके आठ गुण है सो ८ गुणाको गुरु नमस्कार करावे सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धपदके ८ गुण ॥

- १ अनन्तज्ञानसयुताय श्रीसिद्धाय नम ॥
- २ अनन्तदर्शनसयुताय श्रीसिद्धाय नम ॥
- ३ अव्यावाधगुणसयुताय श्रीसिद्धाय नम ॥
- ४ अनन्तचारित्र्यगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नम ॥
- ५ अक्षयम्यतिगुणसयुताय श्रीसिद्धाय नम ॥
- ६ अरपिनिरजनगुणसयुताय श्रीसिद्धाय नम ॥
- ७ अगुरुलघुगुणसयुताय श्रीसिद्धाय नम ॥
- ८ अनन्तवीर्यगुणसयुताय श्रीसिद्धाय नम ॥

॥ यह आठ नमस्कार करके अन्नञ्ज उत्ससिएण कहके आठ लोगस्सका काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स कहके पारे। पीठे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसे करे ॥ इति द्वितीय दिवस विधि ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि ॥

॥ पूर्वोक्त विधिसे प्रज्ञातकर्तव्य करे । आचार्य-
पद पीले वर्ण है इसीसे चिणाकी ढालका आविल
करे । 'ॐ ह्रीं नमो आयरियाण' इस पदको गुणणो दो
हजार करे । आचार्यपदके ३६ गुण थाट करके
वत्तीस नमस्कार करे सो लिखते हैं ॥

॥ आचार्यपदके ३६ गुण ॥

- १ प्रतिरूपगुरुसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २ सूर्यवन्तेजस्विगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ३ युगप्रधानागमसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ५ गार्गीर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ६ धैर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ७ उपदेशगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ८ अपरिश्रावगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ९ सौम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १० जीलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ११ अविग्रहगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १२ अविकथकगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

- १३ अचपलगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- १४ प्रसन्नप्रदनगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- १५ क्षमागुणमयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- १६ कृजुगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- १७ मृदुगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- १८ सर्वमगमुक्तिगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- १९ द्वादशविधतपगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- २० सप्तदशविधसयमगुणसयुताय श्रीआचार्याय० ॥
- २१ सत्यव्रतगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- २२ शौचगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- २३ अकिंचनगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- २४ ब्रह्मचर्यगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
- २५ अनित्यज्ञाननाज्ञाप्रकाय श्रीआचार्याय नम ॥
- २६ अशरणज्ञाननाज्ञाप्रकाय श्रीआचार्याय नम ॥
- २७ ससारस्वरूपज्ञाननाज्ञाप्रकाय श्रीआचार्याय० ॥
- २८ अकल्पस्वरूपज्ञाननाज्ञाप्रकाय श्रीआचार्याय० ॥
- २९ अन्यत्वनानाज्ञाप्रकाय श्रीआचार्याय नम ॥
- ३० अशुचिज्ञाननाज्ञाप्रकाय श्रीआचार्याय नम. ॥
- ३१ आश्रयज्ञाननाज्ञाप्रकाय श्रीआचार्याय नम. ॥
- ३२ सपरज्ञाननानाज्ञाप्रकाय श्रीआचार्याय नम ॥

- ३३ निर्झराजावनाजावकाय श्रीआचार्याय नम ॥
 ३४ लोकस्वरूपजावनाजावकाय श्रीआचार्याय० ॥
 ३५ बोधिदुर्लभजावनाजावकाय श्रीआचार्याय० ॥
 ३६ धर्मदुर्लभजावनाजावकाय श्रीआचार्याय नम ॥

॥ यह ठत्तीस नमस्कार करके अन्नन्न ऊससिण्ण
 इत्यादि कहके ठत्तीस (३६) लोगस्सका काउस्सग्ग
 करे । एक लोगस्स उचे स्वरसे कहके पारे । यथोक्त
 करणी अनुक्रमसे करे ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ 'उँ ह्रीं एमो उवज्जायाण' इस पदको २
 हजार गुणणो करे । लील मूगाकी ढाल प्रमुखका
 आविल करे । उपाध्यायपदके २५ गुण याद करके
 नमस्कार करे ॥

॥ उपाध्यायपदके २५ गुण ॥

- १ श्रीआचारांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्या० ॥
- २ श्रीसुयगमागसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्या० ॥
- ३ श्रीगणान्गसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय०॥
- ४ श्रीसमवायांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
- ५ श्रीजगवन्तीसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय०॥

- ६ श्रीज्ञातामूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 ७ श्रीउपासकदशासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
 ८ श्रीअन्तर्गदशासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
 ९ श्रीअणुत्तरोववाट्सूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
 १० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
 ११ श्रीविपाकसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 १२ उत्पादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय नमः ॥
 १३ आग्रायणीपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 १४ वीर्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 १५ अस्तिप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 १६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 १७ सत्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 १८ आत्मप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 १९ कर्मप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 २० प्रत्यारयानप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
 २१ विद्याप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 २२ अविध्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
 २३ प्राणायामप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
 २४ क्रियाविशालपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
 २५ लोकनिर्णयसारपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥

॥ इस रीतसे पचवीस नमस्कार करे । समा होके
अन्नञ्जलसिण्ण इत्यादि कहके पचवीस लोग-
स्सका काजस्सग्ग करे । एक लोगस्स कहके पारे ।
पीठे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पचम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं णमो लोए सवसाहूण' इस पदको २
हजार गुणणो करे । साधुपद काले वर्ण है, इसीसे
उमदका आविल करे । सर्व साधुपदके सत्तावीस गुण
चितवके नमस्कार करे ॥

॥ साधुपदके २७ गुण ॥

- १ प्राणातिपातविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- २ मृपाजादविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ३ अदत्तादानविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ४ मेथुनविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ५ परिग्रहविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ६ रात्रिजोजनविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ७ पृथ्वीकायरदकाय श्रीसाधवे नम ॥
- ८ अष्कायरदकाय श्रीसाधवे नम ॥
- ९ तेजकायरदकाय श्रीसाधवे नम ॥

लोगस्सका काउस्सग्ग करे । एक लोगस्स कहके पारे ।
पीठे पूर्वोक्त करणी करे । यह पच परमेष्ठिपदके सर्व
गुण मिलाएँसे १०८ होय । इसीसे जैनमें मालाके
दाणे (१०८) होते हैं ॥ इति पचम दिवस विधि ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं णमो वसणस्स' इस पदको १ हजार
गुणणो करे । दर्शनपद सफेत वर्ण है, इसीसे तंडुलका
आंचिल करे । सम्यक्तके सतसठी गुण चितवके
नमस्कार करे ॥

॥ सम्यक्तके सतसठी जेद ॥

- १ परमार्थसस्तवरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
- २ परमार्थज्ञातृसेवनरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- ३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- ४ कुदर्शनवर्जनरूपसद्दर्शनाय नम. ॥
- ५ शुश्रूपारूपसद्दर्शनाय नम ॥
- ६ धर्मरागरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- ७ वैयावृत्त्यरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- ८ अर्हच्चिनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- ९ सिद्धविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥

(५९)

- १० चैत्यविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- ११ श्रुतविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- १२ धर्मविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- १३ साधुवर्गविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- १४ आचार्यविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- १५ उपाध्यायविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- १६ प्रवचनविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- १७ दर्शनविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- १८ ससारे जिनसारमिति चितनरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- १९ ससारे जिनमतिसारमिति चिंतनरूपसद्दर्शनाय ॥
- २० मसारे जिनमतिस्थितसाध्यादिसारमिति चितन-
रूपसद्दर्शनाय नम ॥
- २१ शकाद्रूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
- २२ काक्षाद्रूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
- २३ विचिकित्सारूपद्रूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
- २४ कुट्टिप्रशसाद्रूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
- २५ नत्परिचयद्रूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
- २६ प्रवचनप्रज्ञानकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- २७ धर्मकथाप्रज्ञानकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
- २८ वादिप्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥

- ३९ नैमित्तिकप्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
 ३० तपस्विप्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
 ३१ ब्रह्मपत्यादिविद्याभृत्प्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
 ३२ चूर्णाजनादिसिद्धप्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
 ३३ कविप्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम. ॥
 ३४ जिनशासने कौशलभूषणरूपसद्दर्शनाय नम. ॥
 ३५ प्रज्ञावनाभूषणरूपसद्दर्शनाय नम
 ३६ तीर्थसेवाभूषणरूपसद्दर्शनाय नम ॥
 ३७ धैर्यभूषणरूपसद्दर्शनाय नम ॥
 ३८ जिनशासने जक्तिभूषणरूपसद्दर्शनाय नम ॥
 ३९ उपशमगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
 ४० सवेगगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
 ४१ निर्वेदगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
 ४२ अनुकपागुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
 ४३ आस्तिभ्यगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
 ४४ परतीर्थकादिवदनवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
 ४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय ॥
 ४६ परतीर्थकादिश्लाघनवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
 ४७ परतीर्थकादिसलापवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
 ४८ परतीर्थकादिअशनादिदानवर्जनरूपश्रीसद्दर्श ॥

- ४९ परतीर्थकादिगधपुष्पादिप्रेषणवर्जनरूपश्रीस० ॥
 ५० राजाजियोगाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नम ॥
 ५१ गणाजियोगाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नम ॥
 ५२ बलाजियोगाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नम ॥
 ५३ सुराजियोगाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नम ॥
 ५४ कातारवृत्त्याकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नम ॥
 ५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नम ॥
 ५६ सम्यक्त्व चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिं० श्री० ॥
 ५७ सम्यक्त्व धर्मपुरम्य द्वारमिति चिं० श्रीस० ॥
 ५८ सम्यक्त्व धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिं० श्रीस० ॥
 ५९ सम्यक्त्व धर्मस्याधारमिति चिं० श्रीस० ॥
 ६० सम्यक्त्व धर्मस्य जाजनमिति चिं० श्रीस० ॥
 ६१ सम्यक्त्व धर्मस्य निधिसनिजमिति चिं० श्री० ॥
 ६२ अस्ति जीव इति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीसदर्शनाय०
 ६३ स च जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्तश्री० ॥
 ६४ स च जीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान-
 युक्तश्रीसदर्शनाय नम ॥
 ६५ स च जीव कृतकर्माणि देयतीति श्रद्धान-
 स्थानयुक्तश्रीसदर्शनाय नम ॥
 ६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति

६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धानस्थानयुक्तः ॥

॥ इस रीतसे सतसठी नमस्कार करे । समा होके
अन्नञ्जुससिण्णः इत्यादि कहके ६७ लोगस्त
अथवा ७ लोगस्तका काजस्सग करे । एक लोगस्त
कहके पारे । पीठे पूर्वोक्त करणी करे ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो नाणस्त' इस पदको १ हजार
गुणणो करे । ज्ञानपद उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे तडुलका
आविल करे । इकावन जेद ज्ञानपदके चित्तके
नमस्कार करे ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ७१ जेद ॥

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२ रसनेन्द्रियव्यजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

३ घ्राणेन्द्रियव्यजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

४ श्रोत्रेन्द्रियव्यजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

५ स्पर्शनेन्द्रियव्यजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

६ रसनेन्द्रियव्यजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

७ घ्राणेन्द्रियव्यजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

८ चक्षुरिन्द्रियव्यजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

९ श्रोत्रेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

१० मनोऽर्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

११ स्पर्शनेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

१२ रसनेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

१३ घ्राणेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

१४ चक्षुरिन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

१५ श्रोत्रेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

१६ मनोऽर्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

१७ स्पर्शनेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

१८ रसनेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

१९ घ्राणेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२० चक्षुरिन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२१ श्रोत्रेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२२ मनोऽर्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२३ स्पर्शनेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२४ रसनेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२५ घ्राणेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२६ चक्षुरिन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२७ श्रोत्रेन्द्रियार्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२८ मनोऽर्थविग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

- ७९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८० अनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८१ सहिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८२ असहिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८३ सम्यक्श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८४ मिथ्याश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८५ सादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८६ अनादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८७ सपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८८ अपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ८९ गमिकश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ९० अगमिकश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ९१ अगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ९२ अनगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ९३ अनुगामिअवधिज्ञानाय नमः ॥
 ९४ अननुगामिअवधिज्ञानाय नमः ॥
 ९५ वर्धमानअवधिज्ञानाय नमः ॥
 ९६ हीयमानअवधिज्ञानाय नमः ॥
 ९७ प्रतिपातिअवधिज्ञानाय नमः ॥
 ९८ अप्रतिपातिअवधिज्ञानाय नमः ॥

४९ ऋजुमतिमन पर्यवज्ञानाय नम ॥

५० विपुलमतिमन पर्यवज्ञानाय नम ॥

५१ लोकालोकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ इस रीतसे ५१ नमस्कार करे। खमा होके अन्नन्न जससिएण इत्यादि कहे। ५१ लोगस्सका काउ-
स्सग्ग करके प्रगट लोगस्स कहे। पीठे सर्व पूर्वोक्त
करणी करे। इति सप्तम दिवस विधि ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स' इस पदको २ हजार
गुणणो करे। चारित्रपदका उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे
तड्डुलका आविल करे। सित्तर जेद चारित्रपदके
चित्तके नमस्कार करे ॥

॥ अथ चारित्रपदके ७० जेद ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूपचारित्राय नम ॥

२ मृषापादविरमणरूपचारित्राय नम ॥

३ अदत्तादानविरमणरूपचारित्राय नम ॥

४ मेथुनविरमणरूपचारित्राय नम ॥

५ परिग्रहविरमणरूपचारित्राय नम ॥

६ क्षमाधर्मरूपचारित्राय नमः ॥

- ७ आर्जवधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
 ८ मृदुताधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
 ९ मुक्तिधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
 १० तपोधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
 ११ संयमधर्मरूपचारित्राय नमः
 १२ सत्यधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
 १३ शौचधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
 १४ अकिंचनधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
 १५ व्रतधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
 १६ पृथ्वीरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 १७ उदकरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 १८ तेजसरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 १९ वातरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 २० वनस्पतिरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 २१ वेङ्गद्वियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 २२ तेज्ज्वियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 २३ चौरिज्वियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 २४ पञ्चेन्द्रियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 २५ अजीवरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
 २६ प्रेक्षासंयमचारित्राय नमः ॥

- २५ उपेक्षासयमचारित्राय नमः ॥
 २६ अतिरिक्तवस्त्रजक्तादिपरवर्णत्यागरूपसंयमः ॥
 २७ प्रमार्जनरूपसयमचारित्राय नमः ॥
 २८ मनसयमचारित्राय नमः ॥
 २९ वाक्संयमचारित्राय नमः ॥
 ३० कायासयमचारित्राय नमः ॥
 ३१ आचार्यवैयावृत्त्यरूपसंयमचारित्राय नमः ॥
 ३२ उपाध्यायवैयावृत्त्यरूपसयमचारित्राय नमः ॥
 ३३ तपस्त्रिवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
 ३४ लघुशिष्यादिवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
 ३५ ग्लानसाधुवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
 ३६ साधुवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
 ३७ श्रमणोपासकवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
 ३८ सध्ववैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
 ३९ कुलवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
 ४० गणवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
 ४१ पशुपद्मादिरहितमसतिमसनब्रह्मगुप्तिचारित्राय ॥
 ४२ स्त्रीहास्यादिप्रिकथामर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय ॥
 ४३ स्त्रीआसनमर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥
 ४४ स्त्रीअगोपागनिरीक्षणमर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय ॥

- ४७ कुड्यरस्थितस्त्रीहावजावश्रवणवर्जनब्रह्मगुप्ति० ॥
 ४८ पूर्वस्त्रीसन्नोगचितनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नम ॥
 ४९ अतिसरसआहारवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नम ॥
 ५० अतिआहारकरणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नम ॥
 ५१ अगविभूपावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय-नमः ॥
 ५२ अनशनतपोरूपचारित्राय नम ॥
 ५३ जनोदरीतपोरूपचारित्राय नम -॥
 ५४ वृत्तिसक्षेपतपोरूपचारित्राय नम ॥
 ५५ रसत्यागतपोरूपचारित्राय नम ॥
 ५६ कायम्लेशतपोरूपचारित्राय नम ॥
 ५७ सक्षेपनातपोरूपचारित्राय नम ॥
 ५८ प्रायश्चित्ततपोरूपचारित्राय नम ॥
 ५९ विनयतपोरूपचारित्राय नम ॥
 ६० वेयावच्चतपोरूपचारित्राय नम ॥
 ६१ सज्जायतपोरूपचारित्राय नम ॥
 ६२ व्यानतपोरूपचारित्राय नम ॥
 ६३ उपसर्गतपोरूपचारित्राय नम ॥
 ६४ अनंतज्ञानसयुक्तचारित्राय नम ॥
 ६५ अनतदर्शनसयुक्तचारित्राय नम ॥
 ६६ अनतचारित्रसयुक्तचारित्राय नम ॥

॥ ६९ ॥

६९ क्रोधनिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥

६७ माननिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥

६९ मायानिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥

७० लोचनिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥

॥ इस रीतसे ७० नमस्कार करे । खना होके अन्नद्य जससिण्ण० इत्यादि कहे । ७० लोगस्सका काजस्सग्ग करके एक लोगस्स कहे । पीठे पूर्वोक्त करणी सब करे । इति अष्टम दिवस विधि ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो तवस्स' इस पदको २ हजार गुणणो करे । तपपदका उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे तडुलका आबिल करे । पचास जेद तपपदके चिंतवके नमस्कार करे ॥

॥ अथ तपपदके ४० जेद ॥

१ यावत्कथिकतपसे नमः ॥

२ इत्वरतपोजेदतपसे नमः ॥

३ बाह्यजनोदरीतपोजेदतपसे नमः ॥

४ अन्यतरजनोदरीतपोजेदतपसे नमः ॥

५ अव्यतपोवृत्तिसक्षेपतपोजेदतपसे नमः ॥

- ६ क्षेत्रतपोवृत्तिसंक्षेपतपोजेदतपसे नमः ॥
 ७ कालतपोवृत्तिसंक्षेपतपोजेदतपसे नमः ॥
 ८ जावतपोवृत्तिसंक्षेपतपोजेदतपसे नमः ॥
 ९ कायक्लेशतपोजेदतपसे नमः ॥
 १० रसत्यागतपोजेदतपसे नमः ॥
 ११ इन्द्रियकषाययोगविषयकसत्तीनतातपसे नमः ॥
 १२ स्त्रीपशुपक्षिकादिवर्जितस्थानश्रवस्थितसत्तीनता ॥
 १३ आलोयणप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 १४ पक्विक्रमणप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 १५ मिश्रप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 १६ त्रिवेकप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 १७ उपसर्गप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 १८ तप प्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 १९ वेदप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 २० मूलप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 २१ अनवस्थितप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 २२ पारचियप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
 २३ ज्ञानविनयरूपतपसे नमः ॥
 २४ दर्शनविनयरूपतपसे नमः ॥
 २५ चारित्रविनयरूपतपसे नमः ॥

२६ गुर्वादिकमनोविनयरूपतपसे नमः ॥

२७ वचनविनयरूपतपसे नमः ॥

२८ कायविनयरूपतपसे नमः ॥

२९ उपचारकविनयरूपतपसे नमः ॥

३० आचार्यवेयावच्चतपसे नमः ॥

३१ उपाध्यायवेयावच्चतपसे नमः ॥

३२ साधुवेयावच्चतपसे नमः ॥

३३ तपस्त्रिवेयावच्चतपसे नमः ॥

३४ जघुशिष्यादिवेयावच्चतपसे नमः ॥

३५ ग्लानसाधुवेयावच्चतपसे नमः ॥

३६ श्रमणोपासकवेयावच्चतपसे नमः ॥

३७ सधवेयावच्चतपसे नमः ॥

३८ कुलवेयावच्च तपसे नमः ॥

३९ गणवेयावच्चतपसे नमः ॥

४० वायणातपसे नमः ॥

४१ पृष्ठनातपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षातपसे नमः ॥

४४ धर्मकथातपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥

४७ धर्मध्यानचितनतपसे नमः ॥

४८ शुक्लध्यानचितनतपसे नमः ॥

४९ बाह्यउपसर्गतपसे नमः ॥

५० अच्यतरउपसर्गतपसे नमः ॥

॥ इस रीतसे ५० नमस्कार करे । समा होके
अन्नं जलसिंघणं इत्यादि कहे । ५० लोगस्सका
काजस्सग करके एक लोगस्स कहे । पीठे पूर्वोक्त
करणी करे ॥ इति नवम दिवस विधि ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेको गुरुके
पास जानेकी विधि ॥

॥ प्रथम शुद्ध दिन, शुद्ध घड़ी देखके अष्टा
आचूपण पहरे । निलाममें तिलक करे । दोव सरसु
मस्तकमें धारण करे । हाथके मोली बांधके
अक्षत, सुपारी, श्रीफल, नैवेद्य, यथाशक्ति रोक नाणो
लेके, नवकार गुणतो यको पास जावे । छादशा-
वर्त्त वादणा करके ग्यान पूजा करे । पीठे बहुत
प्रमोदवत होके गुरुके मुखसे जली तप ग्रहण करे ॥

सो तपस्या ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखेगे । इति तपस्या ग्रहण करनेको पोशाल जानेकी विधि ॥

॥ अथ सदैप उजमणा विधि ॥

॥ पच वर्णके धान्यसे सिद्धचक्रका मंजुल करे । सिद्धचक्रजीके चोतरफ तीन गढ चूनीके आकार बनावे । पहिले गढ माहे अष्ट दल कमलके आकार नत्र पद स्थापन करे । पद पदके वर्ण गुण प्रमाणे रत्नादिक चढावे । और पच वर्णके फल, पच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रगके जिस पदका जैसा वर्ण होय तैसेही रगका गोटा चढावे । पच वर्णी ए ध्वजा चढावे । दूसरे वलयमें सोले श्रीफल अथवा पूगीफल चढावे । तीसरे वलयमें ४० तुहारा चढावे । नव निधानके ठिकाणे ए नव वक्रा फल चढावे । दश दिक्पाल, नव ग्रहको पञ्चान्नप्रमुख चढावे । इत्यादिक विधि सयुक्त सिद्धचक्रस्थापना घर देरासर आगे करे । और जिनमदिर माहे वाह्य मरुपे ५-७ हाथ प्रमाणे मरुलरचना करे । विस्तारसे सब विधि गुरुके वचनसे करके नत्र पदजीकी पूजा पढायके कलश ढाले । धवल भगल गीत गान गावे । वाजित्र बजावे ।

इसी तरेह महा महोद्वज उदार चित्तसे करे । मंगल-
दीप, आरती प्रमुख करे । दूसरे दिन विसर्जन करे ॥
॥ इति संक्षेप सिद्धचक्र मंगलविधि ॥

॥ सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापन विधि ॥

॥ अब १० मे दिन गुरुके पास आके उंली तपको
पारे । तप पारणकी विधि आगे लिखेगे । तथा
उद्यापनमें ज्ञानचक्रिके कारण ए पूजा, ए वीटा-
गणां, ए पुस्तक, ए लेखण, ए ठवणी, ए जिलमिल,
ए रुमाल, ए दोरा, ए मिजासणा, ए थापना, ए
चडुआ, ए पूठीआ, ए आरती, ए कलश, ए जापमाला,
ए मदिर, ए प्रतिमा, ए तिलक, ए मुगट । इत्यादिक
अनेक नव नव चीज बनावे । शक्ति न होय तो यथा-
शक्ति रोक नाणो चढावे । देवपदको देवपदमें देवे ।
गुरुपदको गुरुपदमें देवे । ज्ञानपदको ज्ञानराते
लगावे । इत्यादिक यथायोग्य शुभ क्षेत्रे खरच करे ॥
॥ इति सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापन विधि ॥



(३५)

॥ श्री देवचंज्जी कृत स्नात्रपूजा प्रारब्धते ॥

॥ पाखमी गाथा ॥ ढाल पहेली ॥

५ ॥ दोहा ॥ चउत्तिसे अतिसय जुठ, वचनातिशय
जुत्त ॥ सो परमेसर देखी जवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥
ढाल ॥ सिंहासन वेवा जग जाण, देखी जविक
जन गुण मणि राण ॥ जे दीठे तुज निर्मल
नाण, लहीए परम महोदय ठाण ॥ कुसुमाजलि
मेलो आदि जिणदा, तोरां चरणकमल सेवे चोसठ
इदा ॥ कुं ॥ १ ॥ चोवीश बैरागी, चोवीश सोजागी,
चोवीश जिणदा ॥ कुं ॥ एम कही प्रजुना चरणे
पूजा करीए ॥ गाथा ॥ जो निय गुण पजाव रम्यो, तसु
अनुजव एगंत ॥ सुह पुगल आरोपता, जो तसु रग
निरत्त ॥ २ ॥ ढाल ॥ जो निज आतम गुण आणदी,
पुगल सगे जेह अफदी ॥ जे परमेसर निज पद लीन,
पुजो प्रणमो जव्य अदीन ॥ कुसुमाजलि मेलो शाति
जिणदा ॥ तोण ॥ कुं ॥ २ ॥ एम कही प्रजुना
जानुए पूजा करीए ॥ गाथा ॥ निम्मल नाण पयास-
कर, निम्मल गुण सपन्न ॥ निम्मल धमोवएसकर,
सो परमप्पा ॥ ३ ॥ ढाल

नाणी, जविजन तारण जेहनीवाणी ॥ परमानंद तणी
 निशाणी, तसु जगते मुज मति ठहराणी ॥ कुसुमा-
 जलि मेलो नेम जिणदा ॥ तो ० ॥ कु० ॥ ३ ॥ एम
 कही प्रजुना वे हाथे पूजा करीए ॥ गाथा ॥ जे
 सिद्या सिद्यति जे, सिद्यसति अणत ॥ जसु आलं-
 धन ठविय मण, सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥ टाल ॥
 शिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामे जगत
 नीहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखांडे, इडादिक जसु
 चरण पराळे ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणदा ॥
 तो ० ॥ कु० ॥ ४ ॥ एम कही प्रजुना खजाए
 पूजा करीए ॥ गाथा ॥ सम्मदिष्टी देस जय, साहु
 साहुणी सार ॥ आचारिज उवजाय मुणि, जो निम्मल
 आधार ॥ ५ ॥ ढाल ॥ चउविह सधे जे मन धार्यु,
 मोक्ष तणु कारण निरधार्यु ॥ विविह कुसुम वर जाति
 गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥ कुसुमाजलि मेलो
 वीर जिणदा ॥ तो ० ॥ कु० ॥ ५ ॥ एम कही प्रजुने
 मस्तके पूजा करीए ॥ इति पांखमी गाथा ॥

॥ वस्तु ठद ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर,
 नमिय मनरंग, कव्याणकविहि सघविय, करिस
 धम्म सुपवित्त ॥ सुदर सय इग सत्तरि तिष्ठकर,

एक समय विहरति महीयल ॥ चवण समय झग-
वीस जिण, जम्म समय झगवीस ॥ चत्तिय जावे
पूजीया, करो सघ सुजगीश ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ एक दिन अचिरा हुलरावती ॥ ए देशी ॥

॥ जब बीजे समकित गुण रम्या, जिनजक्ति
प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजी झंझुसुख आशसना,
करी स्थानक बीशनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त
प्रजावता, मन जावना एहवी जावता ॥ सत्रि
जीव करु शासनरसी, इसी जावदया मन उल्लसी
॥ २ ॥ लही परिणाम एहबु जलु, नीपजावी जिनपद
निर्मल ॥ आयुवध वचे एक जब करी, श्रद्धा सवेग
ते धिर धरी ॥ ३ ॥ त्याची चवीय लहे नरजव उदार,
जरते तेम ऐरवतेज सार ॥ महाविदेहे विजये वर
प्रधान, मध्य राडे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपनानी ढाल बीजी ॥

॥ पुण्ये सुपनह ठेरे, मन मांहे हर्ष विशेषे ॥
गजरर उज्ज्वल सुंदर, निर्मल वृषज मनोहर ॥ १ ॥
निर्जय केसरी सिंह, लक्ष्मी अतिही अधीह ॥ अनु-
पम फूलनी माल, निर्मल शशी सुकुमाल ॥ २ ॥ तेजे

तरणि अति दीपे, इन्द्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश
 पट्टर, पद्म सरोवर पूर ॥ ३ ॥ अग्यारमे रयणायर,
 देखे माता गुण सायर ॥ वारमे जुवन विमान,
 तेरमे अनुपम रत्ननिधान ॥ ४ ॥ अग्निशिखा निरधूम,
 देखे माताजी अनुपम ॥ हर्षी रायने जापे, राजा
 अरथ प्रकाशे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होशे
 पुत्र मनोहर ॥ इन्द्रादिक जसु नमशे, सकल मनो-
 रथ फलशे ॥ ६ ॥

॥ वस्तु ठद ॥ पुण्यउदय पुण्यउदय, उपना जिननाह,
 माता तव रयणी समे, देखी सुपन हरखती जागीय ॥
 सुपन कही निज कतने, सुपन अरथ साजलो सोजा-
 गीय । त्रिजुवन तिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान ।
 इन्द्रादिक जसु पाय नमी, करशे सिद्धि विधान ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ चन्द्रावलानी देशीमां ॥

॥ सोहमपति आसन कपीयो ए, देश अवधि
 मन आणटीयो ए ॥ निज आतम निर्मल करण काज,
 जवजलतारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥ जवअरुवी
 पारग सठवाह, केवल नाणाश्य गुण अगाह ॥

(४९)

शिवसाधन गुण अकुरो जेह, कारण उलट्यो आसाढी
मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसी तव रोमराय, वलयादि-
कमां निज तनु न माय ॥ सिंहासनयी उठ्यो
सुरिद, प्रणमतो जिन आनदकद ॥ ३ ॥ सग अरु पय
सामो आरी तछ, करी अजलिय प्रणमीय मछ ॥
मुखे जाखे ए द्वाण आज सार, तिय लोय पट्ट दीगो
उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल
तापिन तुम सवेव ॥ तसु शातिकरण जलधर समान,
मिथ्या विष चूरण गरुवान ॥ ५ ॥ ते देव सकल
तारण समछ, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनाथ ॥ एम
जपी शक्र स्तव करेनि, तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥
गावे तव रजा गीत गान, सुरलोक हुयो मंगल
निधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंश ठाम, जिनराज
वधे सुर हर्ष धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उत्सव
अगेप, जिनगासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति
देवादिक हर्षे सग, सयमअर्थी जनने उमग ॥ ८ ॥
शुन वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या ड्डादिक हर्षे
साथ ॥ सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीय, वधाइ वधाइ
थइ अतीय ॥ ९ ॥

(८०)

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ श्री शांति जिननो कलश कहीशुं, प्रे
पूर ॥ ए देशी ॥

॥ श्री तीर्थपतिनु कलश मज्जन, गाऊए सुख
नरखित्त मंरुण दुह विहंरुण, जविक मन
तिहां राव राणा हर्प उत्सव, थयो जग जयव
दिशिकुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्प
॥ १ ॥ निय अमर अमरी सग कुमरी, गावती
ठद ॥ जित जिननी पासे आवी पहोती, गहग
आणद ॥ हे माय ! ते जिनराज जायो, चि व
रम्म ॥ अम जम्म निम्मल करण कारण, फ
कम्म ॥ २ ॥ तिहा जूमि शोधन दीप दर्पण, वाय
धार ॥ तिहा करीय कदली गेह जिनवर, जननी
नकार ॥ वर राखनी जिनपाणि बाधी, दीए
शीप ॥ जुग कोमाकोमी चिरं जीयो, धर्मदायक

॥ ढाल ठही ॥ एकवीशानी ॥

॥ जगनायकजी, त्रिभुवन जन हितकार
परमात्मजी, चिदानंद घन सार ए
॥ ए देशी ॥

॥ ढाल ॥ जिण रयणीजी, दश दिशि

(७३)

आधन रमी देवकोमी हसी, उल्लसीने
 ॥ दिशि ॥ पउमदह् द्यादि दह् गग
 नीर्थजल यमल सेवा जणी ते गड ॥ १ ॥
 करी सहस्र अछोतरा, ठर चामर
 पुजतग ॥ उपकरण पुष्प चगेरी पमुद्रा
 न नापीया तेम याणी ठवे ॥ २ ॥ नीर्थ-
 कर वलज करी देवता, गायना जायना
 ता ॥ निरिय नर थमरने हर्ष उपजायना,
 नक्ति शुचि नक्ति गम जायना ॥ ३ ॥ सम-
 निज आत्म आरोपना, कलज पाणी-
 जल सिचना ॥ मेरुमिहगोररे सर्व आढ्या
 उरमग जिन देवी मन गद्गद्ही ॥ ४ ॥
 वद ॥ हृदो देवा हृदो देवा अणाड कालो,
 निलोयतारणो तिलोयग्धु, मिष्ठत्तमोद्
 ॥ अणाड तिण्ठा त्रिणामणो, देवाहिदेवो
 य कामेहि ॥ ५ ॥
 तेहीज ॥ गम पनणत वण जण जोंदे-
 वेमाणिया जत्ति धम्मायरा ॥ केवि वण्य-
 मित्ताणुगा, केवि वर रमणि चयणण
 ॥ ६ ॥

समो कोण अन्य ए ॥ हे जगतजननी ! पुत्र तुमचो,
मेरु मज्जन वर करी ॥ उत्सर्ग तुमचे वलीय थापीश,
आतमा पुण्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी,
जिन निज करकमले ठव्या ॥ पंच रूपेजी, अतिशे
महिमाए स्तव्या ॥ नाटक विधिजी, तव त्रयीश आगल
वहे ॥ सुर कोमीजी, जिनदर्शनने उम्महे ॥ त्रुटक ॥
सुर कोमाकोमी नावती वली, नाथ शुचि गुण गावती ॥
अप्सरा कोमी हाथ जोमी, हाव नाव देखावती ॥
जयो जयो तु जिनराज जगगुरु, एम दे आजीप ए ॥
अम्ह त्राण शरण आधार जीवन, एक तु जग-
दीश ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरिवरजी, पामुक वनमं
चिहु दिशे ॥ गिरि शिल परजी, सिंहासन सासय
वसे ॥ तिहां आणीजी, गळे जिन खोळे ग्रह्या ॥
चोसणेजी, तिहा सुरपति आवी रह्या ॥ त्रुटक ॥
आणीया सुरपति सर्व जक्ते, कलश श्रेणी वनाव ए ॥
सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औपधि, सर्व वस्तु अणाव ए ॥
अचुअपति तिहा हुकम कीनो, देव कोमाकोमीने ॥
जिन मज्जनारथ नीर लावो, सवे सुर कर जोमीने ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शांतिने कारणे इंद्र कलशा जरे ॥ ए देखी ॥

॥ आत्मसाधन रमी देवकोमी हसी, उल्लसीने
 वसी क्षीरसागर दिशि ॥ पञ्चमदह आदि दह गग
 पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेगा जणी ते गड ॥ १ ॥
 जाति अरु कलश करी सहस्र अछोतरा, ठत्र चामर
 मिहासण शुचतरा ॥ उपकरण पुष्प चगेरी पमुहा
 सवे, आगमे जापीया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ नीर-
 जल जरीय कर कलश करी देवता, गावता चावता
 धर्म उन्नतिरता ॥ तिरिय नर अमग्ने हर्ष उपजावता,
 वन्य अम जक्ति शुचि जक्ति एम नायता ॥ ३ ॥ मम-
 कित धीज निज आत्म आरोपता, कज्ज पापी
 मिपे जक्तिजल सिचता ॥ मेरुमिहगेवरैसर्व आन्या
 यही, शक उत्तमग जिन देखी मन गद्गदी ॥ ४ ॥

॥ वस्तु ठढ ॥ हहो देवा हंढो देवा अशाड कालो,
 अदिष्ठ पुढो तिलोयनारणो तिजोरवु मिष्ठमोह
 विरुसणो ॥ अणाड तिप्पा विद्यामणो, देवाहिदेवो
 दिष्ठ चोहिय कामेहि ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ एम ददंठ वण तवण जोढे
 सरा, देव वेमाणिया नदि इम्माना ॥ केजि कप्प
 छिया केवि मिताणुगा र्द्ध वर रमणि चयणे
 अड उद्युगा ॥ ६ ॥

॥ वस्तु ठंद ॥ तव अच्युय तव अच्युय उद
 आदेस ॥ कर जोमी सवि देवगण, लेय कलस आदेस
 पामीय ॥ अझुत रूप सरूप जुअ, कवण एह उत्सगे
 सामिय ॥ उद कहे जगतारणो, पारग अम परमेस ॥
 नायरु दायक धम्मनिहि, करीए तसु अजिसेस ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तीर्थकमलदल उदक जरीने, पुंकरसागर
 आवे ॥ ए देशी ॥

॥ पूरण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अगे
 नामे ॥ आतम निर्मल जाव करता, वधते शुज परि-
 णामे ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल
 लोकात ॥ सामानिक इच्छाणी पमुहा, एम अजिपेक
 करत ॥ १ ॥ गाहा ॥ तव ईसाण सुरिदो, सक
 पजणेई, करइ सुपसाउ ॥ तुम अके महन्नाहो, पण-
 मित्तं अम्ह अप्पेह ॥ २ ॥ ता सिकिदो पजणेई, सा-
 हमीगळमि बहु लाहो ॥ आणा एव तेण, गिण्हि-
 हवो उद्दयवाजो ॥ ३ ॥ एम कही सर्व म्मात्रीया
 कलश ढाले अने मुखयी नीचे प्रमाणे पाठ कहे ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ सोहम सुरपति वृषज रूप करी,
 न्हवण करे प्रजु अग ॥ करीय जिलेपण पुष्पमाल

(८५)

ठवी, वर आचरण अजग ॥ तव सुरवर वहु जय
जयरव करी, नाचे धरी आणढ ॥ मोक्षमार्ग
सारथपति पाम्यो, जांजगु हवे चवफट ॥ ४ ॥ कोनि
वत्रीश सोनन उगारी, वाजते वर नादे ॥ सुरपति
सघ अमर श्री प्रजुने, जननीने सुप्रसादे ॥ आणी
थापी एम पयपे, अमे निस्तरीया आज ॥ पुत्र तुमागे
धणी रेहमारो, तारण तरण जहाज ॥ ५ ॥ मात
जतन करी राखजो एहने, तुम सुत अम आधार ॥
सुरपति जक्ति सहित नदीश्वर, करे जिनजक्ति
उदार ॥ निय निय कप्प गयासनि निर्झर, कहेता
प्रजु गुणसार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक, छछा
चित्त मजार ॥ ६ ॥ सरतरगघ जिन आणारगी,
राजसागर उगघाय ॥ ज्ञान धर्म दीपचढ सुपाठक,
सुगुरु तणे सुपसाय ॥ देवचड जिनजक्ते गायो,
जन्ममहोत्सव ठढ ॥ बोध बीज अकुगे उलस्यो,
सघ सकल थानढ ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ राग वेलागल ॥ एम पूजा जक्ते करो,
आतमहित काज ॥ तजीय निजाय निज चायमं,
रमता शिवराज ॥ एम० ॥ १ ॥ काल अनते जे
हुआ, होशे जिणढ ॥ सपय सीमंधर

केवलनाथ दिण्णद ॥ एम० ॥ २ ॥ जन्ममहोत्सव एणी
 परे, श्रावक रुचियंत ॥ विरचे जिनप्रतिमा तणो,
 अनुमोदन खत ॥ एम० ॥ ३ ॥ देवचंद्र जिनपूजना,
 करता जवपार ॥ जिनपद्मिमा जिन सारखी, कही
 सूत्र मऊार ॥ एम० ॥ ४ ॥ इति पणितश्रीदेवचंद्रजी-
 कृता स्नात्रपूजा सपूर्णा ॥

॥ अथ श्री शान्ति जिननी आरती ॥

॥ जय जय आरती शान्ति तुमारी, तोरा चरण-
 कमलकी में जाउ बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन
 अचिराजीके नदा, शान्तिनाथ मुख पूनमचदा ॥
 जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष सोवनमय काया, मृग-
 लठन प्रजुचरण सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती प्रजु
 पाचमा सोहे, सोलमा जिनवर जग सह मोहे ॥
 जय० ॥ ४ ॥ मंगल आरती तोरी कीजे, जन्म जन्मनो
 लाहो लीजे ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोकी सेवक गुण
 गावे, सो नर नारी अमरपद पावे ॥ जय० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आदि जिननी आरती ॥

॥ अप्सरा करती आरती जिन आगे, हारे जिन
 आगे रे जिन आगे ॥ हारे ए तो अविचल सुरमा

मागे ॥ हारे नाजिनदन पास ॥ अप्सरा करती आरती
 जिन आगे ॥ १ ॥ ताथेइ नाटक नाचती पाय ठमके,
 हारे दोय चरणे काजर कमके ॥ हारे सोवन घुघरमी
 घमके, हारे लेती फुटमी घाल ॥ अ० ॥ २ ॥ ताल मृदंग
 ने वासली रुफ वीणा, हारे रुमा गावती खर जीणा ॥
 हारे मधुर सुरासुर नयणा, हारे जोती मुखहु नीहाल
 ॥ अ० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवा मातने प्रभु जाया,
 हारे तोरी कचनवरणी काया ॥ हारे में तो पूरव पुण्ये
 पाया, हारे देरयो तोरो देदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन
 परमेश्वर प्रभु प्यारो, हारे प्रभु सेवक हु बु तारो ॥
 हारे जवोजवना हु लमा वारो, हारे तुमे दीनदयाल
 ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो,
 हारे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हारे मुनि माणेंक
 सुखीठ करजो, हारे जाणी पोतानो वाल ॥ अ० ॥ ६ ॥



॥ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत ॥

॥ नवपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम अरिहतपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ उपजातिवृत्तम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाण, सप्पाणिहेरासण-
संठियाण ॥ सदेसणाणदियसङ्गाणाण, नमो नमो
होउ सया जिणाण ॥ १ ॥

॥ जुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमोऽनंतसतप्रमोदप्रदान, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने
जाखताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौग्यजाजा, सदा
सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥ १ ॥ कर्मा कर्म दुर्मर्म
चक्रचूर जेणे, जला ज्ञव्य नवपदध्यानेन तेणे ॥
करी पूजना ज्ञव्य जावे त्रिकाले, सदा वासीयो
आतमा तेणे काले ॥ २ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये
करीने, दीण देशना ज्ञव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ
महापाणिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुता
॥ ३ ॥ कर्मा घातिया कर्म चारे अलग्गा, ज्ञवोप-

(८८)

ग्रही चार जे ठे विलग्ना ॥ जगत् पच कल्याणके
सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थकरा मोक्षकामे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ तीर्थपति अरिहा नमु, धर्मधुरधर धीरो जी ॥
देशना अमृत वरसता, निज वीरज वरु वीरो जी ॥ १ ॥

॥ उलालो ॥ नर अखय निर्मल ज्ञानजासन, सर्व
जाव प्रकाशता ॥ निज शुद्धश्रद्धा आत्मजावे, चरण-
थिरता वासता ॥ जिन नामकर्म प्रजाव अतिगय,
प्रातिहारज शोजता ॥ जगजतु करुणावत जगवत
जविकजनने क्षोजता ॥ ७ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ श्रीजे जव वर स्थानक तप करी, जेणे वाध्यु
जिननाम ॥ चोसठ षडे पूजित जे जिन, कीजे तास
प्रणाम रे ॥ जविका ॥ सिद्धचक्रपद बढो, जेम चिर
काले नढो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥
जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पण अजवाबु ॥
सकल अधिक गुण अतिशय वारी, ते जिन नमी अघ
टाबु रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २ ॥ जे तिहु नाण समग
उप्पन्ना, जोगकरम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा
दीण जनने, ते नमीण जिन नाणी रे ज० ॥ सि०

(૯૦)

॥૩॥મહાગોપ મહામાહુણ કહીએ, નિર્યામક સઠ-
વાહ ॥ઉપમા એહવી જેહને ઠાજે, તે જિન નમીએ
ઉત્સાહ રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૪ ॥ આઠ પ્રાતિહારજ
જસ ઠાજે, પાત્રીશ ગુણ યુત વાણી ॥જે પ્રતિવોધ કરે
જગજનને, તે જિન નમીએ પ્રાણી રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૫ ॥

॥ ઢાલ ॥

॥ અરિહંતપદ ધ્યાતો થકો, દબહ ગુણ પઙ્કાય
રે ॥જેદ ઠેદ કરી આતમા, અરિહતરૂપી થાય રે
॥ ૧ ॥ વીર જિનેસર ઉપદિશે, સાજલજો ચિત્ત લાઇ
રે ॥ આતમધ્યાને આતમા, ઝઙ્ઙિ મલે સધિ આરે ॥
॥ વી૦ ॥ ૨ ॥ ઇતિ પ્રથમ અરિહતપદપૂજા સમાપ્તા ॥૧॥

॥ અથ દ્વિતીય સિદ્ધપદપૂજા પ્રારંભઃ ॥

॥ કાવ્ય ॥ ઇન્દ્રવજ્રાવૃત્તમ્ ॥

॥ સિદ્ધાણમાણસુરમાલયાણ ॥

॥ નમો નમોઽણતચતુષ્કયાણ ॥ ૧ ॥

॥ શુજગપ્રયાતૃત્તમ્ ॥

॥ કરી આઠ કર્મદાયે પાર પામ્યા, જરા જન્મ
મરણાદિ જય જેણે વામ્યા ॥ નિરાવરણ જે આત્મરૂપે
પ્રસિદ્ધા, થયા પાર પામી સદા સિદ્ધબુદ્ધા ॥ ૧ ॥ ત્રિજા-

गोनदेहावगाहात्मदेशा, रक्षा ज्ञानमय जातवर्णादि-
लेशा ॥ सदानन्द सौरयाश्रिता ज्योतिरूपा, अना-
वाध अपुनर्जवादि स्वरूपा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सकल करममल दाय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो
जी ॥ अव्यावाध प्रभुतामयी, आतम सपत्तिचूपो जी
॥ १ ॥ उलालो ॥ जेह चूप आतम सहज सपत्ति,
शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्व द्रव्य क्षेत्र स्व काल जावे,
गुण अनता आदरी ॥ सुस्वजात्र गुण पर्याय परिणति,
सिद्धसाधन पर जणी ॥ मुनिराज मानसहंस सम-
वरु, नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ समय पणसतर अणफरसी, चरम तिजाग
मिशेष ॥ अगगाहन लही जे गिव पढोता, सिद्ध नमो
ते अशेष रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ६ ॥ पूर्वप्रयोग ने गति-
परिणामे, वधनठेद असग ॥ समय एक ऊर्ध्व गति
जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रग रे ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥
निर्मल सिद्धशिलानी उपरे, जोयण एक लोकत ॥
सादि अनत तिहा स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो
सत रे ॥ ० ॥ ८ ॥ जाणे पण न

(६२)

पुरगुण, प्राकृत तेम गुण जास ॥ उपमा विण नाणी
जव मांहे, ते सिद्ध दीयो उद्धास रे ॥ ज० ॥ सि०
॥ ९ ॥ ज्योतिशु ज्योति मली जस अनुपम, विरसी
सकल उपाधि ॥ आत्मराम रमापति समरो, ते
सिद्ध सहज समाधि रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

॥ रूपातीत स्वजाव जे, केवल दसण नाणी रे ॥ ते
ध्याता निज आत्मा, होये सिद्ध गुणखाणी रे ॥ बी०
॥ ३ ॥ इति द्वितीय सिद्धपदपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ तृतीय आचार्यपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ उद्भवज्जावृत्तम् ॥

॥ सूरीणधुरीयकुग्गहाण ॥

॥ नमो नमो सूरसमप्पहाण ॥

॥ जुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमु सूरिराजा, सदा तत्त्वताजा, जिनेंद्रागमे
प्रौढ साम्राज्यनाजा ॥ पटवर्गवर्गित गुणे शोचमाना,
पचाचारने पालवे सावधाना ॥ १ ॥ जविप्राणीने
देशना देश काले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥
जिके शासनाधारदिग्दतिकल्पा, जगे ते चिर जीवजो
शुद्धजल्पा ॥ २ ॥

॥ दाख ॥ उलालानी देजी ॥

॥ आचारज मुनिपति गणि, गुणवरीजी रामो
जी ॥ चिदानंद रस स्वादना, परनाथे नि रामो
जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ नि काम निर्मल शुद्ध चिद्वन,
साध्य निज निरधारथी ॥ निज दान दर्शन चरण
वीरज, साधना व्यापारथी ॥ नरिजीय गोपक नृत्य-
शोधक, सयल गुणसपत्ति परा ॥ सत्यसमाधि गत-
उपाधि, दुग्धि तपगुण आगरा ॥ ७ ॥

॥ पूजा ॥ दाख ॥ श्रीपावना रामनी ॥

॥ पंच आचार जे सूत्रा पाखे, मार्ग नाराय
साचो ॥ ते आचारज नमीण, तेदणु, प्रेम करीने जाचो
रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥ वर ठरीश गुणे करी सोहे,
युगप्रधान जन मोहे ॥ जग वोहे न रहे सिण कोहे,
सूरि नमु ते जोहे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित्य
अप्रमत्त धर्म उगणसे, नहीं विकथा न कपाय ॥
जेहने ते आचारज नमीण, अमृत्युपथ मल्ल अमाय रे
॥ ज० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दीण मार्ग वाग्या चाय

(९४)

जुननपदारथ प्रकटन पटु ते, आचारज चिरं जीरो
रे ॥ नविका ॥ सि० ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ध्याता आचारज जला, महामत्र शुन ध्यानी
रे ॥ पच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे
॥ वी० ॥ ४ ॥ इति तृतीय आचार्यपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ सुतष्ठविठारणतप्पराण ॥

॥ नमो नमो वायगकुजराण ॥

॥ जुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नहीं सूरि पण सूरिगणने सहाया, नमु वाचका
त्यक्तमदमोहमाया ॥ वली द्वादशागादि सूत्रार्थदाने,
जिके सावधाना निरुद्धाजिमाने ॥ १ ॥ धरे पचने
वर्ग रगित गुणोघा, प्रवादि द्विपोष्ठेदने तुल्य सिंघा ॥
गुणी गच्छसधारणे स्थंजचूता, उपाध्याय ते वढीए
चित्प्रचूता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सतिजुआ मुत्तिजुआ, अल्लव महव जुत्ता जी ॥ सच्च

સોય અકિચણા, તવ સંજમ ગુણરત્તા જી ॥૧॥ ઉલાલો ॥
 જે રમ્યા બ્રહ્મમુગ્ધિ ગુણ, સમિતિ સમિતા શ્રુતધરા ॥
 સ્યાદ્વાદવાદે તત્ત્વવાદક, આત્મ પરવિજ્ઞાનકરા ॥
 જગજીરુ સાધન ધીરશાસન, વહન ધોરી મુનિવરા ॥
 સિદ્ધાંત ત્રાયણ દાન સમરથ, નમો પાઠક પદધરા ॥૨॥

॥ પૂજા ॥ હાલ ॥ શ્રીપાલના રાસની ॥

॥ દ્વાદશ અગ સજ્ઞાય કરે જે, પારગ ધારક
 તાસ ॥ સૂત્ર અર્થ વિસ્તાર રસિક તે, નમો ઉવજ્ઞાય
 ઉદ્ધાસ રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૧૬ ॥ અર્થ સૂત્રને દાન-
 વિજાગે, આચારજ ઉવજ્ઞાય ॥ જન ત્રીજે જે લહે શિવ-
 સપદ, નમીએ તે સુપસાય રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૧૭ ॥
 મૂરખ ગિય નિપાડ જે પ્રજા, પાહાણને પહ્લવ આણે ॥
 તે ઉવજ્ઞાય સકલ જન પૂજિત, સૂત્ર અર્થ સવિ જાણે
 રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૧૮ ॥ રાજકુમર સરિલા ગણ-
 ચિતક, આચારજપદ યોગ ॥ જે ઉવજ્ઞાય સદા તે
 નમતા, નાવે જવજય ગોગ રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૧૯ ॥
 વાવનાચઢનરસ સમ વચણે, અહિત તાપ સવિ
 ટાલે ॥ તે ઉવજ્ઞાય નમીજે જે વલી, જિનશાસન અજુ-
 વાલે રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૦ ॥

(६६)

॥ ढाल ॥

॥ तप सङ्गाये रत सदा, छादश अगनो ध्याता रे ॥
उपाध्याय ते आतमा, जगवधव जगन्नाता रे ॥ वी० ॥ ५ ॥
इति चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ पचम मुनिपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ साहूण ससाहिअ सजमाण ॥

॥ नमो नमो सुखदयादमाण ॥

॥ जुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ करे सेवना सूरि वायग गणिनी, करु वर्णना
तेहनी शी मुणिनी ॥ समेता सदा पच समिति त्रिगुता,
त्रिगुते नहीं कामजोगेपु लिता ॥ १ ॥ बली बाह्य
अन्यतर अथि टाली, होये मुक्तिने योग्य चारित्र
पाली ॥ शुजाष्टाग योगे रमे चित्त वाली, नमु साधुने
तेह निज पाप टाली ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सकल विषय विष वारीने, नि कामी नि सगी
जी ॥ जवदवताप शमावता, आतमसाधन रगी जी
॥ १ ॥ उलालो ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह

(एष)

निर्मम निर्मदा ॥ काउस्सग्गमुद्रा धीर आसन
ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तेज दीपे कर्म जीपे, नैव
ठीपे पर जणी ॥ मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन, वधु
प्रणमु हित जणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ जेम तरुफुले जमरो वेसे, पीमा तस न उपावे ॥
लेड रसने आतम सतोपे, तेम मुनि गोचरी जावे
रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २१ ॥ पच इजियने जे नित्य जीपे,
पट्कायक प्रतिपाल ॥ सयम सत्तर प्रकारे आराधे,
बंडु तेह दयाल रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार
सहस्त शीलागना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥
मुनि महत जयणा युत बंदी, कीजे जनम पवित्र
रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले,
बारसविह तप गूरा ॥ णहवा मुनि नमीए जो प्रगटे,
पूरव पुण्य अकुरा रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २४ ॥ सोना
तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते बाने ॥ सजम
खप करता मुनि नमीए, देश काल अनुमाने रे
॥ ज० ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ... ते ... रह्ये, नवि हरखे नवि

रे ॥ साधु सूधा ते आत्मा, शुं मूढ्ये शु लोचे रे ॥ वी०

॥ ६ ॥ इति पंचम मुनिपदपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ जिणुत्ततत्ते रुद्रलक्षणस्स ॥

॥ नमो नमो निम्नलदंसणस्स ॥

॥ जुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ विपर्यास हठवासनारूप मिथ्या, टले जे अनादि
अष्टे जेम पथ्या ॥ जिनोक्ते होये सहजथी श्रद्धाधानं,
कहीए दर्शनं तेह परम निधान ॥ १ ॥ विना
जेहथी ज्ञान अज्ञानरूप, चरित्र विचित्र जवारण्य-
कूप ॥ प्रकृति सातने उपशमे द्य ते होवे, तिहां
आपरूपे सदा आप जोवे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सम्यग्दर्शन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत स्वरूपो
जी ॥ जसु निरधार स्वभाव ठे, चेतनगुण जे अरूपो
जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे,
सयल परईहा टले ॥ निज शुद्ध सत्ता प्रगट अनुभव,
करुणरुचिता उछले ॥ बहुमान परिणति वस्तुतत्त्वे,

(६६)

अहं तसु कारणपणे ॥ निज साध्यदृष्टे सर्व करणी.
तत्त्वता सपत्ति गणे ॥ १ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्वृत्ता परिणाम ॥
जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ १६ ॥
सि० ॥ १६ ॥ मल उपशम दाय उपशम दायथी, जे हेतु
त्रिनिध अज्ञग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, निश्चि-
हृद रग रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १७ ॥ पंचवार दृष्टि-
लहीजे, दाय उपशमीय असत ॥ एक बार दृष्टि-
ते समकित, दर्शन नमीण असत रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १८ ॥
जे विण नाण प्रमाण न हांवे, चाण्डाल न जे
फलीयो ॥ सुख निर्वाण न जे विण दर्शन, फलीयो
दर्शन वलीयो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १९ ॥
बोले जे अलकरीयु, ज्ञान चाण्डाल न जे
दर्शन ते नित्य प्रणमु, शिष्यपद न जे ॥ ज० ॥
सि० ॥ २० ॥

॥ अथ सप्तमं सम्यग्ज्ञानपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ अन्नाणसमोदृतमोदुरस्स ॥

॥ नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥

॥ जुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ होये जेह्थी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावरण नासे
विचित्रावबोधे ॥ तेणे जाणीए वस्तु पड् डव्य जावा,
न हुये वित्ता (बाद) निजेष्टा स्वजावा ॥ १ ॥ होय
पच मत्यादि सुज्ञानजेदे, गुरुपास्तिथी योग्यता तेह
वेदे ॥ वली ज्ञेय हेय उपादेयरूपे, लहे चित्तमां जेम
ध्वांत प्रदीपे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ जव्य नमो गुणज्ञानने, स्वपर प्रकाशक जावे
जी ॥ परजय धर्म अनंतता, जेदाजेद स्वजावे जी ॥ १ ॥
उलालो ॥ जे मुरय परिणति सकल ज्ञायक, बोध
जावविलछना ॥ मति आदि पच प्रकार निर्मल,
सिद्ध साधन लछना ॥ स्याद्वादसगी तत्त्वरगी, प्रथम
जेदाजेदता ॥ सविकल्प ने अविकल्प वस्तु, सकल
सशय वेदता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ नक्षत्रनक्षत्र न जे विण लहीए, पेय अपेय
विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विण लहीए, ज्ञान ते
सकल आधार रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञान ने
पठी अहिंसा, श्रीसिद्धाते चारयु ॥ ज्ञानने बंदो ज्ञान
म निदो, ज्ञानीए शिवसुख चारयु रे ॥ ज० ॥ सि०
॥ ३२ ॥ सकल क्रियानु मूल ते श्रद्धा, तेहनु मूल जे
कहीए ॥ तेह ज्ञान नित नित बंदीजे, ते विण कहो
केम रहीए रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३३ ॥ पंच ज्ञान माहि
जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ दीपक परे
त्रिभुवन उपकारी, बली जेम रवि शशी मेह रे ॥ ज०
॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिष,
वैमानिक ने सिद्ध ॥ लोकालोक प्रगट सवि जेहथी,
तेह ज्ञाने मुज शुद्ध रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ज्ञानावरणी जे कर्मठे, क्षय उपशम तस थाय
रे ॥ तो हुए एहीज आत्मा, ज्ञान अवोधता जाय
रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति सप्तम सम्यग्ज्ञानपदपूजा
समाप्ता ॥ " "

॥ अथ अष्टम चारित्रपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ आराहिअसंकीअ सकिअस्स ॥

॥ एमो एमो संजमवीरिअस्स ॥

॥ जुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ वली झानफल चरण धरीए सुरंगे, निराशसता
छाररोधप्रसंगे ॥ नवाजोधिसंतारणे यान लुब्ध, धरुं
तेह चारित्र अ प्राप्तमूढ्य ॥ १ ॥ होये जास महिमा
थकी रंक राजा, वली छादशागी जणी होय ताजा ॥
वली पापरूपोपि नि पाप थाय, थड सिद्ध ते कर्मने
पार जाय ॥ २ ॥

॥ हाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ चारित्रगुण वली वली नमो, तत्परमण जसु
मूलो जी ॥ पररमणीयपणु टले, सकल सिद्ध अनुकूलो
जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ प्रतिकूल आश्रवत्याग संयम,
तत्त्वथिरता दममयी ॥ शुचि परम खति मुक्ति दश
पद, पच सवर उपचई ॥ सामायिकादिक जेद धर्म,
यथारयाते पूर्णता ॥ अकपाय अकलुप अमल
उज्ज्वल, कामकश्मलचूर्णता ॥ २ ॥

(૧૦૩)

॥ પૂજા ॥ ઢાલ ॥ શ્રીપાલના રાસની ॥

॥ દેશવિરતિ ને સર્વવિરતિ જે, યહી યતિને
અજિરામ ॥ તે ચારિત્ર જગત્ જયવંતુ, કીજે તાસ
પ્રણામ રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૩૬ ॥ તૃણ પરે જે પદ્મ સુખ
ઠની, ચક્રવર્તી પણ વરીયો ॥ તે ચારિત્ર અદ્ય સુખ-
કારણ, તે મે મન માહે ધરીયો રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૩૭ ॥
હુઆ રાંકપણે જે આદરી, પૂજિત હ્રદ નરિદે ॥ અશ-
રણ શરણ ચરણ તે વહુ, પ્રભુ જ્ઞાન આનંદે રે ॥ જ૦
॥ સિ૦ ॥ ૩૮ ॥ ધાર માસ પર્યાયે જેહને, અનુત્તર
સુખ અતિક્રમી ॥ શુભલ શુભલ અજિજાત્ય તે ઉપરે,
તે ચારિત્રને નમી ॥ રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૩૯ ॥ ચય તે
આઠ કરમનો સંચય, રિત્ત કરે જે તેહ ॥ ચારિત્ર નામ
નિરુત્તે જાણ્યુ, તે વંહુ ગુણગેહ રે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૪૦ ॥

॥ ઢાલ ॥

॥ જાણો ચારિત્ર તે આત્મા, નિજ સ્વજાવમાં રમતો
રે ॥ લેશ્યા શુદ્ધ અલકસ્યો, મોહવને નવિ જમતો
રે ॥ વી૦ ॥ ૯ ॥ હૃત્યષ્ટમ ચારિત્રપદપૂજા સમાપ્તા ॥ ૭ ॥

॥ अथ नवम तपःपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ कम्मदुमोम्मूलणकुजरस्स ॥

॥ नमो नमो तिव्वतवोजरस्स ॥

॥ माळिनीवृत्तम् ॥

॥ इयनवपयसिद्ध, लब्धिविज्ञासमिद्ध ॥ पयनिय-
सुरवग्ग, छ्हींतिरेहासमग्ग ॥ दिसवइसुरसार, खोणि-
पीढावयारं ॥ तिजयविजयचक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥१॥

॥ जुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ त्रिकाक्षिकपणे कर्म कपाय टाळे, निकाचित-
पणे बांधीया तेह् वाळे ॥ कष्टु तेह् तप वाह्य अतर
दु जेदे, क्षमा युक्त निहेंतु दुर्ध्यान ठेदे ॥ १ ॥ होये
जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि, अवाठकपणे कर्म
आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह् तप जे महानद हेते, होय
सिद्धि सीमातनी जिम सकेते ॥ २ ॥ इत्या नव पद
ध्यानने जेह् ध्यावे, सदानद चिद्रूपता तेह् पावे ॥
वली ज्ञानविमत्वादि गुणरत्नधामा, नमु ते सदा
सिद्धचक्रप्रधाना ॥ ३ ॥

(१०५)

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

॥ इम नव पद ध्यावे, परम आनंद पावे ॥ नवमे
नव शिव जावे, देव नरनव पावे ॥ ज्ञानविमल गुण
गावे, सिद्धचक्रप्रजावे ॥ सर्व दुःखित समावे, विश्व
जयकार पावे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ इष्टारोधन तप नमो, बाह्य अज्यतर जेदे जी ॥
आत्मसत्ता एकता, परपरिणति उछेदे जी ॥ १ ॥
उलालो ॥ उछेदे कर्म अनादि सतति, जेह सिद्धपणु
वरे ॥ योगसगे आहार टाली, जाव अक्रियता करे ॥
अंतरमुहूरत तत्त्व साधे, सर्व सवरता करी ॥ निज
आत्मसत्ता प्रगट जावे, करो तप गुण आदरी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ एम नव पद गुणमगल, चउ निक्षेप प्रमाणे
जी ॥ सात नये जे आदरे, सम्यग्ज्ञानने जाणे जी
॥ ३ ॥ उलालो ॥ निर्झरसेती गुणी गुणनो, करे जे
बहुमान ए ॥ तसु करण ईहा तत्त्वरमणे, थाय निर्मल
ध्यान ए ॥ एम शुद्धसत्ता जळ्यो चेतन, सकल सिद्धि
अनुसरे ॥ अहय अनत महत चिद्घन, परम
आनंदता वरे ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्धिचक्र पदा-
वली ॥ सवि लक्षि विद्या सिद्धिमंदर, जविक पूजो मन
रुली ॥ उवजायवर श्रीराजसागर, ज्ञानधर्म सुराजता
॥ गुरु दीपचंद सुचरण सेवक, देवचंद सुशोजता ॥ १ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जव मुक्ति जिणंठ
॥ जेहू आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरुकद रे ॥
ज० ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण क्षय
जाये, क्षमा सहित जे करता ॥ ते तप नमीण जेहू
दीपावे, जिनशासन उजमंता रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४२ ॥
आमोसही पमुहा बहु लक्षि, होवे जास प्रजावे ॥
अष्ट महा सिद्धि नव निधि प्रगटे, नमीण ते तप जावे
रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४३ ॥ फल शिवसुख महोदुसुर
नर वर, संपत्ति जेहनु फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखुं
वंडु, शम मकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४४ ॥
सर्व मंगल मांहि पहेलुं मंगल, वरणवीए जे ग्रये ॥ ते
तपपद त्रिहु काल नमीजे, वर सहाय शिवपये रे
॥ ज० ॥ सि० ॥ ४५ ॥ एम नव पद शुणतो तिहां

(१०७)

दीनो,हुं तन्मय श्रीपाल॥सुजश विलास ठे चोथे
खडे,एह अग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ इयारोधे संवरी, परिणतिसमतायोगे रे ॥ तप
ते एहीज आतमा, वत्तें निज गुण जोगे रे ॥ वी०
॥ १० ॥ आगम नोआगम तणो, जाव ते जाणो साचो
रे ॥ आतमजावे थिर होजो, परजावे मत राचो रे
॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घट माहे
ऊर्द्धि दाखी रे ॥ तेम नव पद ऊर्द्धि जाणजो, आतम-
राम ठे साखी रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असख्य ठे जिन
कह्या, नव पद मुरय ते जाणो रे ॥ एह तणे अवलवने,
आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ढाल धारमी
एहवी, चोथे खडे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जश तणी,
कोड नये न अधूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ इति नवम
तप पदपूजा समाप्ता ॥ ए ॥

॥ अथ काव्य ॥ दुतविलंबितवृत्तम् ॥

॥ विमलकेवलजासनजास्कर, जगति जलुमहोदय-
कारण ॥ जिनवरं बहुमानजलौघन, शुचिमना

स्रपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ इति काव्यम् ॥ आ काव्य
प्रत्येक पूजा दीठ कहेवु ॥

॥ स्नात्र करता जगद्गुरु शरीरे, सकल देव त्रिमल
कलश नीरे ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते
विबुध त्रये प्रसिद्धा ॥ २ ॥ हृपे धरी अप्तरावृंद आवे,
स्नात्र करी एम आशीप जावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि
जवूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीमद्यशोविजयजीकृता
नमपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनां स्तवनो ॥

॥ अथ प्रथम स्तवनम् ॥

॥ तमे पीतांबर पहैया जी, मुखने मरकलडे ॥

॥ ए देशी ॥

॥ श्री सिद्धचक्रने वंदो जी, मनोहर मनगमता ॥
जे अविचल सुखनो कढो जी ॥ मनो० ॥ मास
आसोण मधुरे सोहावे जी ॥ मनो० ॥ जवि आदरो तमे
जले जावे जी ॥ मनो० ॥ १ ॥ नय आगिल तप कीजे
जी ॥ मनो० ॥ तो अविचल सुखना लीजे जी ॥ मनो० ॥
सुदि सातमयी तमे मांगो जी ॥ मनो० ॥ घरना आ-
रज सविठामो जी ॥ मनो० ॥ २ ॥ पहिले पदे अरिहत
सेवो जी ॥ मनो० ॥ आपे मुक्तिनो मेरो जी ॥ मनो० ॥
वीजे पदे सिद्ध सोहावे जी ॥ मनो० ॥ मन शुद्धे पूजो
जले जावे जी ॥ मनो० ॥ ३ ॥ आचार्य श्रीने पदे
नमो जी ॥ मनो० ॥ तमे क्रोध कषायने दमो जी ॥
मनो० ॥ उरझाय ते चोथा वढो जी ॥ मनो० ॥ साधु
पाचमे देखी आणढो जी ॥ मनो० ॥ ४ ॥ ठठे टरिसन
पद जाणो जी ॥ मनो० ॥ श्री ज्ञानने मानमे व
जी ॥ मनो० ॥ चारित्रपद आत्मसे सोहे जी

वली नवमे तप मन मोहे जी ॥ मनो० ॥ ५ ॥ रसत्यागे
 आंखिल कीजे जी ॥ मनो० ॥ तो मुक्ति तणां फल
 लीजे जी ॥ मनो० ॥ सवत्सर युग पट्ट मासे जी ॥
 मनो० ॥ तप कीजे मनने उद्धासे जी ॥ मनो० ॥ ६ ॥
 ए तो मयणा ने श्रीपाल जी ॥ मनो० ॥ तप कीधु थइ
 उजमाल जी ॥ मनो० ॥ तेनो कोढ शरीरनो टाढ्यो
 जी ॥ मनो० ॥ जगमा जस वास प्रगटायो जी ॥
 मनो० ॥ ७ ॥ पचम काले लुमे जाणो जी ॥ मनो० ॥
 परगट परतो परमाणो जी ॥ मनो० ॥ एनु गणणु तेर
 हजार जी ॥ मनो० ॥ तमे धारो हृदय मजार जी
 ॥ मनो० ॥ ८ ॥ नर नारी ए पद ध्यावे जी ॥ मनो० ॥
 ते तो सपद् सघली पावे जी ॥ मनो० ॥ मुनि रत्नसुंदर
 सुपसाय जी ॥ मनो० ॥ सेवक मोहन गुण गाय जी ॥
 मनोहर मनगमता ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवनम् ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ नव पद महिमा सार, साजलजो नर नार ॥
 ॥ आठे लाल ॥ हेज धरी आराधीए जी ॥ तो पामो
 जवपार, पुत्र कलत्र परिवार ॥ आ० ॥ नव पद मंत्र

आराधीए जी ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ आसो मास
 विचार, नव आंवल निरधार ॥ आ० ॥ विधिशुं जिन-
 वर पूजीए जी ॥ अरिहंत सिद्धपद सार, गणु जी
 तेर हजार ॥ आ० ॥ नव पदनु इम कीजीए जी ॥ २ ॥
 मयणसुदरी श्रीपाल, आराध्यो तत्काल ॥ आ० ॥
 फलदायक तेहने थयो जी ॥ कचनवरणी काय, देही
 तेहनी थाय ॥ आ० ॥ श्री सिद्धचक्र महिमा कह्यो
 जी ॥ ३ ॥ सांजली सहु नर नार, आरायो नवकार
 ॥ आ० ॥ हेज धरी हियडे घणु जी ॥ चैत्र मासे बली
 एह, नव पदशु धरो नेह ॥ आ० ॥ पूजो ये शिवसुर
 घणु जी ॥ ४ ॥ इणी परे गौतमस्वाम, नय निधि जेहने
 नाम ॥ आ० ॥ नव पद महिमा वराणीयो जी ॥ उत्तम-
 सागर शिष्य, प्रणमे ते निगदिस ॥ आ० ॥ नव पद
 महिमा जाणीयो जी ॥ ५ ॥ इति द्वितीय स्तवनम् ॥

॥ अथ तृतीय स्तवनम् ॥

॥ सीता तो रूपे रुमी ॥ ए देशी ॥

॥ श्री वीर जिणद वराण्यो, तिहा गौतम गणधर
 जाण्यो हो ॥ जविका नव पद ध्याइए ॥ श्री श्रीपाल

नरेशो, मयणाए गुरुउपदेशो हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ १ ॥
 श्री सिद्धचक्र आराध्यो, तो सयल पदारथ साध्यो हो
 ॥ ज० ॥ नव० ॥ आसो मासे कीजे, सुटि सातमे
 जिन पूजीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ २ ॥ अष्ट कमलदल
 थापी, महिमा जस त्रिभुवन व्यापी हो ॥ ज० ॥ नव०
 ॥ मध्य दले जिन ध्याने, ध्यावो जवि धवल वाने हो
 ॥ ज० ॥ नव० ॥ ३ ॥ पूरव दिशे सिद्ध ठाजे, राते तनु
 तेज विराजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ आचारजपद ग्रीजे,
 जिम सोवनवान करीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ४ ॥
 पश्चिम दिश उगजाया, नीले तनुवान सोहाया हो
 ॥ ज० ॥ नव० ॥ साधु सकल घन वाने, उत्तर दिशि
 ध्यावो ध्याने हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ५ ॥ नाण अग्नि कोणे
 ध्यावो, जिम अत्यंत सुख तुमे पावो हो ॥ ज० ॥ नव० ॥
 दक्षिण आराहो प्राणी, नैर्ऋत त्रिदिशे मन आणी हो
 ॥ ज० ॥ नव० ॥ ६ ॥ वायव्य कोणे कहीजे, चारित्र
 ध्यायी सुख लीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ईशाने तप ध्यावो,
 उज्जाल समकित सुख पावो हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ७ ॥
 आसो चैत्रज मासे, जपता रुद्रि आवे पासे हो
 ॥ ज० ॥ नव० ॥ विधिगु देव वदीजे, श्री जिनवर
 पूजा रचीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ८ ॥ नव पद जाप

जपीजे, आंखिख तप नव दिन कीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥
 श्री सिद्धचक्र सेवीजे, पचामृत न्हवण करीजे हो
 ॥ ज० ॥ नव० ॥ ए॥ चौद पूरवनो सार, ए मंत्र वमो
 नवकार हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ बुध उत्तमसागर राया,
 शिष्य कान्तिसागर सुख पाया हो ॥ जविका नव
 पद ध्याइए ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ स्तवनम् ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥

॥ सेवो रे जवि जावे नवकार, जपे श्री गौतम
 गणधार ॥ जवि सांजखो ॥ हारे संपद् थाय ॥ ज० ॥
 हारे सकट जाय ॥ ज० ॥ आसो ने चैत्रे हरप अपार,
 आणी गणणु कीजे तेर हजार ॥ ज० ॥ १ ॥ चार
 वरप ने बली पट्ट मास, ध्यान धरो जावे धरी विश्वास
 ॥ ज० ॥ ध्यायो रे मयणसुदरी श्रीपाल, तेहनो रोग
 गयो तत्काल ॥ ज० ॥ २ ॥ अष्ट कमलदल पूजा
 रसाल, करी न्हवण ठांदु तत्काल ॥ ज० ॥ सातसें
 महीपति तेहने रे ध्यान, देही पामी कचनवान
 ॥ ज० ॥ ३ ॥ महिमा कहेता एनो नावे पार, समरो
 तिणे कारण नवकार ॥ ज० ॥ छह जव परजव ये

सुरदास, बहु पामे लछी लीलविलास ॥ ज० ॥ ४ ॥
 जाणी रे प्राणी लाज अनंत, सेवो सुरदायक ए मंत
 ॥ ज० ॥ उत्तमसागर पंकित शिष्य, सेवे कान्तिसागर
 निशदिस ॥ जवि सांजलो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पचम स्तवनम् ॥

॥ जविया श्री सिद्धचक्र आराधो, तुमे मुक्ति-
 मारगने साधो, इह नरजव दुर्लज लाधो हो लाल ॥
 नव पद जापजपीजे ॥ १ ॥ त्रण टंक देव वांदीजे, त्रिहुं
 काले जिन पूजीजे, आविल तप नव दिन कीजे
 हो लाल-॥ न० ॥ २ ॥ सुदि आसो चैत्रज मासे, तप
 सातमथी अज्यासे, पद सेव्या पातक नासे हो लाल
 ॥ न० ॥ ३ ॥ मयणा ने नृप श्रीपाले, आराध्यो मंत्र
 उजमाले, एह दु ख दोहगने टाले हो लाल ॥ न०
 ॥ ४ ॥ एहनी जे सेवा सारे, तस मयगल गाजे वारे,
 इति जीति अनीति निवारे हो लाल ॥ न० ॥ ५ ॥
 मिथ्यात्व विकार अनिष्ट, क्षय जाये दोषी दुष्ट, एणे
 सेव्या समकित पुष्ट हो लाल ॥ न० ॥ ६ ॥ जशवत
 जिनेंद्र सुसाखे, जवि सिद्धचक्रना गुण जाखे, ते ज्ञान-
 विनोद रस चाखे हो लाल ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ षष्ठ स्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जगबालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए, शिवसुख फल सह-
 कार लाल रे ॥ ज्ञानादिक त्रण रत्ननु, तेज चढावण-
 हार लाल रे ॥ श्री सि० ॥ १ ॥ गौतमे पूठंता
 कह्यो, वीर जिणद, विचार लाल रे ॥ नव पद मंत्र
 आराधता, फल लहे नविक अपार लाल रे ॥ श्री सि०
 ॥ २ ॥ धर्मरथना चार चक्र ठे, उपशम ने सुविवेक
 लाल रे ॥ सवर श्रीजु जाणीए, चोथु सिद्धचक्र ठेक
 लाल रे ॥ श्री सि० ॥ ३ ॥ चक्री चक्र रयणबले, साधे
 सयल ठ रम लाल रे ॥ तिम सिद्धचक्रप्रज्ञावशी, तेज
 प्रताप असम लाल रे ॥ श्री सि० ॥ ४ ॥ मयणा ने
 श्रीपालजी, जपतांवहु फल लीध लाल रे ॥ गुण जशयत
 जिनेंजनो, ज्ञानविनोद प्रसिद्ध लाल रे ॥ श्री सि० ॥ ५ ॥

॥ अथ सप्तम स्तवनम् ॥

॥ चिंतामणि स्वामी सच्चा साहेव मेरा ॥ ए देशी ॥

॥ आराहो प्राणी साची नव पद सेवा ॥ ए
 आकणी ॥ नव निधि आपे नव पद सेवे, इम जारो श्री

जिनदेवा ॥ आ० ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र धरो नित्य
दिलमे, जैसे गजमन रेवा ॥ आ० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक
एक पद जपतां, हारे लहीए सुख सदैवा ॥ आ०
॥ ३ ॥ समुदित जपतां किम करी न करे, सुरसुख
द्रुमफल लेवा ॥ आ० ॥ ४ ॥ जिनेंद्र कहे इम ज्ञान-
विनोदे, हर्षित द्यो नित मेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टम स्तवनम् ॥

॥ राग सारंग ॥

॥ गौतम पूठत श्री जिन जाखत, वचन सुधारस
पानकी ॥ ब्रह्मिहारी नव पद ध्यानकी ॥ १ ॥ नव पद
सेवे नवमे स्वर्गे, पावत रुद्धि विमानकी ॥ व० ॥ २ ॥
याकी महिमा बल्लज हमकुं, जेसे जसोदा कानकी
॥ व० ॥ ३ ॥ पावे रूप सरूप मदनसो, देही कंचन
वानकी ॥ व० ॥ ४ ॥ याको ध्यान हृदय जब आवत,
उपजत लहेरी ज्ञानकी ॥ व० ॥ ५ ॥ समकित ज्योति
होवे दिल जीतर, जेसे लोकनमें ज्ञानकी ॥ व०
॥ ६ ॥ जिनेंद्र ज्ञानविनोद प्रसगे, जक्ति करो जग-
वानकी ॥ ब्रह्मिहारी नव पद ध्यानकी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नवम स्तवनम् ॥

॥ पूज्य पधारो मरु देशे ॥ ए देशी ॥

॥ नव पद महिमा साजखो, वीर जाखे हो सुणो
 पर्यदा वार के ॥ ए सरिखो जग को कहीं, आराध्यो
 हो शिवपद दातार के ॥ न० ॥ १ ॥ नव उंली आनिल
 तणी, जवि करीए हो मनने उल्लास के ॥ जूमिशयन
 ब्रह्मव्रत धरो, नित सुणीए हो श्रीपालनो रास के
 ॥ न० ॥ २ ॥ नव विधिपूर्वक तप करी, उजमणुं हो
 कीजे निस्तार के ॥ साहामी सामिणी पोपीए, जेम
 खहीए हो जवनो निस्तार के ॥ न० ॥ ३ ॥ नरसुख सुर-
 सुख पामीए, बली पामे हो जवजव जिनधर्म के ॥
 अनुक्रमे शिवपद पण छहे, जिहा मोटां हो अक्षय
 सुख शर्म के ॥ न० ॥ ४ ॥ साजखी जणियण दिल धरो,
 सुखदायी हो नव पद अधिकार के ॥ यचननिनोद
 जिनेंऊनो, भुज होजो हो जवजव आधार के ॥
 नव पद महिमा साजखो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ आठे छालनी देशी ॥

॥ समरी-धारदा माय, प्रणमी निज गुरु-पाय

॥ आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्ध-
चक्र आधार, जवि उत्तरे जवपार ॥ आ० ॥ ते जणी
नव पद ध्यायशु जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह, जस गुण
अनंत अछेह ॥ आ० ॥ समर्या सकट उपशमे जी ॥
लहीए ब्रित्त जोग, पामी सवि सजोग ॥ आ० ॥
सुर नर आवी बहु नमे जी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोग
रहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणा सुदरी श्रीपालने जी ॥
ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा छूरे जाय ॥ आ० ॥ आपे
मंगलमालने जी ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे
ते सुखीज होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी
जी ॥ नव आविल तप सार, पक्कमणु दोय वार
॥ आ० ॥ देववंदन त्रण टकना जी ॥ ४ ॥ देव पूजो
त्रण वार, गणणु ते दोय हजार ॥ आ० ॥ ज्ञान करी
निर्मल जखे जी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सांनिध्य करे तेनी
शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगे जणे जी ॥ ५ ॥
ए सेवो निशिदिश, कहीए वीशवावीश ॥ आ० ॥
आल जजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणि रत्न,
एहना कीजे जल ॥ आ० ॥ मत्र नहीं एह उपरे जी
॥ ६ ॥ श्री विमलेसर जहा, होजो मुज परतहा
॥ आ० ॥ हु किकर हु ताहरो जी ॥ पाम्यो तुहीज

देव, निरंतर करु हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस बल्यो हवे
 माहरो जी ॥ ७ ॥ विनति करु तु एह, धरजो मुजशुं
 नेह ॥ आ० ॥ तमने शु कहीए बली बली जी ॥ श्री
 लब्धिविजय गुरुराय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥
 अमर नमे तुज लली लली जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

॥ अक्सर पामीनेरे, कीजे नव आंखिलनी ठंली ॥
 ठंली करता आपद् जाये, रुझि सिझि लहीए बहुली
 ॥ अ० ॥ १ ॥ आसो ने चेत्रे आदरशु, सातमयी
 सजाली रे ॥ आलस महेली आखिल करशे, तस घर
 नित्य दीवाली ॥ अ० ॥ २ ॥ पूनमने दिन पूरी याते,
 प्रेमेशु पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप
 जपे जपमाली ॥ अ० ॥ ३ ॥ देहरे जडने देव जुहारो,
 आदीश्वर अरिहत रे ॥ चोवीशे चाहीने पूजो, जावेगुं
 जगवंत ॥ अ० ॥ ४ ॥ वे टके पफिफ्माणु बोद्ध्यु,
 देववदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी परे समजी,
 चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकित पामी
 अतरजामी, आराधो एकात रे ॥ स्याद्वादपथे सच-
 रता, आवे जवनो अत ॥ अ० ॥ ६ ॥ सत्तर चोराणुं

सुदि चैत्रीए, वारशे बनावी रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख
संपत्ति, चालीने घेर आवी ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन
वाचक उपदेशे, जे नर नारी चाले रे ॥ जवनी जावठ
ते जाजीने, मुक्तिपुरीमां महाले ॥ अ० ॥ ८ ॥ शत ॥

॥ अथ आंविज तप आश्रयी श्री

सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ जीहो कुंवर वेठा गोखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमु दिन प्रत्ये जिनपति ॥ लाळा ॥
शिव सुखकारी अशेष ॥ जीहो आसोइ चैत्री तणी
॥ लाळा ॥ अछाइ विशेष ॥ जविकजन ॥ जिनवर
जंग जयकार ॥ १ ॥ जीहो जिहा नव पद आधार
॥ ज० ॥ ए आकणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधना
॥ लाळा ॥ नदीश्वर सुर जाय ॥ जीहो जीवाजिगम
मांहे कहुं ॥ ला० ॥ करेअरु दिन महिमाय ॥ ज०
॥ २ ॥ जीहो नव पद केरा यत्रनी ॥ ला० ॥ पूजा
कीजे रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ ला० ॥
नासे पापनो व्याप ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीहो अरिहत
सिद्ध आचारज ॥ ला० ॥ उवजाय साधु ए पच ॥ जीहो
दंसणनाण चारित्र तनो ॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपच

(१२१)

॥ ज० ॥ ४ ॥ जीहो ए नव पद आराधतां ॥ ला० ॥
चपापति विख्यात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखीउं थयो
॥ ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ कोडलो पर्वत धूधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालव धुर उज्जैणीए रे लो, राज्य करे प्रजापाल
रे ॥ सुगुणी नर ॥ सुरसुदरी मयणासुदरी रे लो, बे
पुत्री तस घाल रे ॥ सु० ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए रे
लो ॥ १ ॥ जेम होय सुरजनी माल रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ए
आकणी ॥ पहेली मिथ्याश्रुत जणी रे लो, बीजी जिन-
सिद्धांत रे ॥ सु० ॥ बुद्धिपरीक्षा थवसरे रे लो, पूठी
समस्या तुरत रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ २ ॥ तूठो नृप वर
आपवा रे लो, पहेली करे ते प्रमाण रे ॥ सु० ॥ बीजी
कर्म प्रमाणथी रे लो, कोप्यो ते तव नृपजाण रे ॥ सु०
॥ श्री० ॥ ३ ॥ कुष्टी वर परणावीयो रे लो, मयणा वरे
धरीनेह रे ॥ सु० ॥ रामा हजीय विचारीए रे लो,
सुदरी विणसे तुज देह रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सिद्धचक्र-
प्रज्ञानथी रे लो, नीरोगी थयो जेह रे ॥ सु० ॥ पुण्य-
पसाये कमला लही रे लो, बाध्यो घणो ससनेह रे
॥ सु० ॥ ५ ॥ माजले वात ते जन लही

वांदवा आव्यो गुरु पास रे ॥ सु० ॥ निज घर तेनी
 आवीयो रे लो, आपे निज आवास रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ६ ॥
 श्रीपाल कहे कामिनी सुणो रे लो, हुं जाउ परदेश रे
 ॥ सु० ॥ माल मता बहु लावगु रे लो, पूरगु तुम तणी
 खांत रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ अवधि करी एक वर-
 पनी रे लो, चाल्यो नृप परदेश रे ॥ सु० ॥ शैव धवल
 साथे चाल्यो रे लो, जलपथे सुविशेष रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ८ ॥
 ॥ ढाल व्रीजी ॥

॥ झर आंवा आंवली रे ॥ ए देशी ॥

॥ परणी वव्वरपति सुता रे, धवल मूकाव्यो ज्यांह
 ॥ जिनहर वार उधारुते रे, कनककेतु वीजी त्यांह
 ॥ १ ॥ चतुर नर, श्री श्रीपाल चरित्र ॥ ए आंकणी ॥
 परणी वस्तुपालनी रे, समुद्रतटे आवंत ॥ मकरकेतु
 नृपनी सुता रे, वीणावादे रीजत ॥ च० ॥ २ ॥ पांचमी
 त्रैलोक्यसुदरी रे, परणी कुब्जारूप ॥ ठणी समस्या
 पूरती रे, पच सखीशुं अनुप ॥ च० ॥ ३ ॥ राधा वेधी
 सातमी रे, आठमी विष उतार ॥ परणी आव्यो निज
 घरे रे, साथे बहु परिवार ॥ च० ॥ ४ ॥ प्रजापाले
 साजली रे, परदल केरी वात ॥ खधे कुहामो लेइ करी रे,
 मयणा हुइ मियात ॥ च० ॥ ५ ॥ चपा राज्य लेइ

(१२३)

करी रे, जोगवी कामित जोग ॥ धर्म आराधी अक्व-
तयो रे, पढोतो नवमे सुरलोग ॥ चतुर नर ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ एम सहिमा सिद्धचक्रनो, सुणी आराधे सुवि-
वेक ॥ मोरे लाल ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए ॥ १ ॥ ए
आकणी ॥ अमदल कमलनी थापना, मध्ये अरिहत
उदार ॥ मो० ॥ चिहु दिगे सिद्धादिक चढ, वक्र दिशे
हु गुणधार ॥ मो० ॥ श्री० ॥ २ ॥ वे पम्किमणां
जत्रनी, पूजा देववदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे दिन
सविशेषयी, पंचामृत कीजे पराल ॥ मो० ॥ श्री० ॥ ३ ॥
जूमिशयन ब्रह्मविध धारणा, रुधी राखो त्रण जोग
॥ मो० ॥ गुरु वेय्यावच्च कीजीए, धरो सहहणा जोग
॥ मो० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ गुरु पम्किलाजी पारीए, साहम्मि-
वछल पण होय ॥ मो० ॥ उजमणा पण नव नवां,
फल धान्य रयणादिक होय ॥ मो० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इह
जत्र सविसुखसपदा, परजवे सविसुख थाय ॥ मो० ॥
पम्कित शान्तिविजय तणो, कहे मानविजय उजजाय
॥ मोरे लाल ॥ इति ॥

॥ नव पदजीनुं स्तवन ॥

॥ नव पद ध्यान सदा जयकारी ॥ ए आंकणी ॥
 अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप
 उदारी ॥ नव पद ॥ १ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र्य हे
 उत्तम, तप दोय जेदे हृदय विचारी ॥ नव ॥ २ ॥
 मंत्र जमी जंतर तंत्र घणोरा, उन सबकुं हम दूर विसारी
 ॥ नव ॥ ३ ॥ चोत जीव जवजलसे तारे, गुण गावत
 हे बहु नर नारी ॥ नव ॥ ४ ॥ श्री जिन जक्त मोहन
 मुनि बंदन, दिन दिन चरुते हरख अपारी ॥ नव ॥ ५ ॥

॥ श्री नव पदजीनुं स्तवन ॥

॥ नव पद धरजो ध्यान, जवि तुमे नव पद धरजो
 ध्यान ॥ ए नव पदनु ध्यान करता, पामे जीव विस-
 राम ॥ जवि ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक,
 साधु सकल गुणवान ॥ जवि ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान
 चारित्र्य ए उत्तम, तप तपो करी बहुमान ॥ जवि ॥
 ३ ॥ आसो चैत्रनी सुद सातमथी, पूनम लगे पर-
 मान ॥ जवि ॥ ४ ॥ एम एकाशी आविल कीजे,
 वरप सामाचारनु मान ॥ जवि ॥ ५ ॥ पम्किमणां
 दोय टकना कीजे, पम्किलेहण वेवार ॥ जवि ॥ ६ ॥

((१५५))

देवचंदन त्रण टंकना कीजे, देव पूजो त्रिकाल ॥
 जवि० ॥ ३ ॥ चार आठ ठत्रीश पचवीशनो, सत्यावीश
 सरसठ सार ॥ जवि० ॥ ४ ॥ एकावन सित्तेर पचा-
 सनो, काजस्सग करो सावधान ॥ जवि० ॥ ५ ॥ एक
 एक पदनु गणणु, गणीए दोय हजार ॥ जवि० ॥ १० ॥
 एनी विधेज ए तप आराधे, ते पामे जवपार ॥ जवि०
 ॥ ११ ॥ कर जोमी सेवक गुण गावे, मोहन गुण मणि
 माल ॥ जवि० ॥ १२ ॥ तास शिष्य मुनि हेम कहे
 ठे, जन्म मरण डु रा वार ॥ जवि० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ आविलनी उंलीना स्तवनो ॥

॥ तत्र प्रथम स्तवनम् ॥

॥ केशर वरणो हो, के काढ कसुगो माहारा
 लाल ॥ ए देशी ॥

॥ गोयम नाणी हो, के कहे सुणो प्राणी माहारा
 लाल ॥ जिनवर वाणी हो, के हियडे आणी मा० ॥
 आसो मासे हो, के गुरुने पासे मा० ॥ नव पद ध्याशे
 हो, के अग उल्लासे मा० ॥ १ ॥ आंचिल कीजे हो, के
 जिन पूजीजे मा० ॥ जाप जपीजे हो, के देव वादीजे
 मा० ॥ जावना जावो हो, के सिद्धचक्र ध्यावो मा० ॥

जिनगुण गावो हो, के शिवसुख पावो मा० ॥ २ ॥ श्री
 श्रीपाले हो, के मयणा वाले मा० ॥ ध्यान रसाले हो,
 के रोगज टाले मा० ॥ सिद्धचक्र ध्यायो हो, के रोग
 गमायो मा० ॥ मंत्र आराध्यो हो, के नव पद पायो मा०
 ॥ ३ ॥ जामनी जोली हो, के पहेरी पटोली मा० ॥
 सहीयर टोली हो, के कुकुम घोली मा० ॥ थाल
 कचोली हो, के जिनवर खोली मा० ॥ पूजी प्रणमी हो,
 के कीजे उली मा० ॥ ४ ॥ चेत्रे आसो हो, के मनने
 उल्लासे मा० ॥ नव पद ध्याशे हो, के शिवसुख पासे
 मा० ॥ उत्तमसागर हो, के पकित राया मा० ॥ सेवक
 काते हो, के बहु सुख पाया मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ नव पद स्तवन ॥

॥ सिद्धचक्र वर सेवा कीजे, नरत्नव लाहो लीजे-
 जी ॥ विविपूर्वक आराधन करता, जवजव पात्तिक
 ठीजे ॥ १ ॥ जवियण जजीएजी ॥ अवर अनादिनी
 चाल, नित्य नित्य त्यजीएजी ॥ ए आकणी ॥ देवनी
 देव दयाकर ठाकर, चाकर सुर नर इडाजी ॥ त्रिगडे
 त्रिजुवन नायकवेठा, प्रणमो श्री जिनचदा ॥ न०
 ॥ २ ॥ अ० ॥ अज अविनाशी अकल अजरामर,

केवल दंसणनाणीजी ॥ अन्वावाध अनतु वीरज, सिद्ध
 प्रणमो जत्रिप्राणी ॥ ज० ॥ ३ ॥ अ० ॥ विद्या
 सौभाग्य लक्ष्मी पीठ, मत्र जोगराज पीठजी ॥ सुमेरुपीठ
 पंच प्रस्थाने, नमो आचारज ऽष्ट ॥ ज० ॥ ४ ॥ अ० ॥
 अग उपाग नदी अनुयोगा, ठ ठेठ ने मूल, चारजी ॥
 दश पयन्ना एम पणयालीस, पाठक तेहना धार
 ॥ ज० ॥ ५ ॥ अ० ॥ वेद त्रणने हास्यादिक पद,
 मिथ्यात्व चार कपायजी ॥ चौद अन्यतर नवविध
 बाह्यनी, प्रथि त्यजे मुनिराज ॥ ज० ॥ ६ ॥ अ० ॥
 उपशम क्षय उपशम ने क्षायिक, दरशण त्रण प्रका-
 रेजी ॥ श्रद्धा परणति आत्म केरी, नमीए बारवार
 ॥ ज० ॥ ७ ॥ अ० ॥ अठ्यावीश चौद ने खट्ट दुग एक,
 मत्यादिकना जाणजी ॥ एम एकावन जेदे प्रणमो,
 सातमु पद वर नाण ॥ ज० ॥ ८ ॥ अ० ॥ निर्वर्त्ति थप-
 वर्त्ति जेदे, चारित्र ठे व्यवहारेजी ॥ निज शुण थिरता
 चरण ते प्रणमो, निश्चय शुद्ध प्रकार ॥ ज० ॥ ९ ॥ अ० ॥
 बाह्य अन्यतर तप ने सवर, सुमता निर्झरा हेतुजी ॥
 ते तप नमीए जाव धरीने, जवसायरमा सेतु ॥ ज०
 ॥ १० ॥ अ० ॥ ए नव पदमा पण ठे धर्मी, धर्म ते
 वरते चारजी ॥ देव गुरु ने धर्म ते एहमा, दो तीन चार

प्रकार ॥ ज० ॥ ११ ॥ अ० ॥ मारगदेशक अविनाशी-
पणो, आचार विनय सकेतजी ॥ साह्यपणुं धरता
साधुजी, प्रणमो एहीज हेतुजी ॥ ज० ॥ १२ ॥ अ० ॥
विमलेश्वर यक्ष सेवा सारे, उत्तम जे आराधेजी ॥
पद्मविजय हरे ते जविप्राणी, निज आत्म हित
साधे ॥ ज० ॥ १३ ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ नव पद स्तवन ॥

॥ वीर जिणंदनी वाणी, चित्त धरजो अमीय
समाणी ॥ हो जविया ॥ नव पद नित्य नित्य सेवो ॥ १ ॥
अरिहंतपद सुखकारी, बीजे सिद्धनमो हितकारी हो
॥ ज० ॥ न० ॥ २ ॥ आचारज सुविचारी, उवजाय ते
श्रुत उपगारी हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ३ ॥ सत्यावीश गुण
धारी, ऐसे साधुनमो ब्रह्मचारी हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ४ ॥
वंसण नाण नमीजे, बखी चारित्र्य महातप लीजे हो
॥ ज० ॥ न० ॥ ५ ॥ कर्म गहन तप कापे, ए तो मन
बंधित सुख आपे हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ६ ॥ समर्या
सकट जाजे, जसु दिन दिन मंगल ठाजे हो ॥ ज० ॥ न०
॥ ७ ॥ नव पद जे नर ध्यावे, ते तो सुर नर शिवसुख
पावे हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ८ ॥ जक्ति विलासे जे गावे,

(११९)

ते तो सुर नर शिवसुर पावे हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ए ॥

॥ नव पद स्तवन ॥

॥ अहो त्रिविप्राणी रे सेगो, सिद्धचक्र ध्यान समो
नहीं मेगो ॥ अहो ॥ जे कोइ सिद्धचक्रने आगधे,
तेहनो जग माहि जग बाधे ॥ अहो ॥ १ ॥ पहिले
पदे रे अरिहत, बीजे सिद्ध बुरु ध्यान महंत ॥ बीजे
पदे रे सुरीश, चोये उरजाय ने पाचमे मुनीश ॥ अ०
॥ २ ॥ ठठे दरसण रे कीजे, सानमे हान्थी शिवसुर
लीजे ॥ आठमे चारित्र पाखो, नवमे तपथी मुक्ति
जालो ॥ अ० ॥ ३ ॥ आठिल उली रे कीजे, नोकार-
वाली बीश गणीजे ॥ त्रणे टकना रे देवो, पक्षिहण
पक्षिमणु सेगो ॥ अ० ॥ ४ ॥ गुरुसुर किरिया रे
कीजे, देव गुरु नक्ति चित्तमा धरीजे ॥ एम' कहे रामना
रे शिगो, उली उजगीण जगीशो ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ वीर जिनेश्वर अति अलवेसर, गौतमे गुणना
दरीया जी ॥ एक दिन आणा वीरनी लेउने, राजगृही
सचरीया जी ॥ श्रेणिक राजा वंदन आव्या, उलट
मनमा आणी जी ॥ परंपदा आगल चार विराजे, हवे

सुणो जविप्राणी जी ॥ १ ॥ मानवजव तुमे पुण्ये
 पाम्या, श्री सिद्धचक्र आराधोजी ॥ अरिहत सिद्ध
 सूरि उवजाया, साधु देखी गुण वाधेजी ॥ दरशण
 नाण चारित्र तप कीजे, नव पद ध्यान धरीजे जी ॥ धुर
 आसोथी करवां आंबिल, सुख संपदा पामीजे जी ॥ २ ॥
 श्रेणिक राय गौतमने पूठे, स्वामी ए तप केणे कीधो जी
 ॥ नव आचिल तप विधिषु करतां, वठित सुख
 केणे लीधो जी ॥ मधुरी ध्वनि बोल्या श्री गौतम,
 साजलो श्रेणिक राय वयणां जी ॥ रोग गयो ने संपदा
 पाम्या, श्री श्रीपाल ने मयणा जी ॥ ३ ॥ रुमजुम करती
 पाये नेजर, दीसे देवी रूपाली जी ॥ नाम चक्रेसरी ने
 सिद्धाड, आदि जिनवर रखवाली जी ॥ विघन कोरु
 हरे सहु संघना, जे सेवे एना पाय जी ॥ जाणविजय
 कवि सेवक नय कहें, सानिध करजो माय जी ॥ ४ ॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ श्री सिद्धचक्र सेवो सुविचार, आणी हेडे हरस
 अपार, जिम लहो सुख श्रीकार ॥ मन शुद्धे उंली
 तप कीजे, अहोनिश नव पद ध्यान धरीजे, जिनवर
 पूजा कीजे ॥ पम्किमणां दोय टकना कीजे, आठे

शुद्ध देव वादीजे, जमि सथारो कीजे ॥ मृपा तणो
 कीजे परिहार, अगे शीयल धरीजे सार, टीजे दान
 अपार ॥ १ ॥ अरिहत सिद्ध आचार्य नमीजे, वाचक
 सबे साधु वदीजे, दसण नाण सुणीजे ॥ चारित्र तपनु
 ध्यान धरीजे, अहोनिश नव पद गणणु गणीजे, नव
 आविल पण कीजे ॥ निश्चल राखी मन हो निश्च,
 जपीए पद एक एक ईश, नोकारवाली वीश ॥ ठेले
 आविल मोटो तप कीजे, सत्तरजेटी जिनपूजा रचीजे,
 माननजव लाहो लीजे ॥ २ ॥ सातसें कुष्ठीयाना रोग,
 नाठा यत्र नमण सजोग, दूर दुःखा कर्मना जोग ॥ अ-
 दारे कुष्ठ दूरे जाये, दु ख दोहग दूर पलाये, मनवठित
 सुख थाये ॥ निरधनीयाने दे बहु धन्न, अपुत्रीयाने ये
 पुत्ररतन्न, जे सेवे शुद्ध मन्न ॥ नवकार समो नहीं कोड
 मंत्र, सिद्धचक्र समो नहीं कोड जत्र, सेवो जत्रि हरखत
 ॥ ३ ॥ जिम सेव्या मयणा श्रीपाल, उग्र रोग गयो
 सुख रसाव, पाम्या मगलमाल ॥ श्रीपाल तणी पेरे जे
 आराधे, दिन दिन दोलत नस घर वाधे, अति शिवसुख
 सापे ॥ विमलेश्वर यद्द सेवा सारे, आपदा कष्टने दूर
 निगारे, दोलत लक्ष्मी वधारे ॥ मेघविजय करि

यणना शिष्य, आणी हेटे जाव जगदीश, विनय
वंदे निशदिश ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ जिनशासन वंठित, पूरण देव रसाल ॥ जावे
जवि जणीए, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहु काले एहनी,
पूजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमरपद, सुख
पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहत सिद्ध बंदो, आचारज
उवजाय ॥ मुनि दरिसण नाण, चरण तप ए समु-
दाय ॥ ए नव पद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय ॥ ए
व्याने जविना, जव कोटि छु ग जाय ॥ २ ॥ आसो
चैतग्मा, सुदि सातमथी सार ॥ पूनम लगे कीजे, नव
आविल निरधार ॥ दोय सहस गणेंबुं, पद सम
सामाचार ॥ एकागी आंविळ तप, आगमने अनुसार
॥ ३ ॥ सिद्धचक्रनो सेवक, श्री विमलेश्वर देव ॥
श्रीपाल तणी परे, सुर पुरे स्वयमेव ॥ छु ख दोहग
नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्री सुमति सुगुरुनो, राम
कहे नित्यमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रनी स्तुति ॥

॥ अरिहत नमो वली सिद्ध नमो, आचारज

वाचक सादु नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमो तप, ए
 सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥ १ ॥ अरिहंत अनंत थया थागे,
 ब्रह्मी ज्ञान निखेपे गुण गागे ॥ पन्तिकमणा देवचदन
 विधिगु, आबिल तप गणणु गणो त्रिप्रिगु ॥ २ ॥
 उरि पाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परे जव तरगे ॥
 सिद्धचक्रने कुण आवे तोले, एहना जिनआगम गुण
 बोले ॥ ३ ॥ साकाचारे वरपे तप पूरु, ए कर्म पिदा-
 रण तप शूरु ॥ सिद्धचक्रने मनमदिर थापो, तय
 निमलेश्वर वर थापो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पद जंलीनी विधि ॥

॥ प्रथम सगारमा गहेलां उठी प्रतिक्रमण करी
 पन्तिकेहण करबु पठी देव वादी काउस्तग्न करबो.
 जे पद होय तेना आगधनार्थ करेमि काउस्तग्न
 घटणवत्तियाए कही, अन्नठ उतससिएण कहेबु पहिले
 दिवसे धार लोगस्तनो, वीजे दिवसे आठ लोगस्तनो,
 त्रीजे दिवसे उत्रीज लोगस्तनो, चोथे दिवसे पचीज
 लोगस्तनो, पाचमे सत्यावीशनो, षष्ठे सक्तवनो, सातमे
 एकावननो, आठमे सिचेग्नो, नयमे पचासनो, ए प्रमाणे
 काउस्तग्न करवा जेटला लोगस्तना काउस्तग्न होय

तेटलां खमासमणां, तेटला साथिया, तेटलां फल
 जाणवां पठी वासकेपपूजा करी नव देरे नव चैत्य-
 वंदन करवा, अथवा नव प्रतिमा आगल चैत्यवंदन
 नव करवा तेवी जोगवाड न होय तो एक ठेकाणेज
 चैत्यवंदन करवां पठी गुरुपासे जवु, पञ्चरक्षाण करवु,
 श्रीपालचरित्र साजलवु पठी जिनमदिर जड,
 नाड, उज्ज्वल वस्त्र पहेंरी, स्नात्रपूजा जणावी, अष्ट
 प्रकारी पूजा करे पठी वीज नोकारगल्ली जे पद होय
 तेनी गणे पठी जेटला खमासमणा होय तेटली प्रद-
 क्षिणा करे पठी वपोरना देव मांडी, चैत्यवंदन करी,
 पञ्चरक्षाण पारी आविल करे पठी तिविहारनु पञ्च-
 रक्षाण करे पठी चैत्यवंदन करी त्रीजे पहोरे पमिलेह
 णने वसते पमिलेहण करे. पठी सध्याकालना देव
 वाडे पठी जिनमदिरमा जड धूपपूजा, आरती, मगल-
 दीवो विगेरे करे पठी उपासरे गुरुपासे जड प्रतिक्र-
 मण करे सूती वसते पोरिसिनी गाथा जणावी
 निद्रा करे ए प्रथम दिवसनी विवि कही ए प्रमाणे
 नवे दिवसनी विवि जाणवी विशेष ए ठे के ठेके
 दिवसे विशेष जक्ति पूजा प्रमुख करे

॥ चैत्यवदनम् ॥

॥ श्री सिरि सिद्धचक्र नव पय महद्द पढ मिद्ध
 पय मय जिण्णद असुरिद चिय पयपकय नाह तुज
 नमो ॥ १ ॥ सिरि रिसहेसर सासिय फलदाण कप्प-
 तरु कप्पकदप्पगजण जवज्जजण देव तुज नमो ॥ २ ॥
 सिरि नाज्जि नाम कुलगर कुलकमलुद्धास परमहस
 समअसम तम तम तमो जरहरणिकपञ्चव तुज नमो
 ॥ ३ ॥ सिरि मरुदेवासामिणि उदरदरी दरिय केसरि
 किसोर घोर जुयदरु खमिय पयरु मोहस्स तुज नमो
 ॥ ४ ॥ इस्कागुचमज्ज्मण गयडुमण डुरियमयगल
 मइद चदे मम वयण वियसिय नीलुप्पल नयण तुज
 नमो ॥ ५ ॥ कद्धाण कारण सम तत्त कणय कलसस-
 रिस सठाण कठ ठिय कलकुतल नीलुप्पल कासेय तुज
 नमो ॥ ६ ॥ आइसर जोईसर लयगयमणलरक लखिय
 सरुज जवकूव पमिय जतुतारण जिण्णनाह तुज नमो
 ॥ ७ ॥ सिरि सिद्धसेलमणण डुह खरुण खयरराय
 नयपाय सयलमह सिद्धिदाय जिण्णनायग होउ तुज
 नमो ॥ ८ ॥ तुज नमो तुज नमो तुज नमो देव तुज
 चैव नमो ॥ पणयमुररयणसेहर रुद्धरजिय पाय तुज
 नमो ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्यवदनम् ॥

॥ नियतरंगारिगणे सुनाणे, सपानिहेराड सयप्प-
 हाणे ॥ संदेहसंदोहरय हरतो, जाएह निच्चपि जिणे
 रहंतो ॥ १ ॥ डुछठ कम्मावरणप्पमुक्के, अणतनाणाड
 सीरीचउक्के ॥ समग्गलोगग्ग पयछसिद्धे, जाएह
 निच्चपि समग्गसिद्धे ॥ २ ॥ न तं सुहं नहि पीया न
 माया, जे दत्ति जीवान्हिसूरीसपाया ॥ तम्हाहु ते
 चेव सया जजेह, ज मुख सुखाड लहु लहेह ॥ ३ ॥
 सुत्तवसवेगमय सुएण, संनीरखीरामय विसुएण ॥
 पीनंति जे ते उवप्रायराए, जाएह निच्चपि कयप्प-
 साए ॥ खतेय दत्तेय सुगुत्तिगुत्तो, मुत्तेय सते गुण-
 जोगजुत्तो ॥ गयप्पमाए गयमोहमाए, जाएह निच्च
 मुणिरायपाए ॥ ५ ॥ ज दवठ्ठिकायेसु सदहाण, त
 दसण सवगुणप्पहाण ॥ कुग्गहि वाही उवयति जेण,
 जहाविधेण रसायणेण ॥ ६ ॥ नाण पहाण नय-
 चक्कसिद्ध ततवोहीक मय पसिद्ध ॥ धरेह चित्ता-
 वसए फुरत्त, माणिक्कदिउवतमो हरत्त ॥ ७ ॥ सुसवर
 मोहनिरोधसार, पचप्पयार विगमाइयारं ॥ मूलोत्त-
 राणेगुण पवित्त, पाळेह निच्चपि हु सच्चरित्त ॥ ८ ॥

चर्पं तद्वाजितरजेयमेय, कयाय दुप्रेय कुकम्म जेयं ॥
 दुखकयधे कयपावनास, तवेण दाहागमय निरास
 ॥ ९ ॥ एवाड जे केवि नवप्पयाड, आराहयतिष्ठफ-
 लप्पयाड ॥ लहति ते सुखपरंपराण, सिरिं सिरीपाल
 नरेसरुव ॥ १० ॥ इति ॥

॥ नव पद चैत्यवदनम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाण, सप्पाहिहेरासण-
 सठियाण ॥ सदेसणाणदियसज्जाणाण, नमो नमो
 होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ सिद्धाणमाणसुरमाख्याणं,
 नमो नमोऽणतचजकयाण ॥ सरीणदुरीरुयकुग्ग-
 हाण, नमो नमो सूरसमप्पहाण ॥ २ ॥ सुतच्चिन्हा-
 रणतप्पराण, नमो नमो वायगकुजराण ॥ साहूण
 ससाहिअ संजमाण, नमो नमो सुद्धदयादमाण ॥ ३ ॥
 जिणुत्ततत्ते क्कल्लखणस्स, नमो नमो निम्मलदस-
 णस्स ॥ अन्नाणसमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाण-
 दिवायरस्स ॥ ४ ॥ आराहिअरामीय सक्खिअस्स, नमो
 नमो सजमवीरिअस्स ॥ कम्महुमोम्मूलणकुजरस्स,
 नमो नमो तिब्वतवोजरस्स ॥ ५ ॥ इयनवपयसिद्ध-
 लद्धिविज्जासमिद्ध ॥ पयमियसुरवग्ग, इहीतिरेहा-

॥ अथ चैत्यवन्दनम् ॥

॥ नियतरंगारिगणे सुनाणे, सपान्हिरेराड सयप्प-
 हाणे ॥ सदेहसदोहरय हरतो, जाएह निच्चपि जिणे
 रहंतो ॥ १ ॥ डुठठ कम्मावरणप्पमुक्के, अणतनाणाड
 सीरीचउक्के ॥ समग्गलोगग्ग पयच्चसिद्धे, जाएह
 निच्चपि समग्गसिद्धे ॥ २ ॥ न त सुहं नहि पीया न
 माया, जे दत्ति जीवान्हिसूरीसपाया ॥ तम्हाहु ते
 चेव सया जजेह, ज मुक्क सुक्काड लहु लहेह ॥ ३ ॥
 सुत्तव्वसवेगमय सुएण, सनीरखीरामय विसुएणं ॥
 पीनति जे ते उवप्पायराए, जाएह निच्चपि कयप्प-
 साए ॥ खत्तेय दत्तेय सुगुत्तिगुत्तो, मुत्तेय सत्ते गुण-
 जोगजुत्तो ॥ गयप्पमाए गयमोहमाए, जाएह निच्च
 मुणिरायपाए ॥ ५ ॥ ज दव्वञ्चिकायेसु सदहाण, त
 दंसणं सव्वगुणप्पहाण ॥ कुग्गहि वाही उजयति जेण,
 जहाविधेण रसायणेण ॥ ६ ॥ नाण पहाण नय-
 चक्कसिद्ध ततव्वोहीक मय पसिद्ध ॥ धरेह चित्ता-
 वसए फुरत्त, माणिक्कदिउवत्तमो हरत्त ॥ ७ ॥ सुसवर
 मोहनिरोधसार, पचप्पयार विगमाइयार ॥ मूलोत्त-
 राणेगुण पत्ति, पालेह निच्चपि हु सच्चरित्त ॥ ८ ॥

वपुं तद्धानितरजेयमेय, कथाय दुप्रेय कुवम्म ज्ञेय ॥
 दुस्करकयथे कयपावनास, तवेण दाहागमय निरासं
 ॥ ९ ॥ एवाइ जे केनि नवप्पयाइ, आराहयतिष्ठफ-
 लप्पयाइ ॥ लहति ते सुक्कपरंपराण, सिरि सिरीपाल
 नरेस्सरुव ॥ १० ॥ इति ॥

॥ नव पद चैत्यवदनम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं, सप्पाग्निहेरासण-
 सवियाण ॥ सदेसणाणदियसज्झणाण, नमो नमो
 होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ सिद्धाणमाणसुरमालयाणं,
 नमो नमोऽणतचउक्कयाण ॥ सूरीणदुरीकयकुग्ग-
 हाण, नमो नमो सूरसमप्पहाण ॥ २ ॥ सुतव्विष्ठा-
 रणतप्पराण, नमो नमो वायगकुजराण ॥ साहूण
 ससाहिथ्य सजमाण, नमो नमो सुद्धदयादमाण ॥ ३ ॥
 जिणुत्ततत्ते ऋद्धलक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंस-
 णस्स ॥ अन्नाणसमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाण-
 दिवायरस्स ॥ ४ ॥ आराहिथ्यसमीय सक्किथ्यस्स, नमो
 नमो सजमवीरिथ्यस्स ॥ कम्महुमोम्मूलणकुजरस्स,
 नमो नमो तिबतवोजरस्स ॥ ५ ॥ इयनवपयसिद्ध-
 लद्धिविज्जासमिद्ध ॥ पयणियसुरवग्ग, इत्थिरेहा-

समग्ग ॥ दिसवड्सुरसारं, खोणिपीढोवयार ॥
तिजयविजयचक्र, सिद्धचक्रं नमामि ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ नव पदजीनी स्तुति ॥

॥ ग्रह उठी बंडु, सिद्धचक्र सदाय ॥ जपीए नव
पदनो, जाप सदा सुखदाय ॥ विविपूर्वक एतप, जो
करे थड उजमाल ॥ ते सवि सुख पामे, जिम मयणा
श्रीपाल ॥ १ ॥ मालवपति पुत्री, मयणा अति गुण-
वंत ॥ तम कर्मसंयोगे, कोढी मिलीयो कत ॥ गुरु-
वयणे ते हो, आराध्युं तप एह ॥ सुख सपद्वरीया,
तरीया जवजल तेह ॥ २ ॥ आबिल ने उपवास, ठठ
बली अछम ॥ दश अछाइ पदर मास, ठ मास
निशेष ॥ इत्यादिक तप बहु, सहु मांढि शिरदार ॥ जे
जवियण करशे, ते तरशे संसार ॥ ३ ॥ तप सान्निध्य
करशे, श्री विमलेश्वर यक्ष ॥ सहु सधना संकट, चूरे
थइ प्रत्यक्ष ॥ पुरुरीक गणधार, कनकविजय बुद्धि
शिष्य ॥ बुध दर्शनक विजय कहे, पद्मोचे सकल
जगीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अर्हन्मूल प्रफामोतनुनिकरधर सूरिराजश्च
शाखा, गुल्म सद्वाचकेशो दलततिपरिधि साधवो

मंजरीचित् ॥ पुष्पोद्यो दर्शन चाजिमतपरिमलश्चारु
 चारित्ररूप शस्त शस्यं तपश्चामरतरुविजय सिद्ध-
 चक्र पुनातु ॥ १ ॥ श्यामा सिद्धा मुनीन्द्रा प्रवरमुनि
 वरा साधवो ज्ञानपात्र श्वेता रक्ताश्च पीता बुधसम-
 हरिता कज्जलाज्ञा जिनेशा ॥ चचत्पुष्पाग्रपत्र ठवि-
 कनकरज पर्णरोलवधारा गीर्वाणा गा इवेष्ट सकल-
 मतिततं पावन सदहतु ॥ २ ॥ सार्शना गूढनेत्रा
 द्विधनपरिमिता कर्मनिर्मूलकाना—भाचार्याणा रसत्रि-
 नवनवमुनयो वाचकाना मुनीना ॥ त्रिंशत्यासतयुक्ता
 मुनिकृतिसहिता नेत्रसग्या चतुर्णा पष्टिरब्धि रस-
 तीर्गगनगरमिता सङ्गुणोघा जयति ॥ ३ ॥ देवेन्द्रा
 श्रष्टर्गो ग्रहगणसहिता गोमुखाद्या परेऽपि चक्रेश्व-
 र्यादि देव्योऽपि च कुशलकरा सिद्धचक्रस्य जक्ता ॥
 श्रीश्रीपालादिकानामिन्द्र सुशमञ्जता प्राणिना जक्ति-
 नाजा ग स्वर्गद्व ददतु प्रगमसुरफल मुक्तिसौभाग्य-
 वीजम् ॥ ४ ॥ इति सिद्धचक्रस्य स्तुति ॥

॥ सिद्धचक्रजीनु चैत्यवदन ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधता, सुर सपत्ति लहीए ॥
 सुरतरु सुररमणी थकी, श्रविकज महिमा कहीए ॥

॥ १ ॥ अष्ट कर्म हाणी करी, शिवमंदिर रहीए ॥
 त्रिधिशु नव पद ध्यानथी, पातिक सवि दमीए ॥ २ ॥
 सिद्धचक्र जे सेवशे, एकमना नर नार ॥ मनवाठित
 फल पामशे, ते सवि त्रिचुवन मोजार ॥ ३ ॥ अग
 देश चपापुरी, तस केरो जूपाख ॥ मयणा साथे तप
 तपे, ते कुवर श्रीपाख ॥ ४ ॥ सिद्धचक्रजीना नमन
 थकी, जस नाठा रोग ॥ तत्क्षण त्यांथी ते लहे, शिव-
 सुर संजोग ॥ ५ ॥ सातसें कोढी होता, हुवा नीरोगी
 जेह ॥ सोवन वाने जलहले, जेहनी निरुपम देह
 ॥ ६ ॥ तैणे कारण तमे जविजनो, ग्रह उठी नक्ते ॥
 आसो मास चैत्र थकी, आराधो जुगते ॥ ७ ॥ सिद्ध-
 चक्र ग्रण कालना, वदो वली देव ॥ पक्किमणु करी
 उन्नय काल, जिनगर मुनि सेव ॥ ८ ॥ नव पद ध्यान
 हृदे बते, प्रतिपालो जवि शील ॥ नव पद आधिल
 तप तपो, जेम होय लीलम लीज ॥ ९ ॥ पहेलो पद
 अरिहतनो, नित्य कीजे ध्यान ॥ बीजो पद वली
 सिद्धनो, करीए गुणग्राम ॥ १० ॥ आचारज बीजे पदे,
 जपता जयजयकार ॥ चोथो पद उवजायनो, गुण
 गाठ उदार ॥ ११ ॥ सरव साधु वंडु सही, थडी छीपमा
 जेह ॥ पचम पदमा ते सही, धरजो धरी सनेह

॥ १७ ॥ ठेठे पदे दरसण नमु, दरशन अजवाबु ॥ ज्ञान
पद नमु सातमे, तेम पाप पराबु ॥ १३ ॥ आठमे
पद रुडे जपु, चारित्र सुसग ॥ नवमे पद वहु तप
तपो, जिम फल सही अजग ॥ १४ ॥ एही नव पद
ध्यानथी, जपता नाठे कोरु ॥ पन्ति धीरविमल
तणो, नय वदे कर जोरु ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधो, मनवाचित कारज
साधो रे ॥ नविया ॥ श्री सिद्धचक्र आराधो ॥ ए
आकणी ॥ पद पहेले अरिहत ध्यावो, जेम अरिहत-
पदवी पावो रे ॥ नवियां ॥ श्री सिद्ध ॥ पद दुजे
सिद्ध मनावो, ज्यम सिद्ध सरूपी होइ जाओ रे ॥ न० ॥
श्री० ॥ सूरि त्रीजे गुणवता, जशना एक जग जय-
वता रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ चोथे पदे उरकाया, जेणे
मारग आण वताव्या रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ साधु सकल
गुणधारी, पद पचमे जग हितकारी रे ॥ न० ॥ श्री० ॥
दरसण पद ठेठे वदो, जेम कीरति होय जीर नदो रे
॥ न० ॥ श्री० ॥ ज्ञानपद सातमे दासो, चारित्रपद
आठमे जाख्यो रे ॥ न० ॥ श्री० ॥ तप नवमे पद

शारयो, जेम वीरजीने वचने शारयो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥
 श्रीपालने मयणा लीधो, नवमे जव कारज सिद्ध्यो
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ नव पद महिमा जाणी, जिनचड्ढी
 ए मन आणी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विनयप्रियजनी कृत ॥

॥ आविल तपनी सजाय ॥

॥ समरी श्रुत देवीशारदा, सरस वचन घर आपे
 सदा ॥ आविल तपनो महिमा घणो, जविजन जाव
 थकी ते सुणो ॥ १ ॥ विगय सकलनो जिहा परि-
 हार, अशन मांही घणो जेद विचार ॥ प्रिदल सर्व
 तिल तूयर विना, अलसी कोडव कागनी मना ॥ २ ॥
 खरुधान पुहक डूकट फल सर्व, वर्जीजे आविलने
 पर्य ॥ उंसामण परे जो जल जले, तो आविल
 अविल रस टले ॥ ३ ॥ विलवण सूठी मरीच ने सूआ,
 मेथी सचल रामठजुआ ॥ अजमादिक जेला रधाय,
 तो आविलमा लेवा थाय ॥ ४ ॥ जीरु जले ते जेवकी
 कही, ते सूजे पण जीरु नहीं ॥ गोमूत्र विना अठे
 अणाहार, ते सवि लेवानो विवहार ॥ ५ ॥ सात
 जाति जे तडुल तणी, ते सूजती आंविळमा जणी ।
 सेकिल धान अपकी दाल, मामा खाखर लेवा टाल

॥ ६ ॥ हसदर लविंग पीपर पीपली, हरडे संधव
 वेसण वली ॥ खादिम खादिम जे कहेवाय, ते आवि-
 लमा नवि लेवाय ॥ ७ उत्कृष्ट मिधे उष्ण जल नीर,
 जघन्य विधे काजीनु नीर ॥ ८ निरद्रूपण आविल
 करे, मुखधोवण दातण नवि करे ॥ ९ ॥ जे निर-
 द्रूपण लीए आहार, उंदननो तेहने विग्रहार ॥ आटो
 खिगट पाणीवतु, ते पण आविलमा सज्जतु ॥
 ॥ १० ॥ अशठ गीतारथ अणमधरी, जे जे विधि बोले
 ते खरी ॥ लाजालाज विचारे जेह, विधि गीतारथ
 कहीए तेह ॥ १० ॥ आविल तप उत्कृष्टो कक्षो,
 विघन विदारण कारण लक्षो ॥ वाचक कीर्त्तिविजय
 सुपसाय, ज्ञाखे प्रियविजय उज्जाय ॥ ११ ॥ इति
 आविलमां आहार लेवानो विधि सज्जाय ॥

॥ जिन पूज्यानुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रणमी श्री गुरुराज आज, जिनमदिर केरो ॥
 पुन्य जणी करशु सफल, जिनवचन जलेरो ॥ देहरे
 जावा मन करे, चोथ तणु फल पावे ॥ जिन जुहाग्ग
 उगता, ठछ पोते आवे ॥ जइशु जिनवर जणीए,
 मार्ग चालता ॥ होवे द्वादश तणु पुन्य, जक्ति मालता ॥

અધ પંચ જિનવર તણો ણ, પદરે ઉપવાસ ॥ ઢીઠો
 લામી તણો યુવન, લહીં એક માસ ॥ જિનવર પાસે
 આવતા, ઠમાસી ફલ સિદ્ધ ॥ આવ્યા જિનવર વારણે,
 વર્ષી તપ ફલ લીવ ॥ સો વર્ષ ઉપવાસ પુન્ય, પ્રદ-
 દ્ધિના દેતા ॥ સહસ વર્ષ ઉપવાસ પુન્ય, જે નજરે
 જોતા ॥ ફલ ઘણો ફુલની માલ, પ્રજુ કઠે ઠગતા ॥ પાર
 ન આવે ગીત નાદ, કેરા ફલ સ્થુળતા ॥ શિર પૂજી
 પૂજા કરો ણ, સૂર ધૂપ તણો ધૂપ ॥ અક્ષર સાર તે અદ્ય
 સુચ, ઢીપ તનુરૂપ ॥ નિર્મલ તન મને કરીએ,
 સ્થુળતા ઇદ્ર જગીશ ॥ નાટક જાવના જાવતા, પામે
 પદવી જગીશ ॥ જિનવરજક્તિ વલી એ, પ્રેમે પ્રકાશી ॥
 સુણી શ્રીગુરુ વચણ સાર, પૂર્વ રૂપિ જાણી ॥ અષ્ટ
 કર્મને ટાલવા, જિનમદિર જઇશુ ॥ જેઢી ચરણ જગવ-
 તના, હવે નિર્મલ થઇશુ ॥ કીર્તિવિજય ઉવજાયનો,
 વિનય કહે કર જોન ॥ સફલ હોજો મુજ વિનતિ,
 જિન સેવાનુ કોન ॥ ઇતિ ॥

॥ અથ સૂતક વિચાર ॥

(જન્મ સવધી)

॥ પુત્ર જન્મે સૂતક દિન ૧૦ નુ જાણવુ, પુત્રી
 જન્મે સૂતક દિન ૧૧ નુ જાણવુ, અને વાર દિવસ

(१४५)

सुधी घरना माणस जिनपूजा करे नहीं न्यारा जमता होय तो बीजाना घरना पाणीथी जिनपूजा करे एम चर्चरी ग्रथमा कह्यु ठे, अने स्त्री दिन ३० सुधी जिनदर्शन तथा दिन ४० सुधी पूजा करे नहीं तथा साधुने बहोरावे नहीं घरना गोत्री जनोने दिन ५ नु सूतक लागे घोमी, उटणी, जेश प्रसवे तो दिन १ नु सूतक लागे

जेश प्रसवे तो दिन १५ पठी दुध कढ्ये गाय प्रसवे तो दिन १० पठी दुध कढ्ये बकरी प्रसवे तो दिन ७ पठी दुध खये

(मृत्यु संबंधी)

॥ जेने घेर मृत्यु थाय तेने दिन १२ नु सूतक लागे, ने तेने घेर तेटलाज दिवस साधु बहोरे नहीं अने तेना घरना अग्निथी तथा पाणीथी जिनपूजा न थाय मृतक पासे सुतेलाने दिन ३ नु सूतक दर्शन, पूजा ने प्रतिक्रमण थाय नहीं दिवस चार पठी थाय मृतकने अरुम्यो न होय तो स्नान कीधे शुद्ध थाय ने अरुम्यो होय तो दिन १ नु सूतक लागे

जेने घेर जन्म तथा मरण थाय ते दिन १२ जिनपूजा न करे मृतकने अरुकनार पहोर २४ सुधी प्रति-

क्रमण करे नहीं वेश पालटनारने ७ पहोरनु सूतक जाणवुं

जन्मे ते दिवस मरे अथवा देशांतरे मरण पामे तो दिन १ नु सूतक जाणवु आठ वर्षथी नानुं घालक मरे तो तेटलाज (७) दिननु सूतक जाणवु

गाय प्रमुखनु मरण थाय तो कलेवर बहार लड जाय त्यासुधीनु सूतक जाणवु

दास दासीनी कन्या आपणी निष्ठाए घरमा रही होय तो तेनो जन्म थया पठी मृत्यु थाय तो त्रण रात्रिनु सूतक लागे जेटला महीनानो गर्ज होय तेटलाज पहोरनुं सूतक जाणवु इति सूतकविचार ॥

॥ ऋतुवंती स्त्री विषे ॥

॥ ऋतुवंती स्त्री दिवस त्रण लगे जन्मादिकने ठीवे नहीं, दिन चार लगे प्रतिक्रमण करे नहीं, पण तपस्या करे ते लेखे लागे दिन पाच पठी जिनपूजा करे चार दिवस पठी रोगादिक कारणे रुधिर दीठामा आवे तेनो दोष नथी एम महानिशीथ सूत्रमा कछु ठे

॥ पच्चस्काण कर्याथी नरकायु त्रुटे ॥

नवकारशीथी १०० वर्षनु नरकायु त्रुटे

(१४७)

पोरिसिन्धी १००० वर्षनु नरकायु त्रुटे
साकूपोरिसिन्धी १०००० वर्षनु नरकायु त्रुटे
पुरिमकृथी १००००० वर्षनु नरकायु त्रुटे
एकासणार्थी १०००००० वर्षनु नरकायु त्रुटे
निवीथी एक क्रोरु वर्षनु नरकायु त्रुटे
एकलठाणार्थी दश क्रोरु वर्षनु नरकायु त्रुटे
एकलदत्तीथी सो क्रोरु वर्षनु नरकायु त्रुटे
आविलथी हजार क्रोरु वर्षनु नरकायु त्रुटे
उपवासथी दश सहस्र क्रोरु वर्षनु नरकायु त्रुटे
एम जाणवु

माटे अवश्य जैनधर्म समुदायना पुरुष अने स्त्री-
वर्गे यथाशक्ति धृत पञ्चस्काण करवु

॥ वीश स्थानक तपनी विधि ॥

- १ नमो अरिहताण १००० गणवु लो १४ अथवा ११
- २ नमो सिद्धाण १००० गणवु लो १५
- ३ नमो पवयणस्स १००० गणवु लो ४५
- ४ नमो आयरियाण १००० गणवु लो ३६
- ५ नमो थेराण १००० गणवु लो १०
- ६ नमो उवज्जायाण १००० गणवु लो १५

- ૭ નમો લોષ સઘસાહૂણ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૨૭
 ૮ નમો નાણસ્સ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૫
 ૯ નમો દંસણસ્સ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૬૭
 ૧૦ નમો વિણયસંપન્નાણ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૧૦
 ૧૧ નમો ચારિત્તસ્સ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૭૦
 ૧૨ નમો વત્તવયધારિણ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૯
 ૧૩ નમો કિરિયાણ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૨૫
 ૧૪ નમો તવસ્સ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૧૨
 ૧૫ નમો ગોગ્ગમસ્સ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૨૮
 ૧૬ નમો જિણાણ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૨૦
 ૧૭ નમો ચરણસ્સ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૧૭
 ૧૮ નમો અજિનવનાણસ્સ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૫૧
 ૧૯ નમો સુયનાણસ્સ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૧૨
 ૨૦ નમો તિઠ્ઠસ્સ ૨૦૦૦ ગણવુ લો ૫

ए रीते वीश स्थानकनुं गणणु सर्व पदे गणवु, अने पदे पदे नवकारवाली वीश गणवी, एटले जे पद होय ते पदनी नवकारवाली वीश गणवी लोगस्स सपूर्ण गणवो

આ રીતે વીશ સ્થાનકની ઝંલી જઘન્યથી વે માસમાં પૂરી કરવી અને ઉત્કૃષ્ટથી ૮ માસ સુધીમા એક

(१४९)

उंली पूरी करवी अने ते उपरांत थाय तो उंली लेसे
न लागे (जे उंली शरु करी होय ते)

॥ अथ श्री मौन एकादशीनां दोढसो

कल्याणकनुं गणणुं ॥

(१) जवुछीपे जरते अतीत चोवीशी

॥ श्री महायश सर्वज्ञाय नम ॥

६ श्री सर्वानुभूति अर्हते नम ॥

६ श्री सर्वानुभूति नाथाय नम ॥

६ श्री सर्वानुभूति सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री श्रीधर नाथाय नम ॥

(२) जवुछीपे जरते वर्तमान चोवीशी

२१ श्री नमिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

१९ श्री मल्लिनाथ अर्हते नम ॥

१९ श्री मल्लिनाथ नाथाय नम ॥

१९ श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

१७ श्री अरनाथ नाथाय नम ॥

(३) जवुछीपे जरते अनागत चोवीशी

४ श्री स्वयंप्रज सर्वज्ञाय नम ॥

६ श्री देवार्हते नमः ॥

६ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥

६ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री उदयनाथ नाथाय नमः ॥

(४) धातकी खडे पूर्व जरते अतीत चोवीशी

४ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री शुभकरनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री शुभकरनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री शुभकरनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री सतनाथ नाथाय नमः ॥

(५) धातकी खडे पूर्व जरते वर्तमान चोवीशी

२१ श्री ब्रह्मेन्द्रनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१९ श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥

१९ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥

१९ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ श्री गान्धिकाथ नाथाय नमः ॥

(६) धातकी खडे पूर्व जरते अनागत चोवीशी

४ श्री साप्रत सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

- ७ श्री विशिष्टनाथ नाथाय नम ॥
 (७) पुष्करवरद्वीपे पूर्व जरते अतीत चोवीशी
 ४ श्री सुमृदुनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
 ६ श्री व्यक्तनाथ अर्द्धते नम ॥
 ६ श्री व्यक्तनाथ नाथाय नम ॥
 ६ श्री व्यक्तनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
 ७ श्री कलाशत नाथाय नम ॥
 (८) पुष्करवरद्वीपे पूर्वजरते वर्तमान चोवीशी
 २१ श्री अरण्यनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
 १९ श्री योगनाथ अर्द्धते नम. ॥
 १९ श्री योगनाथ नाथाय नम ॥
 १९ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
 १८ श्री अयोगनाथ नाथाय नम ॥
 (९) पुष्करवरद्वीपे पूर्व जरते अनागत चोवीशी
 ॥ श्री परम सर्वज्ञाय नम. ॥
 ६ श्री शुद्धार्तिनाथ अर्द्धते नम ॥
 ६ श्री शुद्धार्तिनाथ नाथाय नम ॥
 ६ श्री शुद्धार्तिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
 ७ श्री निरुजनाथ नाथाय नम ॥
 (१०) धातकी खडे पश्चिम जरते अतीत चोवीशी

४ श्री सर्वार्थ सर्वज्ञाय नम ॥

६ श्री हरिजङ्ग अर्हते नम ॥

६ श्री हरिजङ्ग नाथाय नम ॥

६ श्री हरिजङ्ग सर्वज्ञाय नम. ॥

७ श्री मगधाधिप नाथाय नम ॥

(११) धातकी खडे पश्चिम जरते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री प्रयष्ट सर्वज्ञाय नम ॥

१९ श्री अक्षोजनाथ अर्हते नम

१९ श्री अक्षोजनाथ नाथाय नम ॥

१९ श्री अक्षोजनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

१७ श्री मलयसिंह नाथाय नम ॥

(१२) धातकी खडे पश्चिम जरते अनागत चोवीशी

४ श्री दिनरुक् सर्वज्ञाय नम. ॥

६ श्री धनदनाथ अर्हते नम ॥

६ श्री धनदनाथ नाथाय नम ॥

६ श्री धनदनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री पौषधनाथ नाथाय नम ॥

(१३) पुष्करवरछीपे पश्चिम जरते अतीत चोवीशी

४ श्री प्रलंब सर्वज्ञाय नम ॥

६ श्री चारित्रनिधि अर्हते नम ॥

- ६ श्री चारित्रनिधि नानाद नमः ॥
 ६ श्री चारित्रनिधि नानाद नमः ॥
 ७ श्री प्रथमगान्धिन नाथाय नमः ॥
 (१४) पुष्करवल्लीपे पश्चिम तरते वर्तमान चोवीजी
 ११ श्री स्वामि सर्वज्ञाय नमः ॥
 १९ श्री विपरीतनाथ अर्हते नमः ॥
 १९ श्री विपरीतनाथ नाथाय नमः ॥
 १९ श्री विपरीतनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
 १७ श्री प्रमादनाथ नाथाय नमः ॥
 (१५) पुष्करवल्लीपे पश्चिम तरते यनागत चोवीजी
 ४ श्री अघटितनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
 ६ श्री प्रमण्डनाथ अर्हते नमः ॥
 ६ श्री प्रमण्डनाथ नाथाय नमः ॥
 ६ श्री प्रमण्डनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
 ७ श्री रूपचन्द्र नाथाय नमः ॥
 (१६) जंबूद्वीपे ऐरवने अतीत चोवीजी
 ४ श्री दयांत समज्ञाय नमः ॥
 ६ श्री अजिनदननाथ अर्हते नमः ॥
 ६ श्री अजिनदननाथ नाथाय नमः ॥
 ६ श्री अजिनदननाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

चोवीजी.

७ श्री रत्नेशनाथ नाथाय नम ॥

(१७) जवुछीपे ऐरवते वर्तमान चोवीशी

२१ श्री श्यामकोष्ठ सर्वज्ञाय नम ॥

१९ श्री मरुदेवनाथ अर्हते नम ॥

१९ श्री मरुदेवनाथ नाथाय नम ॥

१९ श्री मरुदेवनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

१८ श्री अतिपार्श्व नाथाय नम ॥

(१८) जवुछीपे ऐरवते अनागत चोवीशी

४ श्री नदिपेण सर्वज्ञाय नम ॥

६ श्री व्रतधरनाथ अर्हते नम ॥

६ श्री व्रतधरनाथ नाथाय नम ॥

६ श्री व्रतधरनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री निर्वाणनाथ नाथाय नम ॥

(१९) धातकी खडे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी

४ श्री सौंदर्य सर्वज्ञाय नम ॥

६ श्री त्रिविक्रमनाथ अर्हते नम ॥

६ श्री त्रिविक्रमनाथ नाथाय नम ॥

६ श्री त्रिविक्रमनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री नरसिहनाथ नाथाय नम ॥

(२०) धातकी खडे पूर्व ऐरवते वर्तमान चोवीशी

११ श्री तेमन सर्वज्ञाय नम ॥

१२ श्री सतोपितनाथ अर्हते नम ॥

१३ श्री मनोपिननाथ नाथाय नम ॥

१४ श्री सतोपिननाथ सर्वज्ञाय नम ॥

१५ श्री कामनाथ नाथाय नम ॥

(११) धातकी खडे पूर्व ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

६ श्री चडदाह अर्हते नम ॥

६ श्री चडदाह नाथाय नम ॥

६ श्री चडदाह सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री दिलादित्य नाथाय नम ॥

(१२) पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी

४ श्री यष्टाहिक सर्वज्ञाय नम ॥

६ श्री वणिकुनाथ अर्हते नम ॥

६ श्री वणिकुनाथ नाथाय नम ॥

६ श्री वणिकुनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री उदयज्ञान नाथाय नम ॥

(१३) पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते वर्तमान चोवीशी

११ श्री तम रुद्र सर्वज्ञाय नम ॥

१२ श्री सायकाह अर्हते नम

(१५८)

४ श्री कलापक सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री विशोम अर्हते नमः ॥

६ श्री विशोम नाथाय नमः ॥

६ श्री विशोम सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री अरण्यनाथ नाथाय नमः ॥

॥ इति मौन एकादशीनां दोढसो कल्याणकनु
गणणु समाप्त ॥

॥ अथ कल्याणकनी समज ॥

कल्याणकनो शब्द	अर्थ	जाप
१ च्यवन	परगतिथी आवबु	परमेष्ठिने नमः
२ जन्म	मातानी कुलथी जन्मे ते	अर्हते नमः
३ दीक्षा	मुनिपणु धारण करबु	नाथाय नमः
४ केवल	सपूर्ण ज्ञान यबु	सर्वज्ञाय नमः
५ मोक्ष	कर्मथी मूकाबु	पारगताय नमः



(१५९)

॥ अथ श्री शत्रुंजय रास ॥

(वृद्ध रास)

॥ दोहा ॥

॥ श्री रिसहेसर पाय नमी, आणी मन आनद ॥
रास जणु रलियामणो, शत्रुजय सुखकद ॥ १ ॥
संवत् चार सत्योतरे, हुवा धनेसर सूर ॥ तिणे शत्रुजय
माहात्म कथु, गिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणद
समोसत्या, शत्रुजय उपर जेम ॥ इडादिक आगल कहुं,
शत्रुजय माहात्म एम ॥ ३ ॥ शत्रुजय तीरथ सारिखु,
नहीं ठे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ
सबला जोय ॥ ४ ॥ नामे नव निधि सपजे, दीठे
डुरित पुलाय ॥ जेटता जवजय टले, सेवता सुख
थाय ॥ ५ ॥ जवु नामे द्वीप ए, दाक्षुण जरत मजार ॥
सोरठ देश सोहामणो, तिहा ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ राग रामग्री ॥

॥ शत्रुजय ने श्री पुरुरीक, सिद्धक्षेत्रकहु तहकीक

॥ विमलाचलने करु प्रणाम, ए शत्रुजयना

नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि महागिरि ने पुन्यराश, श्रीपद
 पर्वत झ्रप्रकाश ॥ महातीरथ पूरवे सुखकाम ॥ ए०
 ॥ २ ॥ शाश्वत पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तिणे
 कीजे जक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगम ॥ ए० ॥ ३ ॥
 पृथ्वीपीठ सुजझ कैलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥
 सर्व काम कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्री शत्रुजयनां
 एकवीश नाम, जपेज वेग अपणे ठाम ॥ शत्रुज
 जात्रानु फल लहे, महावीर जगवंत इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शत्रुजो पहेले अरे, असी जोयण परमाण ॥
 पहोलो मूले उचपणे, ठवीश जोयण जाण ॥ १ ॥
 सिन्हेर जोयण जाणवो, बीजे अरे विशाल ॥ वीश
 जोयण उचो कखो, मुज वदन त्रण काल ॥ २ ॥ साठ
 जोयण बीजे अरे, पहोलो तीरथराय ॥ सोल जोयण
 उचो सही, ध्यान धरु चित्त लाय ॥ ३ ॥ पचास
 जोयण पहोलपणे, चोथे अरे मजार ॥ उचो दश
 जोयण अचल, नित्य प्रणमे नर नार ॥ ४ ॥ चार जोयण
 पचमे अरे, मूल तणो निस्तार ॥ दोय जोयण उचो
 कखो, शत्रुज तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठेठे अरे,

(१६१)

पहोखो पर्वत एह ॥ उचो होगे सो धनुष, शाश्वतु
तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ जिनवरशुं मेरो मन लीणो ॥ ए राह ॥

॥ केवलझानी प्रमुख तीर्थकर, अनत सिद्धा इण
ठाम रे ॥ अनंत वली सिद्धशे इण ठामे, तिणे करुं
नित्य प्रणाम रे ॥ १ ॥ शेत्रुजे साधु अनता सिद्धा,
सिद्धगे वलीय अनत रे ॥ जिणे शेत्रुज तीरथ नहीं
जेठ्यो, ते गर्जागास खहत रे ॥ शेत्रुजे ॥ २ ॥ फागण-
सुदि आवमने दिवसे, कृपजदेव सुरकार रे ॥ रायण-
रुख समोसर्पा स्वामी, पूरन नयाणु वार रे ॥ शे ॥ ३ ॥
भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शेत्रुजय गिरि आय रे
॥ पाच कोमीशु पुरुरीक सिद्ध्या, तिणे पुंरुरीक कहाय
रे ॥ शे ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, वे वे कोमी
सघात रे ॥ फागण सुदि दशमी दिन सिद्धा, तिणे प्रभु
प्रणमु प्रजात रे ॥ शे ॥ ५ ॥ चैत्र मास रदि चौदशने
दिन, नमि पुत्री चोसठ रे ॥ अणसण करी शेत्रुज गिरि
उपर, ए सहु सिद्ध्या एकठ रे ॥ शे ॥ ६ ॥ पोतरा
प्रथम तीर्थकर केरा, आविरु ने वारिसिद्ध रे ॥ कार्तिक

सुदि पूनम दिन सिध्या, दश कोमी मुनि नि शल्य रे
 ॥ शे० ॥ ७ ॥ पांचे पारुव डण गिरि सिध्या, नव
 नारद कृपिराय रे ॥ सांव प्रद्युम्न गया तिहां मुगते,
 आठे कर्म खपाय रे ॥ शे० ॥ ८ ॥ नेम विना त्रेवीश
 तीर्थंकर, समोसर्या गिरिशृंग रे ॥ अजित शान्ति
 तीर्थंकर वेहु, रह्या चोमासुरंग रे ॥ शे० ॥ ९ ॥ सहस्स
 साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साध रे ॥ पाचसें
 साधुशुं शैलग मुनिवर, शेत्रुजे शिवसुर लाव रे ॥ शे०
 ॥ १० ॥ असरयाता मुनि शेत्रुजे सिध्या, जरतेसरने
 पाट रे ॥ राम अने जरताटिक सिध्या, मुक्ति तणी
 ए वाट रे ॥ शे० ॥ ११ ॥ जाली मयाली ने उवयाली,
 प्रमुख सावुनी कोमी रे ॥ साधु अनंता शेत्रुजे सिध्या,
 प्रणमु वे कर जोमी रे ॥ शे० ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥

॥ शेत्रुजाना कहु सोल उद्धार, ते सुणजो सहको
 सुविचार ॥ सुणतां आनंद अग न माय, जन्म
 जन्मना पातिक जाय ॥ १ ॥ कृपजदेव अयोध्या पुरी,

समवसर्यां स्वामी हित करी ॥ जरत गयो वंदनने
 काज, ए उपदेश दीयो जिनराज ॥ २ ॥ जगमा मोटा
 यरिहत देव, चोसठ झु करे जसु सेव ॥ तेहथी
 मोटो सघ कहाय, जेहने प्रणमे जिनवरराय ॥ ३ ॥
 तेहथी मोटो सघरी कहायो, जरत सुणीने मन गह-
 गहयो ॥ जरत कहे ते किम पामीण, प्रभु कहे शेजुजे
 जात्रा कीये ॥ ४ ॥ जरत कहे सघवीपद मुज, ते
 आपो हुं अगज तुज ॥ छे आण्या अकृत वास,
 प्रभु आपे सघरीपद तास ॥ ५ ॥ छे तेणी वेला
 तत्काल, जरत सुजझा वेहुने माल ॥ पहरेावी घर
 सप्रेमीया, सत्तर सोनाना रथ आपीया ॥ ६ ॥ रूपज-
 देवनी प्रतिमा वली, रल तणी कीधी मन रली ॥ जरते
 गणधर घर तेनीया, शातिक पौष्टिक सहु तिहा
 कीया ॥ ७ ॥ ककोत्री मूकी सहु देग, जरते तेढयो सघ
 अशेष ॥ आव्यो सघ अयोध्या पुरी, प्रथम तीर्थंकर
 यात्रा करी ॥ ८ ॥ सघजगति कीधी अति घणी,
 सघ चलायो शेजुजा जणी ॥ गणधर बाहुवली केवली,
 मुनिवर कोमी साथे लीया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्तीनी
 सघली रुझि, जरते साथे लीवी सिद्धि ॥ हय गय रथ

पायक परिवार, ते तो कहेतां नावे पार ॥ १० ॥ जर-
 तेसर संघवी कहेवाय, मार्गे चेत्य उद्धरतो जाय ॥
 संघ आढ्यो शत्रुजय पास, सहनी पूगी मननी आश
 ॥ ११ ॥ नयणे निरग्यो शत्रुजो राय, मणि माणिक
 मोतीशु वधाय ॥ तिणे ठामे रही महोत्सव कीयो, जरते
 आणदपुर वासीयो ॥ १२ ॥ संघ शत्रुजा उपर चढ्यो,
 फरसंता पातिक ऊरुपड्यो ॥ केवलझानी पगळां
 तिहां, प्रणम्या रायणरुख ठे जिहां ॥ १३ ॥ केवल-
 झानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंडे आणी सुपवित्त ॥
 नटी शत्रुजी सोहामणी, जरते दीवी कोतुक जणी
 ॥ १४ ॥ गणधर देव तणे उपदेश, झडे वली दीधो
 आवेश ॥ श्री आदिनाथ तणे देहरो, जरते कराव्यो
 गिरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनाना प्रासाद उत्तम, रत्न तणी
 प्रतिमा मनरग ॥ जरते श्री आदीश्वर तणी, प्रतिमा
 थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली,
 माही पूनम थापी रखी ॥ ब्राह्मी सुदरी प्रमुख प्रासाद,
 जरते थाप्या नवले नाद ॥ १७ ॥ एम अनेक प्रतिमा
 प्रासाद, जरते कराव्या गुरु प्रसाद ॥ एह जण्यो
 पहेलो उद्धार, सधलोही जाणे ससार ॥ १८ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ राग सिधुमो आशावरी ॥

॥ जरत तणे पाट आठमे, दम्बीर्य थयो रायोजी ॥
 जरत तणी परे सध कीयो, शत्रुजय सधवी कहायोजी
 ॥ १ ॥ शत्रुजय उद्धार साजलो, सोख मोटा श्रीका-
 रोजी ॥ असरयाता बीजावली, तेह न कहु अधि-
 कारोजी ॥ श० ॥ २ ॥ चेत्यकराव्यु रूपा तणु, सोनानो
 धिय सारोजी ॥ मूलगा विंव जमारीयां, पश्चिम
 दिशि तेणी वारोजी ॥ श० ॥ ३ ॥ शत्रुजयनी यात्रा
 करी, सफल कीयो अतारोजी ॥ दम्बीर्य राजा
 तणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम
 व्यतिक्रम्या, दम्बीरजथी जे वारोजी ॥ ईशानेंद्र करा-
 वीयो, ए त्रीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ५ ॥ चोथा देव-
 लोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारोजी ॥ तिणे शत्रुज-
 यनो करावीयो, ए चोथो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ६ ॥
 पाचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी ॥
 तिणे शत्रुजयनो करावीयो, ए पाचमो उद्धारोजी ॥ श०
 ॥ ७ ॥ जयनपति इन्द्र तणो कीयो, ए ठहो उद्धारोजी ॥
 चक्रवर्त्ती सगर तणो कीयो, ए सातमो उद्धारोजी

॥ श० ॥ ८ ॥ अग्निनदन पासे सुण्यो, शत्रुजयनो अधि-
 कारोजी ॥ व्यंतरेंडे करावीयो, ए आठमो उद्धारोजी
 ॥ श० ॥ ९ ॥ चद्रप्रज्ञ स्वामीनो पोतरो, चद्रशे-
 खर नाम मद्धारोजी ॥ चद्रयश राये करावीयो, ए
 नवमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १० ॥ शान्तिनाथनी सुणी
 देशना, शान्तिनाथ सुत सुविचारोजी ॥ चक्रधर राय
 करावीयो, ए दशमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ११ ॥ दशरथ
 सुत जग दीपतो, मुनिसुव्रत सुवारोजी ॥ श्री रामचंड्रे
 करावीयो, ए अगीयारमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १२ ॥
 पारुव कहे अमे पापीया किम वृद्धं मोरी मायोजी
 ॥ कहे कुन्ती शत्रुजा तणी, यात्रा कीया पाप
 जायोजी ॥ श० ॥ १३ ॥ पांचे पारुव सघ करी,
 शत्रुजय जेटो अपारोजी ॥ काष्ठचैत्य विंव लेपनो, ए
 वारमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १४ ॥ मन्मानी पापाणनी,
 प्रतिमा सुदर सरूपोजी ॥ श्री शत्रुजनो सघ करी, थापी
 सकल सरूपोजी ॥ श० ॥ १५ ॥ अठ्योतरसो वरपां
 गया, विक्रम नृपथी जिवारोजी ॥ पोरवारु जावरु
 करावीयो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १६ ॥ सवत्
 वार तेरोतरे, श्रीमाळी सुविचारोजी ॥ बाह्रुदे
 मुंहूत्ते करावीयो, ए चौदमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १७ ॥

(१६७)

सवत् तेर एकोतरे, देशखहेर अधिकारोजी ॥ समरे-
 शाहे करावीयो, ए पंदरमो उछारोजी ॥ श० ॥ १७ ॥
 सवत् पन्नर सत्याशीए, वैशाख सुदि शुभ वारोजी ॥
 करमे दोशी करावीयो, ए सोलमो उछारोजी ॥ श०
 ॥ १८ ॥ सप्रति काळे सोलमो, ए वरते ठे उछारोजी
 ॥ नित्य नित्य कीजे वदना ने, पामीजे जवपारोजी ॥
 शत्रुजय उछार साजलो ॥ २० ॥

॥ डुहा ॥

॥ वली शेत्रुज माहात्म कहु, साजलो जिम ठे
 तेम ॥ सूरि धनेसर झम कहे, महावीरे कहु एम
 ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी, शेत्रुजे पूजनीक ॥
 जगवंतनो जेस मानता, लाज हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्री
 शेत्रुजा उपरे, चेद्य करावे जेह ॥ दल परमाण समु
 खहे, पळोपम सुख तेह ॥ ३ ॥ शेत्रुजा उपर देहू,
 नवु नीपावे कोय ॥ जीर्णोछार करावता, आठ गणु
 फल होय ॥ ४ ॥ शिर उपर गागर धरी, स्नात्र करावे
 नार ॥ चक्रवर्तीनी स्त्री थड, शिवसुख पामे सार
 ॥ ५ ॥ कार्तिक पूनिम शेत्रुजे, चढीनेकरे उपनास ॥
 नारकी सो सागर तणो, करे कर्मनो नाश ॥ ६ ॥

कार्तिक परव मोड़ुं कथुं, जिहां सिद्ध्या दशकोरु ॥
 ब्रह्म स्त्री वालकहत्या, पापथी नाखे ठोरु ॥ ७ ॥ सहस्र
 लाख श्रावक जणी, जोजन पुन्य विशेष ॥ शेत्रुज
 साधु पमिलाजतां, अविको तेहथी देख ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ धन्य धन्य अवंतीसुकुमालने ॥ ए देशी ॥

॥ शेत्रुजे गयां पाप वूटीए, लीजे आलोयण एमोजी
 ॥ तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कथुं तेमोजी
 ॥ शे० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलो-
 यण तासोजी ॥ चैत्री दिन शेत्रुजे चढी, एक करे उप-
 वासोजी ॥ शे० ॥ २ ॥ रत्नतणी चोरी करी, सात
 आविल शुद्ध थायजी, काती सात दिन तप कीयां,
 रत्नहरण पाप जायजी ॥ शे० ॥ ३ ॥ कांसा पीतल
 त्रावा रजतनी, चोरी कीधी जेणजी ॥ सात दिवस
 पुरिमह करे, तो वूटे गिरि एणजी ॥ शे० ॥ ४ ॥
 मोती प्रवाला मुंगीया, जेणे चोर्या नर नारोजी ॥
 आविल करी पूजा करे, त्रण टक शुद्ध आचारोजी ॥
 शे० ॥ ५ ॥ धान्य पाणी रस चोरीयां, जे जेते सिद्धदेवो-
 जी ॥ शेत्रुज तलहटी साधुने, पमिलाजे शुद्ध चित्तोजी

(१६९)

॥ शेष ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण जेणे ह्या, ते वूटे श्णे
 मेलोजी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, ग्रह उठी बहु
 वहेलोजी ॥ शेष ॥ ७ ॥ देव गुरुनु धन जे हरे, ते शुरू
 थाये एमोजी ॥ अधिकु अव्य खरचे तिहां, पात्र पोपे
 बहु प्रेमोजी ॥ शेष ॥ ८ ॥ गाय जेश घोमा मही, गजनो
 चोरणहारोजी ॥ वूटे ते तप तीरये, अरिहत ध्यान
 प्रकारोजी ॥ शेष ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहा
 खले आपणां नामोजी ॥ ॥ वूटे ठमासी तप कीयां,
 सामायिक तिण ठामोजी ॥ शेष ॥ १० ॥ कुवारी
 परिव्राजिका, सधव विधव गुरुनारोजी ॥ व्रत जाजे
 तिणने कछु, ठमासी तप सारोजी ॥ शेष ॥ ११ ॥
 गौ विग्र स्त्री बालक रुपि, एहनो घातक जेहोजी ॥
 प्रतिमा आगे आलोवतां, वूटे तप करी एहोजी ॥
 शेषुजे गया पाप वूटीए ॥ १२ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ कुमर जले आवीज ए ॥ ए देशी ॥

॥ सप्रति काळे सोलमो ए, ए वरते ठे च्छार ॥
 शेषुजय यात्रा करु ए, सफल करुं अवतार ॥ शेष ॥ १ ॥
 ठहरी पालता ए, शेषुज केरी वाट ॥ शेष ॥

पालीताणे पहोंचीए ए, संघ मळ्या बहु थाट ॥ शे०
 ॥ २ ॥ लखित सरोवर पेखीए ए, वली सत्तानी
 वाव ॥ शे० ॥ तिहा विसरामो लीजीए ए, वरुने चोतरे
 आव ॥ शे० ॥ ३ ॥ पालीताणे पावनी ए, चढीए उठी
 परजात ॥ शे० ॥ शेत्रुजी नदी सोढामणी ए, डूर
 थकी देखात ॥ शे० ॥ ४ ॥ चढीए हिंगलाजने हडे ए,
 कलिकुरु नमीए पास ॥ शे० ॥ चारी माहे पेम्नीए ए,
 आणी अग उल्लास ॥ शे० ॥ ५ ॥ मरुदेवी हुक मनो-
 हर ए, गज चढी मरुदेवी भाय ॥ शे० ॥ शान्ति-
 नाथ जिन सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ शे० ॥ ६ ॥
 वंश पोरवाडे परगमो ए, सोमजी शाह मद्धार
 ॥ शे० ॥ रूपजी सघवी करावीयो ए, चोमुख मूल
 उद्धार ॥ शे० ॥ ७ ॥ श्री जिनराज सूरीश्वर ए, सरतर
 गद्य गणधार ॥ स्वहाथे जेणे प्रतिष्ठा करी ए, शुच
 दिवस शुच वार ॥ शे० ॥ ८ ॥ चोमुख प्रतिमा चरचीए
 ए, नमती मांहे जला विव ॥ शे० ॥ पांचे पांरुव पूजीए
 ए, अदबुद आदि प्रलव ॥ शे० ॥ ९ ॥ खरतर वसही खां-
 तशु ए, विव जुहारु अनेक ॥ शे० ॥ नेमिनाथ चोरी
 नमु ए, टाबु अलग उद्देग ॥ शे० ॥ १० ॥ धर्मद्वार
 माहे नीसरु ए, कुगति करु अति डूर ॥ शे० ॥ आबु

आदिनाथ देहरे ए, कर्म करु चकचूर ॥ शेष ॥ ११ ॥
 मूलनायक प्रणमु मुदा ए, आदिनाथ जगवत ॥ शेष ॥
 देव जुहारु देहरे ए, जमती मांहे जगवंत ॥ शेष ॥ १२ ॥
 शत्रुजा उपर कीजीए ए, पाचे ठामे स्नात्र ॥ शेष ॥
 कलश अठोतरसो करीए, निर्मल नीरगु गात्र ॥ शेष ॥
 ॥ १३ ॥ प्रथम आदीश्वर आगले ए, पुनरीक गणधार
 ॥ रायण तल पगला बली ए, शान्तिनाथ सुख-
 कार ॥ शेष ॥ १४ ॥ रायण तले पगला नमुं ए, चोमुख
 प्रतिमा चार ॥ शेष ॥ बीजी जूमे त्रिवावली ए, पुन-
 रीक गणधार ॥ शेष ॥ १५ ॥ सूरजकुरु नीहालीए ए
 अति जली उलकाजोल ॥ शेष ॥ चेलणातलाड सिद्ध
 शिखा ए, अग फरसु उल्लोल ॥ शेष ॥ १६ ॥ आदि-
 पुर पाजे उतरु ए, सिद्धवरु छट्टु विसराम ॥ शेष ॥ चैत्य,
 प्रवानी इणी परे करीए, सिद्धा वठित काम ॥ शेष ॥-
 १७ ॥ जात्रा करी शत्रुजा तणी ए, सफल कीयो अतार-
 ॥ शेष ॥ कुशल केमगु आरीया ए, सघ सह परिवार ॥
 शेष ॥ १८ ॥ शत्रुजय माहात्म साजली ए, रास रच्यो
 अनुसार ॥ शेष ॥ जो जनि गावे जावगु ए, आनद होय
 अपार ॥ शेष ॥ १९ ॥ शत्रुजय राम सोहामणो
 ए, साजलजो सह कोय ॥ शेष ॥ घर वेठा जणे

ज्ञावशु ए, तसु जात्रा फल होय ॥ शे० ॥ २० ॥
 ज्ञाणशाली थिरु अति जलो ए, दयावंत दातार ॥ शे० ॥
 शत्रुजय संघ करावीयो ए, जेसलमेर मजार ॥ शे० ॥
 ॥ २१ ॥ शत्रुजय माहात्म्य ग्रथथी ए, रास रच्यो अ-
 नुसार ॥ शे० ॥ ज्ञाव जक्के ज्ञाणतां थका ए, पामीजे जव-
 पार ॥ शे० ॥ २२ ॥ सवत्सोल व्याशीए ए, श्रावण
 सुदि सुखकार ॥ शे० ॥ रास जण्यो शेत्रुजा तणो ए,
 नगर नागोर मजार ॥ शे० ॥ २३ ॥ गिरुज गष्ठ खर-
 तर तणो ए, श्री जिनचद सूरिग ॥ शे० ॥ प्रथम शिष्य
 श्री पूज्यना ए, सकलचद सुजगीश ॥ शे० ॥ २४ ॥ तास
 शिष्य जग जाणीए ए, समयसुदर जवजाय ॥ शे० ॥
 रास रच्यो तिणे रुद्रमो ए, सुणता आनंद थाय ॥
 शेत्रुजे यात्रा करु ए ॥ २५ ॥

॥ इति श्री शेत्रुजय वृद्ध रास समाप्त ॥

॥ श्री सिद्धगिरिनु स्तवन ॥

॥ सिद्धगिरि मंरुन ईश सुणो मुज विनति, मारु-
 देवीनो नद ठो शिवरमणी पति ॥ पूरक इष्ट अत्रीष्ट
 चूरक कर्मावली, जवजय जजन रजन तुज मुद्रा

जलसी ॥ अनंत गुणना आधार अनंती लक्ष्मी वर्या,
 द्वायिक जावे ज्ञान दर्शन चारित्र धर्या ॥ अजर अमर
 निरुपाध स्थान पहोता जिहां, चार गति मांदि जमतो
 मूक्यो मुजने इहा ॥ क्रोध लोभ मोह मत्सर वश
 हु धमधम्यो, पण निज जावमा एक घनी प्रभु नवि
 रम्यो ॥ सार करो इण अवसर प्रभुजी उचित सही,
 मोह गये जो तारो तो तेहमा अधिक नहीं ॥ पण
 तुज दर्शन पामी अनुभव उल्लस्यो, मिव्या तामस सूर
 सरिसो तुही मळ्यो ॥ उदय हुं प्रभु आज जाग्य
 मुज जागीया, तुज मुख चढ चकोर नयण मुज
 लागीया ॥ तेहीज जिह्वा धन्य जेणे तुज गुण स्तव्या,
 धन धन तेहीज नयण जेणे तुज निरखीया ॥ मूर्ति
 मनहर पद्म मन अलि मोहीउं, जाणु जव महा
 सायर चूलकपणु लह्यो ॥ जवअदबी सन्नगाह कर्म करी
 केशरी, जन्म जरा मृति रोग वेद धनवंतरी ॥ ज्ञान
 रयण रयणायर गुण मणि अधरा, राग द्वेष कपाय
 जीती थया जिनवरा ॥ तारक मोह निवारक कष्ट
 मुज कापजो, जमोदधि पार उतारी मुक्तिपद आपजो
 ॥ कमलविजयजी पन्यास चरण तस किंकरु, कहे
 मोहन तुज ध्यान जवोजव हुं धरु ॥ इति ॥

एक अजिप्राय

श्री आचक्रनुं कर्तव्य तथा विविध स्तवनादि नमु
 चय ग्रंथ प्रकाशक आचक्र जीममिह माणिक मुनइ जुआमा जुना
 जैन पुस्तको प्रसिद्ध करनार, जैन साहित्य बहार पाठगारी पहेल करनार
 आचक्र भीमसिंह माणिकनु नाम जैन समाजमा मशहूर ठे
 तेजना तरफची अनेक ग्रंथो, उपयोगी ग्रंथो अत्यार सुधीमा घणै जागे
 शुद्ध अने सरल प्रसिद्ध करवामा आव्या ठे, जेमा आ ग्रंथे एक वधु
 ग्रंथनी वृद्धि करी ठे आ ग्रंथमा प्रथम खरुमा प्रातस्मरणीय उदो,
 मन्त्रो, श्रीजामा ढराभरे जगानी विधितया चैत्यमदनविधि, श्रीजामा तिथि
 विगरेना चैत्यवत्न, मन्त्रो अने शोयो, चोयामा चोरीशी मन्त्रन तथा
 चैत्यमदन, पाचमामा प्रसीर्ण तीर्थ विगरेना स्तवो, उछामा उपदेशी पदो,
 सातमामा सज्जायो, आठमामा खानणी विगरे नाटकना रागना प्रतुल्यगो
 अने दशमामा नमस्मरणादि विगरे शिष्यो आपयामा आव्या ठे आ नश
 प्रकरणमा जे जे आपयामा आपेछ ठे ते प्रचक्षित तेमज केटखान नग
 परतु तमाम पूर्वाचार्यो कृत होन्ने देरने नित्य क्रिया माटे ग्राम उप-
 योगी ठे, वजी वणामाथी चुटणी करेखी होमाथी एक ग्रंथरूपे करेख
 प्रसिद्धि आपराणावर ठे प्रस्तावनामा देवदर्शनमहिमा तेमज
 प्रतिमापूजानु निरूपण अने चैत्यमदनविधि आपी तेनी सुन्दरतामा
 ब्यारो करेखो ठे सुंदर शास्त्री टाइपमा सारा मगळ उपर उपात्री सुंदर
 वाइसींगथी अलंकृत करेख ठे, जेची त कैनो माटे अग्रय सररीदवी लायक
 ठे अने उपयोगी ठे अमो प्रकाशरने आमा ग्रंथो प्रसिद्ध करमा माटे
 धन्यवाद आपीए नीए

(आत्मानन्द प्रकाश) } शास्त्री अकरनी कि १-०-०
 गुजराती ,, कि १-०-०

जादेरखवर.

निवृत्तिना पत्रिन्न वयवतमा राचया माटे पूरें थड
गयेला महान् आचार्यांना रचेला

अमृतमय ज्ञानना पुस्तको

प्रकरण रक्षाकर		जीवविचार	०-६-०
जाग १ खो	६-४-०	कटपसूत्र सुशोधिका	
प्रकरण रक्षाकर		टीकानु जापातर	३-०-०
जाग ४ थो	०-०-०	कटपसूत्र मूल धारसो	
अज्ञानतिमिर		सचित्र	१-०-०
जास्कर	२-०-०	देवसि राड प्रतिप्रमण	
पारुचरित्र		सूत्र अर्थ साथे	०-६-०
जापातर सचित्र	६-०-०	,, विधियुक्त	०-६-०
सुखमुक्तावली	३-०-०	अचज्ञगुण पाच परि	
नयतरन प्रश्नोत्तर	२-०-०	कमणा सूत्र मूळ	१-०-०
अढीढीपना नकशानी		खरतरगुण पाच परि	
हकीकत	२-०-०	कमणा सूत्र	१-४-०
चार पर्वोनी कथा	७-०-०	विनिध पृजासग्रह	
छधु प्रकरणमग्रह	१-०-०	जाग १ खो	२-०-०
नयतत्त्वप्रकरण अर्थ		छधु पृजासग्रह	०-६-०
साथे	१-०-०	जैनप्रबोध	४-०-०
दमक छधमघयणी	२-०-०	सगजायमाळा	

देवप्रदनमाला	१-४-०	जगूस्वामि चरित्र	०-१७-०
स्वरोदयज्ञान	०-६-०	रंगवेरगी तीर्थोना नकशा	
जक्कामर स्तोत्र	०-१२-०	शत्रुजय तीर्थनो	
चद राजानो रास		नकशो	१-८-०
अर्थ साथे	५-०-०	अढीढीपनो	०-८-०
समरादित्य केवलीनो		जंबुढीपनो	०-८-०
रास	४-०-०	समेतशिखरनो	०-८-०
श्रीपाद राजानो		गौतमस्वामीनी ठयी	०-८-०
रास शास्त्री	३-०-०	ज्ञानराजीनो नकशो	०-८-०
सामुद्रिक शास्त्र तथा		तारगाजीनो	०-८-०
स्वमधिचार	१-६-०	पावापुरीनो	०-८-०
शकुन शास्त्र	०-८-०	चपापुरीनो	०-८-०
अर्थनीति	१-८-०	केशरीयाजीनो	०-८-०
जैन कथा रत्न कोष		अष्टापदजीनो	०-८-०
भाग १ खो	३-०-०	गिरनारजीनो	०-८-०
” २ जो	२-१२-०	आबुजीनो	०-८-०
” ४ थो	३-४-०	माणिक्य तथा पद्मा-	
” ६ णो	२-८-०	वतीनी ठयी	०-३-०
” ७ मो	३-८-०		
” ८ मो	३-४-०		

श्रावक जीमसिंह माणिक,

जैन पुस्तको बेचनार तथा प्रसिद्ध करनार

मालवी, शाकगद्दी-मुचड

कीसनचरकीचरक

ॐ श्री लीजीकाउजमण्डल ४ सं १८८१ आसो
सुरी १५ बकरो श्री ली १ बाकी थी सो
चमकेरी १८८१

१ श्री लीजी १८८२ का आसो जमेकरी

१ श्री लीजी १८८३ चरक सुरी

१ श्री लीजी १८८४ का आसो जमे

१ श्री लीजी १८८४ चमकेरी

१ श्री लीजी १८८५ का आसो जमे

१ श्री लीजी १८८५ चमकेरी

१ श्री लीजी १८८५ श्री लीजी चमकेरी

१ श्री लीजी १८८५ श्री लीजी चमकेरी

१ श्री लीजी १८८५ श्री लीजी चमकेरी

उजमण्डल ४ सं

